## चिंतन

# मीथेन और ब्लैक कार्बन जैसे प्रदूषकों से निजात पाए भारत

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रदूषण का स्तर खतरनाक हो गया है। पांच दिनों से लगातार गंभीर स्तर बना हुआ है। हवा के जहरीली हो जाने से लोगों का सांस लेना दुभर हो रहा है। खास बात है कि इस वक्त अजरबैजान की राजधानी बाकू में संयुक्त राष्ट्र की सीओपी-29 शिखर बैठक हो रही है, जिसमें जलवायु संकट से निपटने के लिए वित्त के मुद्दे पर सहमति बनाने का प्रयास हो रहा है। दिल्ली में बढ़ रहे प्रदूषण की चिंता सीओपी-29 में दिखाई दे रही है। इस जलवायु सम्मेलन में विशेषज्ञों ने भारत से मीथेन और ब्लैक कार्बन जैसे अल्पकालिक जलवायु प्रदूषकों (एसएलसीपी) को कम करने का आग्रह किया है, जो वायु गुणवत्ता में गिरावट और ग्लोबल वार्मिंग दोनों के लिए प्रमुख कारक होते हैं। एसएलसीपी ग्रीनहाउस गैसों और वायु प्रदूषकों का एक समूह होता है, जो जलवायु को निकट अवधि में गर्म करता है और वायु की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। इसमें ब्लैक कार्बन, मीथेन, ग्राउंड-लेवल ओजोन और हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) शामिल हैं। वर्तमान वार्मिंग के लिए आधा जिम्मेदार एसएलसीपी है। अगर हम एसएलसीपी पर ध्यान देते हैं, तो हम तेजी से दीर्घकालिक कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए महत्वपूर्ण समय हासिल कर सकते हैं। एसएलसीपी पर अंकुश लगाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा तक पहुंच गया है और 2024 के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि तापमान जल्द ही इस सीमा को पार कर सकता है। भारत क्लाइमेट करार का हिस्सा है और प्रदूषण कम करने के प्रति प्रतिबद्ध है। भारत को अगर अपने कार्बन उत्सर्जन में कटौती करनी है तो ब्लैक कार्बन व मीथेन जैसे अल्पकालिक कारकों को तत्काल न्यूनतम करने की आवश्यकता है। ये एसएलसीपी भारत की आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए समस्या उत्पन्न करते हैं। बढ़ते तापमान का असंगठित श्रम क्षेत्र, कृषि और खाद्य सुरक्षा पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। विश्व बैंक के मुताबिक, तापमान वृद्धि के कारण भारत के असंगठित क्षेत्र में लगभग 3.4 करोड़ नौकरियां चली गईं। एसएलसीपी के कारण आंशिक रूप से प्रभावित बदलते मानसून परिदृश्यों से फसल चक्र पर असर पड़ता है और खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है। चावल जैसे प्रमुख खाद्य पदार्थों के एक शीर्ष वैश्विक निर्यातक भारत को ऐसे प्रभावों का सामना करना पड़ रहा है। एसएलसीपी बढ़ती गर्मी के तनाव और अनियमित वर्षा में सीधे योगदान देता है, जिससे न केवल स्थानीय किसान बल्कि वैश्विक खाद्य श्रृंखलाएं भी प्रभावित होती हैं। दिल्ली में प्रदूषण की गंभीर स्थिति को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट 18 नवंबर को सुनवाई करेगा। 'इंडिपेंडेंट हाई-लेवल एक्सपर्ट ग्रुप ऑन क्लाइमेट फाइनेंस' (आईएचएलईजी) की नई रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया में बढ़ते तापमान से निपटने और पेरिस समझौते के लक्ष्यों को पूरा करने में विकासशील देशों की मदद के लिए 2030 तक प्रति वर्ष एक लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की जरूरत है। इस धन की आवश्यकता सार्वजनिक और निजी दोनों स्रोतों से है। अमीर देशों पर जलवायु वित्त प्रदान करने का दबाव है, सम्मेलन में भाग ले रहे देश 2025 के बाद विकासशील देशों की मदद के लिए एक नए जलवायु वित्त पैकेज पर बातचीत कर रहे हैं, इस दिशा में जल्द समाधान निकालने की आवश्यकता है। जलवायु संकट को लेकर भारत इस अलार्मिंग सिचुएशन को समझे और कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के लिए तत्काल रूप से प्रभावी कदम उठाए। देश को गैस चैंबर बनने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता है।

## गौरव दिवस

पुरंदर मिश्रा

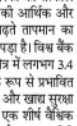

# जनजातीय गौरव दिवस एक अवसर

जनजातीय गौरव दिवस, स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस दिन को मनाने के पीछे मकसद, आने वाली पीढ़ियों को देश के लिए उनके बलिदानों के बारे में जागरूक करना है। आदिवासी समुदाय, बिरसा मुंडा को भगवान के रूप में पूजता है। धरती आबा' बिरसा मुंडा की अपने माटी के प्रति संघर्ष की ही पृष्ठभूमि थी कि अंग्रेजों को छोटा नागपुर काश्तकारी-सीएनटी अधिनियम बनाने के लिए बाध्य होना पड़ा। जिसके अधीन परंपरागत वन अधिकार भुईंहरी खूँट के नाम से निहित है। भुईंहरी खूँट, जो जल, जंगल, जमीन पर पूर्ण स्वामित्व का अधिकार देता है ।

जनजातीय लोगों ने अपनी सभ्यता और संस्कृति की धरोहरों को युगों से संजोया हुआ है, जनजातीय गौरव दिवस एक अवसर है आदिवासियों की जीवन परंपरा, रीति-रिवाज व सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था को समझने का जो कि अत्यधिक समृद्ध है सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और राष्ट्रीय गौरव, वीरता तथा आतिथ्य के भारतीय मूल्यों को बढ़ावा देने में आदिवासियों के प्रयासों को मान्यता देने के लिए प्रतिवर्ष 'जनजातीय गौरव दिवस' का आयोजन किया जाता है। उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कई आदिवासी आंदोलन किए। इन आदिवासी समुदायों में तामार, संथाल, खासी, भील, मिजो और कोल शामिल हैं।

स्वतंत्रता हासिल करने तक जनजातीय समुदाय अंग्रेजों से लड़ते रहे। चाहे पूर्वी क्षेत्र में संताल, कोल, हो, पहाड़िया, मुंडा, उरांव, चेरो, लेपचा, भूटिया, भुइयां जनजाति के लोग हों या पूर्वोत्तर क्षेत्र में खासी, नागा, अहोम, मेमारिया, अबोर, न्याशी, जयंतिया, गारो, मिजो, सिंघपो, कुकी और लुशाई आदि जनजाति के लोग हों या दक्षिण में पद्दागार, कुरिच्य, बेड़ा, गौंड और महान अंडमानी जनजाति के लोग हों या मध्य भारत में हलबा, कोल, मुरिया, कोई जनजाति के लोग हो या पश्चिम में डांग भील, मैर, नाइका, कोली, मीना, दुबला जनजाति के लोग हों, इन सबने अपने दुस्साहसी हमलों और निर्भीक लड़ाइयों से ब्रिटिश राज को असमंजस में डाले रखा। समग्र राष्ट्रीय विकास और जनजातीय समुदाय का विकास एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसलिए, ऐसे अनेक प्रयास किए जा रहे हैं जिनसे जनजातीय समुदायों की अस्मिता बनी रहे, उनमें आत्म-गौरव का भाव बढ़े और साथ ही वे आधुनिक विकास से लाभान्वित भी हों। समरसता के साथ जनजातीय विकास की यही मूल भावना सबके लिए लाभदायक है।

भारत के संविधान ने, अनुसूचित जनजातियों की सुरक्षा के प्रावधानों के साथ, उनके अधिकारों की रक्षा करने और समावेशिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वन अधिकार अधिनियम, पेसा और अन्य कानूनों ने आदिवासी समुदायों के अधिकारों को और मजबूत किया है और उन्हें अपने जीवन के तरीके की रक्षा करने के लिए सशक्त बनाया है। ट्राइफेड और एनएसटीएफडीसी जैसे संस्थानों ने आदिवासी समुदायों को आर्थिक रूप से आगे बढ़ने और उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए सहायता और अवसर प्रदान किए हैं। न्याय के हित में सर्वस्व बलिदान करने की भावना, जनजातीय समाज की विशेषता रही है।

भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना की पहचान भगवान राम हैं। प्रभु श्री राम के राजा राम से मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनने की यात्रा में जनजातीय समाज अपनत्व का सेतु है। भगवान राम को वनवास के दौरान जनजातीय समाज के साथ न सिर्फ सहचर्य मिला बल्कि दोनों ने एक दूसरे पर आस्था व्यक्त की। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अनेक चौपाई में इस बात का उल्लेख किया है। छत्तीसगढ़ के वनांचल में रहने वाले रमाती माडिया, झाड़ा सिरहा, चमेली देवी नाग, हिड़मा मांझी, गुण्डाधूर, सुखदेव पातर हल्बा जैसे अनेक वीर सपूत सिर्फ जनजातीय समाज के नहीं अपितु भारत मां के वीर सपूत व वीरांगना हैं। जनजातीय गौरव दिवस हमें बिरसा मुंडा, टंट्या मामा, भीम नायक, खज्या नायक, शंकर शाह, रघुनाथ शाह, रानी दुर्गावती, बादल भोई, गंजन सिंह कोरकू, मंशु ओझा, रघुनाथ शाह और कई अन्य, जो इतिहास के पन्नों में कहीं खो गए हैं, जैसे जनजातीय नायकों के जीवन को जानने का अवसर देगा।

यह दिन श्री बिरसा मुंडा की जयंती है, जिन्हें देश भर के आदिवासी समुदाय भगवान के रूप में पूजते हैं। बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था की शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ देश के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और 'उलगुलान' (क्रांति) का आह्वान करते हुए ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया।

-लेखक विधायक , उत्तर विधानसभा क्षेत्र रायपुर हैं।

# जनजातीय गौरव दिवस : राष्ट्र की एकात्मता का बोध जनजातीय समाज में भारत की एकात्मता के सूत्र

गौरव दिवस विशेष

विष्णुदेव साय

1999 में प्रधानमंत्री रहते हुए श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जनजातीय मामलों से जुड़े पृथक मंत्रालय का गठन किया। छत्तीसगढ़ एवं झारखंड जैसे राज्यों के गठन के पीछे भी एक प्रमुख उद्देश्य जनजातीय समाज के उत्थान का था। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में संसद के सेंट्रल हॉल में प्रवेश करते ही कहा था कि उनकी सरकार गरीब, किसान और आदिवासियों की है। जनताजीय समाज के गौरवशाली इतिहास से दुनिया प्रेरणा ले, इसके लिए उन्होंने 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप मान्यता दी।

देश की एकता और अखंडता में जनजातीय समाज की अग्रणी भूमिका है। भारतीय मूल्यों से युक्त आचरण के साथ राष्ट्र की सर्वांगीण प्रगति में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली की पुनर्स्थापना में जनजातीय समाज ने आदर्श प्रतिमान गढ़े हैं। अलग-अलग कालखंड में जनजातीय समाज से निकले नायकों ने राष्ट्र के लिए जिस तरह अपने प्राणों की आहुति दी, वह भारतवर्ष की प्रत्येक संतति को राष्ट्र की एकात्मकता का बोध कराता है। भगवान बिरसा मुंडा जनजातीय समाज से निकले ऐसे ही एक पुण्यवान चरित्र हैं। भारत दुनिया का इकलौता राष्ट्र है जहां जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी कहा जाता है। हमारे यहां मातृभूमि से बढ़कर कुछ और नहीं। स्वर्ग भी नहीं..! भगवान बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को रांची में एक साधारण परिवार में हुआ था, राष्ट्र के प्रति योगदान ने उन्हें जनजातीय समाज ही नहीं संपूर्ण मानवता के लिए देवतुल्य बनाया। अंग्रेजों के विरुद्ध उन्होंने उलगुलान आंदोलन प्रारंभ किया। इसके लिए उन्हें कई यातनाएं भी सहनी पड़ी, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। पूज्य बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के विरुद्ध जहां जनजातीय समाज को एकजुट किया, वहीं मातृशक्ति की रक्षा और सम्मान, जनजातियों में सामाजिक जन-जागरण का कार्य भी उन्होंने किया।

इससे छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल से लेकर उत्तर पूर्व के आदिवासी समाज में कन्वर्जन के विरुद्ध सामाजिक चेतना का संचार हुआ। यही वजह है कि आज भारत मां के वीर सपूत बिरसा मुंडा भगवान के रूप में पूजे जाते हैं। मुझे गर्व है कि मैं जिस भारतीय जनता पार्टी का छोटा सा सदस्य हूं, उसकी सरकारों ने समय- समय पर आदिवासियों के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। 1999 में प्रधानमंत्री रहते हुए श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जनजातीय मामलों से जुड़े पृथक मंत्रालय का गठन किया। छत्तीसगढ़ एवं झारखंड जैसे राज्यों के गठन के पीछे भी एक प्रमुख उद्देश्य जनजातीय समाज के उत्थान का था। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में संसद के सेंट्रल हॉल में प्रवेश करते ही कहा था कि उनकी सरकार गरीब, किसान और आदिवासियों की है। जनताजीय समाज के गौरवशाली इतिहास से दुनिया प्रेरणा ले, इसके लिए उन्होंने 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप मान्यता दी। यह दिन आदिवासी समाज ही नहीं प्रत्येक देशवासी को प्रेरित करता है। आज देश की राष्ट्रपति के रूप में श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का नेतृत्व सिर्फ आदिवासी समाज और महिलाओं के लिए ही नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र के लिए प्रेरणापुंज है।

आदिवासियों को सनातन एवं भारतीय मूल्यों से पृथक करने के असफल षड्यंत्र भी खूब हुए हैं। वामपंथी उग्रवाद तो कभी कन्वर्जन की शक्ल में राष्ट्र विरोधी ताकतें भोले भाले आदिवासियों को भ्रमित करने की कोशिश करती हैं। ऐसे तत्वों के विरुद्ध समाज को भी जागरूक होने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तथा केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के नेतृत्व में नक्सलवाद के उन्मूलन की दिशा में जिस दृढ़ इच्छाशक्ति से कार्य हो रहा है, उसकी बदौलत छत्तीसगढ़ में हमारे जवानों ने साल भर से भी कम समय में 200 माओवादियों को ढेर कर दिया है। वहीं 700 से अधिक नक्सली आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में लौटे है। नक्सलवाद के कमजोर पड़ने से आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में विकास का नया सूर्योदय हो रहा है। नियद नेल्ला नार जैसी योजनाओं से जनजातीय बहुल गांवों तक तमाम बुनियादी सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित हो रही हैं। मैं जिस सरगुजा क्षेत्र से आता हूं, हम वहां की जैव विविधता तथा वहां पर्यटन की संभावनाओं को अवसर में बदल रहे हैं। सरगुजा और बस्तर की ओर देखो नीति के अंतर्गत इस अंचल को इकोटूरिज्म तथा वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में आदिवासियों की आजीविका में तेंदूपत्ता संग्रहण एक प्रमुख स्रोत है। हमने हरा सोना कहे जाने वाले तेंदूपत्ता की प्रति मानक संग्रहण दर चार हजार रुपए से बढ़ाकर 5500 रुपए कर दी है। प्रदेश में विशेष पिछड़ी जनजाति वर्ग की महिलाएं लखपति दीदी बनकर आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का नया अध्याय लिख रही हैं।

राज्य में अनुसूचित जनजाति वर्ग के किसानों को फसलों की सिंचाई के लिए निःशुल्क बिजली उपलब्ध कराई जा रही है। दिल्ली में ट्रायबल होस्टल में पढ़ने वाले युवाओं के लिए सीट की संख्या 35 से बढ़ाकर 185 कर दी गई है। जनजातीय समाज के त्योहार, उनकी लोककलाओं को संरक्षित किए जाने हम विशेष कार्य कर रहे हैं। हम गोंडी समेत राज्य की अन्य जनजातीय भाषाओं के संवर्धन हेतु कार्य कर रहे हैं। देश में सात दशक तक राज करने वाली कांग्रेस पार्टी की नीति आदिवासी समाज को राजनीतिक स्वार्थ के लिए उपयोग करने वाली थी। गोंड, भील, हल्बा, कंवर, भतरा, धुरवा, मुरिया, मुंडा समेत अनेक जनजातियों की जीवनशैली, लोक परंपराओं को निकट से देखें तो पाएंगे कि सामाजिक समरसता, भारतीयता, स्वदेशी, पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली, कुटुंब व समाज के प्रति सामुदायिक कर्तव्य जनजातीय समाज की जीवन पद्धति की आत्मा है। आज कथित रूप से विकसित देश और अर्थव्यवस्थाएं आक्रामक भौतिकतावाद, नस्लवाद, जलवायु संकट और समावेशी विकास के लक्ष्य के समाधान तलाशने में जुटी हैं ऐसे समय में भारत का आदिवासी समाज दुनिया को सर्वे भवन्तु सुखिनः तथा वसुधैव कुटुंबकम का मार्ग दिखा रहा है। आइए हम सब जनजातीय समाज के साथ एकमेव होकर राष्ट्र की एकात्मता व विश्व बन्धुत्व की यात्रा को और समृद्ध करें।

-लेखक मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ हैं।

## हम जो भी करेंगे वह कर्म

संकलित

दर्शन

'इगोसेंट्रिक' कर्म को वे कर्म कहते हैं। ऐसे कर्म को, जिसमें कर्ता मौजूद है। जिसमें कर्ता यह विचार करके ही कर रहा है कि करने वाला मैं हूं। जब तक मैं करने वाला हूं, तब तक हम जो भी करेंगे, वह कर्म है। अगर मैं संन्यास ले रहा हूं, तो संन्यास एक कर्म हो गया। अगर मैं त्याग कर रहा हूं, तो त्याग एक कर्म हो गया। अकर्म का मतलब ठीक उलटा है। अकर्म का मतलब है ऐसा कर्म, जिसमें कर्ता नहीं है। जिसमें मैं कर रहा हूं, ऐसा कोई बिंदु नहीं है। ऐसा कोई केंद्र नहीं है, जहां से यह भाव उठता है कि मैं कर रहा हूं। अगर मैं कर रहा हूं, यह खो जाए, तो सभी कर्म अकर्म है। कर्ता खो जाए तो सभी कर्म अकर्म है। इसलिए कृष्ण का कोई कर्म, कर्म नहीं है, सभी अकर्म हैं। कर्म और अकर्म के बीच में विकर्म की जगह है। विकर्म का अर्थ है, विशेष कर्म। विशेष कर्म किसे कहते हैं कृष्ण? जहां न कर्ता है, और न कर्म। फिर भी चीजें तो होंगी। फिर भी चीजें तो होंगी ही। आदमी श्वास तो लेगा ही। न कर्म है, न कर्ता है। श्वास तो लेगा ही। श्वास कर्म तो है ही। खून तो गति करेगा ही शरीर में। भोजन तो पचेगा ही। ये कहां पहुंगे? ये विकर्म हैं। ये मध्य में हैं। यहां न कर्ता है, न कर्म है। साधारण मनुष्य कर्म में है, संन्यासी अकर्म में है, परमात्मा विकर्म में है। वहां न कोई कर्ता है, न कोई कर्म है। वहां चीजें ऐसी ही हो रही हैं, जैसे श्वास चलती है। वहां चीजें बस हो रही हैं। यह कर्म योग का तत्व है। जो विकर्म को समझ लेगा, वह अकर्म में उतर जाएगा। कर्म हमारी स्थिति है, जैसे हम जी रहे हैं।

## आइसक्रीम की एक डिश

संकलित

प्रेरणा

एक बार एक छोटा सा लड़का एक होटल में गया। कुछ ही देर में वहां वेटर आया और उसने पूछा आपको क्या चाहिए सर? छोटे बच्चे ने उल्टा पूछा! वैनिला आइसक्रीम कितने रुपए का है ? उस वेटर वाले ने जवाब दिया 50 रुपए का । यह सुन कर उस छोटे लड़के ने अपने जेब में हाथ डालकर कुछ निकाला और हिसाब किया। उसने दुबारा पूछा कि संतरा फ्लेवर आइसक्रीम कितने का है। वेटर ने दूबारा जवाब दिया और कहा 35 रुपए का सर। यह सुनने के बाद उस लड़के ने कहा! मेरे लिए एक संतरा फ्लेवर आइसक्रीम ले आईये। कुछ ही देर में वेटर आइसक्रीम की प्लेट और साथ में बिल लेकर आया और उस बच्चे के टेबल पर रखकर चले गया। उस लड़के ने उस आइसक्रीम को खाने के बाद पैसे दिए और वह चले गया। जब वह वेटर वापस आया तो वह दंग रहे गया यह देखकर कि उस लड़के ने खाए हुए आइसक्रीम प्लेट के बगल में आइस-क्रीम के 35 रुपए के साथ उसके लिए 15 रुपए का टिप छोड़ गया था। उस लड़के पास 50 रुपए होने पर भी उसने उस वेटर के टिप के बारे में पहले सोचा न की अपने आइसक्रीम के बारे में । उसी प्रकार हमें अपने फायदे के बारे में सोचने से पहले दूसरो के बारे में भी सोचना चाहिए । हमारा ध्यान कभी दूसरो के भलाई की और नहीं जाता। हम पहले अपनी भलाई में ही लगे रहते हैं।

## अंतर्मन

### आज की पाती

**बाल दिवस का मकसद कैसे पूरा होगा?**

14 नवंबर को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया गया। नेहरु को चाचा नेहरु इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्हे बच्चों से बहुत लगाव था। उन्होंने बच्चों के लिए कहा था, 'आज के बच्चे कल के भारत का निर्माण करेंगे। हम जिस तरह से बच्चों की परवरिश करते हैं उससे भारत का भविष्य तय होता है।' लेकिन भारत में जहां एक तरफ बाल दिवस मनाया जाता है, वहीं दूसरी तरफ शर्मनाक है कि आज आजाद भारत में छोटे-छोटे बच्चे गरीबी के कारण मजदूरी करने को विवश हैं। इनसान जब जन्म लेता है तब उसका दिल और दिमाग एक कोरे कागज की तरह होता है। बच्चों के पथभ्रष्ट होने का कारण अच्छे संस्कारों का अभाव भी है। ऐसी स्थिति में हमें यह सोचना है कि कैसे बाल दिवस का मकसद हासिल किया जाए।

- अखिलेश मिश्रा, बिलासपुर

## ट्रेंड

### नक्सल की गिरफ्त में कांग्रेस

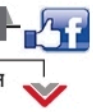

कांग्रेस पार्टी अर्बन नक्सल की गिरफ्त में आ चुकी है। नक्सलवाद को बढ़ावा देने वाले लोगों के हाथों की कठपुतली बनकर कांग्रेस काम कर रही है। इन्होंने ऐसी पार्टी से समझौता कर लिया, जो धारा 370 वापस लाने की बात कर रही है।

-जे.पी. नड्डा, भाजपा अध्यक्ष

### उप्र सरकार असंवेदनशील

प्रयागराज में प्रतियोगी छात्रों के साथ यूपी सरकार और उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग का रवैया बेहद अलोकतांत्रिक और दुर्भाग्यपूर्ण है। छात्र वाली नो पेपरों की छात्रों की मांग बिल्कुल न्यायपूर्ण है। 'पहाड़' करने वाले छात्रों का पुलिस के जरिए उत्पीड़न घिन्ना का रहा है।

-राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद

### निवेश के लिए प्रतिबद्ध

जैसे-जैसे भारत और अमेरिका के बीच साझेदारी गहरी होती जा रही है, हम अमेरिकी ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में 10 बिलियन डॉलर का निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

-गौतम अदानी, उद्योगपति

### बच्चे बहुत पसंद

बुरे बच्चे बहुत पसंद हैं क्योंकि उन्होंने अभी तक अपनी ईमानदारी और जीवन के प्रति आशा खत्म नहीं खोया है। और एक हिंदू के बाद हम सभी का यही लक्ष्य होता है.. कि हम स्वतंत्र हों.. हैं ना!

- काजोल, अभिनेत्री

## करंट अफेयर

# अमेरिकी कैपिटल में मनाई गई दिवाली

अमेरिका में 24 से अधिक सांसदों और भारतीय अमेरिकियों ने 'कैपिटल' में दिवाली मनाई। पिछले सप्ताह के राष्ट्रपति चुनाव के बाद अमेरिकी कांग्रेस में यह पहला बड़ा आयोजन था। मंगलवार को 'कैपिटल हिल में दिवाली' का वार्षिक आयोजन बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर द्वारा हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन, सिख फॉर अमेरिका, जैन एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका और आर्ट ऑफ लिविंग समेत कई अन्य भारतीय अमेरिकी संगठनों के सहयोग से किया गया था। पिछले सप्ताह राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप ने जीत हासिल की थी। दिवाली समारोह को संबोधित करते हुए सीनेटर रैंड पॉल ने कहा कि अमेरिका आप्रवासियों की भूमि है, जो विश्वभर से सर्वश्रेष्ठ और प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित करता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वे मिलकर अमेरिका को एक महान देश बनाते हैं। पॉल ने कहा, 'मैं वैध आव्रजन नियमों का बड़ा समर्थक हूं और इसे बढ़ाने के लिए मेरे पास कई विधेयक हैं और मैं इस पर काम करना जारी रखूंगा। दिवाली की शुभकामनाएं।' इस मौके पर भारतीय अमेरिकियों को बधाई देते हुए मिसिसिपी की सीनेटर सिंडी हाइड-स्मिथ ने कहा कि वह अगले चार वर्षों के लिए उत्सुक हैं।

## ऑफ बीट

# पीसीओएस की चपेट में 20 फीसदी महिलाएं

ऐसा माना जाता है कि अंडाशय के काम करने के तरीके पर असर डालने वाली हार्मोनल स्थिति पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम (पीसीओएस) की चपेट में दुनिया भर की 20 प्रतिशत महिलाएं आती हैं। यह स्थिति इतनी सामान्य है और इसका महिलाओं के स्वास्थ्य पर इतना गंभीर असर पड़ता है, लेकिन इसके बावजूद शोधकर्ता अभी तक पूरे विश्वास के साथ यह नहीं कह सकते कि पीसीओएस के कारण क्या हैं -इसके इलाज के बारे में तो बात छोड़ ही दीजिए। हार्मोनल थेरेपी लेने के साथ ही ज्यादातर मार्गदर्शन में कहा जाता है कि वजन कम करना पीसीओएस से निपटने के सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। शरीर के वजन में महज चार प्रतिशत की कमी से भी लक्षणों में सुधार देखा गया है। वजन घटाने से ज्यादा वजन से जुड़ी कई अधिक गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं जैसे कि टाइप 2 डायबिटीज, उच्च रक्तचाप और सोते वक्त सांस लेने में दिक्कत होने का जोखिम भी कम हो सकता है। लेकिन पीसीओएस से जुड़े हार्मोनल असंतुलन से महिलाओं के लिए वजन कम करना मुश्किल हो सकता है। पीसीओएस केंद्रित अनुसंधान के लिए ऐतिहासिक कम वित्त पोषण का मतलब यह भी है कि यह पता लगाने के लिए विश्वसनीय, साक्ष्य आधारित मार्गदर्शन की भारी कमी है।

### अपने विचार

**हरिभूमि कार्यालय**

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 232

# मजबूत हों स्थानीय निकाय

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने स्थानीय निकायों की राजकोषीय स्थिति पर अध्ययन की शुरुआत करके तथा उसके निष्कर्षों को प्रकाशित करके अच्छी शुरुआत की है। नगर निकायों की वित्तीय स्थिति पर पहली ऐसी रिपोर्ट नवंबर 2022 में प्रकाशित की गई थी। उसके बाद पंचायती राज संस्थाओं की वित्तीय स्थिति पर एक अध्ययन पेश किया गया। रिजर्व बैंक ने अब 2019-20 से 2023-24 के बजट अनुमानों के आधार पर नगर निकायों की वित्तीय स्थिति पर आधारित एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। अध्ययन में देश भर के 232 नगर निकायों को शामिल किया गया है। भारत में अक्सर स्थानीय निकायों पर सीमित नीतिगत ध्यान दिया जाता है। आंशिक तौर पर ऐसा इसलिए हुआ कि तुलनात्मक स्वरूप में आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। यह भी उम्मीद की जानी चाहिए कि रिजर्व बैंक का यह अध्ययन जरूरी नीतिगत ध्यान आकृष्ट करेगा और सार्वजनिक बहस को समृद्ध करेगा।

स्थानीय निकायों को मजबूत बनाना अत्यधिक आवश्यक है। नगर निकायों के संदर्भ में यह बात ध्यान देने लायक है कि भारत का तेजी से शहरीकरण हो रहा है और उसे नागरिक क्षमताएं विकसित करने की आवश्यकता है। फिलहाल जो हालात हैं उनके मुताबिक भारत का करीब 60 फीसदी सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) शहरी इलाकों में उत्पन्न हो रहा है और 2050 तक उसकी करीब 50 फीसदी आबादी शहरी इलाकों में रहने लगेगी। बहरहाल अधिकांश नगर निकाय इस बदलाव से निपटने के लिए तैयार नहीं हैं, मोटे तौर पर ऐसा इसलिए कि उनके पास संसाधन नहीं हैं। जैसा कि रिजर्व बैंक की रिपोर्ट दिखाती है, नगर निकायों की राजस्व प्राप्तियां जीडीपी का केवल 0.6 फीसदी हैं। यह मामूली आंकड़ा भी चुनिंदा नगर निकायों के पक्ष में झुका हुआ है। केवल 10 नगर निकाय कुल राजस्व प्राप्तियों में 60 फीसदी के हिस्सेदार हैं। नगर निकायों का कुल व्यय जिसमें राजस्व और पूंजीगत व्यय शामिल है, वह 2023-24 के बजट अनुमान में जीडीपी के 1.3 फीसदी के बराबर था। नगर निकायों के राजस्व में संपत्ति कर, कुछ शुल्क और उपयोग शुल्क आदि शामिल होते हैं। संपत्ति कर उसके कुल राजस्व में करीब 60 फीसदी होता है।

नगर निकाय केंद्र और राज्य सरकारों के अनुदान पर बहुत अधिक निर्भर होते हैं। राज्य सरकारों, राज्यों के वित्त आयोग के अनुदान तथा अन्य जगहों से आने वाली राशि की बात करें तो 2019-20 और 2022-23 में वह इनकी राजस्व प्राप्तियों में 30 फीसदी की हिस्सेदार रही। केंद्र सरकार का हस्तांतरण उनके राजस्व में 2.5 फीसदी का हिस्सेदार रहा। नगर निकाय बाजार से भी उधारी लेते हैं, हालांकि यह उनके जीडीपी का केवल 0.05 फीसदी है। नगर निकायों की वित्तीय स्थिति दुरुस्त करने की जरूरत है। इसके साथ ही उन्हें बेहतर प्रदर्शन करने लायक बनाना होगा। अधिकांश विकसित और विकासशील देशों में सामान्य सरकारी राजस्व और व्यय में स्थानीय निकायों की हिस्सेदारी बहुत अधिक है। राजकोषीय शक्तियों में इजाफा तथा सामाजिक जवाबदेही, आर्थिक और सामाजिक परिणामों को बेहतर बनाने में मदद करेंगे। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदाताओं के लिए यह हमेशा आसान होता है कि वे अपने स्थानीय राजनीतिक नेतृत्व को जिम्मेदार ठहराएं।

नगर निकायों की वित्तीय स्थिति में सुधार के लिए विभिन्न स्तरों पर हस्तक्षेप की जरूरत होगी। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि निकायों को खुद अपना राजस्व बढ़ाने पर काम करना होगा। उदाहरण के लिए संपत्ति कर में सुधार की जरूरत है क्योंकि संपत्तियों का मूल्यांकन बढ़ रहा है। कराधान का दायरा और गुंजाइश बढ़ाने के लिए तकनीक का भी इस्तेमाल करना होगा। इन निकायों को उपयोगकर्ता शुल्क को भी समुचित बनाना होगा। कुल मिलाकर सरकार के उच्च स्तरों पर निर्भरता कम करने की जरूरत है जिससे राजस्व के बारे में एक अनुमान लग सकेगा। एक संभावना यह है कि जरूरी कानूनी बदलावों के बाद स्थानीय निकायों को वस्तु एवं सेवा कर में हिस्सा दिया जाए। इससे न केवल इन निकायों को विकास परियोजनाओं को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी बल्कि वे अधिक अनुकूल शर्तों पर ऋण भी जुटा सकेंगे। कुछ नगर निकायों ने बॉन्ड बाजार का रुख भी किया है। अब वक्त आ गया है कि भारत स्थानीय निकायों की स्थिति और भूमिका पर नए सिरे से विचार करे।

# पूंजीगत व्यय में कमी का क्या है अर्थ?

**व्यय लक्ष्यों को हासिल करने की प्रक्रिया में मानकों में परिवर्तन करने के बजाय वृद्धि के गणित को समझना कहीं अधिक आवश्यक है। बता रहे हैं ए के भट्टाचार्य**

केंद्र सरकार के पूंजीगत व्यय में कमी न केवल स्पष्ट है बल्कि इसने पहले ही 11.11 लाख करोड़ रुपये खर्च करने के लक्ष्य की प्राप्ति को लेकर संदेह पैदा कर दिया है। यह लक्ष्य 2024-25 के बजट में उल्लिखित है। केंद्रीय वित्त मंत्रालय के अधिकारियों का संकेत है कि वर्ष की पहली छमाही में पूंजीगत व्यय में जो कमी आई है वह दूसरी छमाही में दूर हो जानी चाहिए और सालाना व्यय 2023-24 की तुलना में कुछ अधिक ही रहेगा।

यह याद रखना चाहिए कि गत वर्ष केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय 9.48 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान रहा है जो 2022-23 की तुलना में 28 फीसदी ज्यादा था। कोविड के बाद इसमें तेज गति से इजाफा हो रहा है। बीते चार सालों में इसमें 29 फीसदी से अधिक की समेकित वार्षिक वृद्धि देखने को मिली है। यह एक असाधारण उपलब्धि है। यह वृद्धि तब सुनिश्चित हुई जब मंत्रालयों और राज्यों को व्यय वितरण पर नजर रखी गई ताकि किसी तरह की बरबादी या दुरुपयोग न हो। व्यय की गुणवत्ता सुधारने के लिए कदम उठाए गए और यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया कि केंद्र सरकार के मंत्रालय अपना व्यय वर्ष की अंतिम तिमाही में नहीं खर्च करें या राज्य अपने व्यय को केंद्र से प्राप्त राशि के स्थान पर व्यय न करें।

अब लगता है इन नियमों को शिथिल किया जा रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पूंजीगत व्यय में वृद्धि को चालू वर्ष में भी बरकरार रखा जाए।

खबरों के मुताबिक वित्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने कहा है कि नकदी प्रबंधन दिशानिर्देशों के तहत लगे नियंत्रणों को 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में शिथिल किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में केंद्रीय मंत्रालय और विभाग इस वर्ष की अंतिम तिमाही में अपने सालाना पूंजीगत व्यय अनुमान का 33 फीसदी खर्च कर सकते हैं।

यह कदम केंद्र को पूंजीगत व्यय बढ़ाने में सहायक हो सकता है लेकिन मौजूदा संदर्भ में नकदी प्रबंधन दिशानिर्देशों को शिथिल करने का कदम समझदारी भरा नहीं है। पूंजीगत व्यय को जब हड़बड़ी में साल खत्म होने के पहले लक्ष्य पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है तो इस कवायद का उद्देश्य ही विफल हो जाता है। अर्थव्यवस्था इससे लाभान्वित नहीं हो पाती है। नकदी-प्रबंधन जैसे तात्कालिक हल अपनाने के बजाय सरकार के लिए बेहतर होगा कि वह यह देखे कि पूंजी खर्च होने की गति धीमी क्यों पड़ गई है। समस्या की प्रकृति को चिह्नित करना जरूरी है। केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय 2024-25 की पहली तिमाही में 35 फीसदी गिरा। इसी अवधि में आम चुनाव हुए थे और पूर्ण बजट जुलाई के तीसरे सप्ताह में पेश किया जा सका। दूसरी तिमाही में पूंजीगत व्यय की गति ने जोर पकड़ा लेकिन इसमें केवल 10 फीसदी का इजाफा हुआ। स्पष्ट है कि पहली तिमाही के झटके से उबरने के लिए यह पर्याप्त नहीं था।

ऐसे में 2024-25 की पहली छमाही में पूंजीगत व्यय में कुल मिलाकर 15 फीसदी की कमी आई। अक्टूबर 2024 के बाद से केंद्र सरकार के लिए पूंजीगत व्यय को इतना बढ़ाना मुश्किल होगा ताकि वह 17 फीसदी की वार्षिक वृद्धि हासिल कर सके। सवाल यह है कि क्या नकदी प्रबंधन को शिथिल करने के दिशानिर्देश वास्तव में कोई असर डालेंगे।

सरकार के पूंजीगत व्यय में कमी के साथ समस्या यह है कि राज्यों की भी ऐसे व्यय के रखरखाव में समस्या हो रही है। लगभग सभी राज्यों के पूंजीगत व्यय में बीते पांच सालों में तेज इजाफा नजर आया है। हालांकि उनकी गति केंद्र सरकार से धीमी रही है। परंतु 2024-25 की पहली छमाही में प्रमुख राज्यों के पूंजीगत व्यय में करीब 12 फीसदी की गिरावट आई। दूसरे शब्दों में कहें तो पूरी सरकारी व्यवस्था ही व्यय बढ़ाने में गतिरोध का सामना कर रही है। उपचार तलाशने के पहले इसका अध्ययन किया जाना आवश्यक है। ऐसा प्रतीत होता है कि केंद्र और राज्य सरकारें जिन क्षेत्रों में अतिरिक्त पूंजी व्यय करना चाहती हैं उनकी ग्रहण करने की क्षमता प्रभावित हुई है। आगे के कदम उठाने से पहले इसे हल करना होगा। क्या यह आर्थिक वृद्धि की गति में व्यापक धीमेपन के संकेत हैं? कोविड के तत्काल बाद सरकारी निवेश बढ़ाने की रणनीति कारगर रही थी। क्या उसमें बदलाव का वक्त आ गया है?

यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि तमाम गिरावट के बावजूद सड़क और रेलवे के क्षेत्र में पूंजीगत व्यय मजबूत बना रहा है और उन्होंने अपने सालाना पूंजीगत व्यय आवंटन का 52-54 फीसदी व्यय किया है। ऐसा लगता है कि अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र पिछड़ गए हैं। इस रुझान से संकेत लेते हुए केंद्र सरकार को अन्य क्षेत्रों का परीक्षण करना चाहिए और विशिष्ट समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए जो फंड के सहज वितरण को बाधित कर रही हैं।

यह भी संभव है कि वर्ष के बीच में पूंजीगत व्यय की प्राथमिकताओं को नए सिरे से तय करना और अधिक संसाधनों को सड़क और रेलवे जैसे क्षेत्रों में लाने में मदद करे, जिनकी व्यय करने की गति तेज है। इसका एक अर्थ उन क्षेत्रों के पूंजीगत व्यय आवंटन में कटौती भी हो सकता है जो अपने आवंटन का बड़ा हिस्सा खर्च नहीं कर सके। नकदी-प्रबंधन दिशानिर्देशों का इस्तेमाल किसी मंत्रालय के वार्षिक आवंटन का एक न्यूनतम हिस्सा व्यय करने को बढ़ावा देने में प्रयोग किया जाना चाहिए। अगर वह न्यूनतम राशि तय तिमाही में नहीं इस्तेमाल की जाती है तो सरकार को उपयोग से बचे उस हिस्से को मंत्रालयों या उन क्षेत्रों को दे देना चाहिए जिन्हें अधिक संसाधनों की आवश्यकता है।

अधिक जटिल समस्या राज्य द्वारा उस पूंजीगत व्यय को खर्च कर पाने में अक्षमता है जो उनकी ही सरकार अलग-अलग क्षेत्रों को आवंटित करती हैं। दुर्भाग्य की बात है कि इस बात का कोई समन्वित परीक्षण नहीं होता है कि आखिर क्यों कुछ राज्य अधिक धन व्यय कर रहे हैं जबकि अन्य अपने व्यय में कमी दर्शा रहे हैं। तथ्य यह है कि असम, कर्नाटक, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और यहां तक कि बंगाल जैसे राज्यों में भी 2024-25 की पहली छमाही में पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में पूंजीगत व्यय में इजाफा देखने को मिला है।

आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और तेलंगाना जैसे राज्यों में समान अवधि में पूंजीगत व्यय में गिरावट भी समान रूप से चकित करने वाला है। पूंजीगत व्यय के इस रुझान का असर आर्थिक वृद्धि पर पड़ रहा है। भारी भरकम व्यय शक्ति के साथ राज्यों की भी आर्थिक विकास में अहम भूमिका है। शायद वित्त मंत्रालय की एक शाखा या नीति आयोग राज्यों के पूंजीगत व्यय के रुझानों को परख कर राज्य सरकारों को नीतिगत सलाह दे सकते हैं या जरूरी सुधार सुझा सकते हैं। राज्य न केवल सरकार के राजकोषीय घाटे को नियंत्रित रखने में अहम भूमिका निभाते हैं बल्कि वे अर्थव्यवस्था में निवेश की गति बरकरार रखने में भी मददगार साबित होते हैं।

# देश में नीति-निर्माण को बनाया जाए आसान

दो दशक से अधिक समय तक विभिन्न राजनीतिक दलों की सरकारों की विभिन्न राजनीतिक समितियों ने 200 वर्ष पुराने आयुध कारखाना बोर्ड (ओएफबी) को निजी कंपनी में बदलने की सिफारिश की थी ताकि इसके परिचालन को आधुनिक बनाया जा सके। ब्रिटेन ने वर्ष 1985 में ओएफबी की पूर्ववर्ती, रॉयल ऑर्डनेंस फैक्टरी को एक कंपनी में बदल दिया था। भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में ओएफबी को कंपनी में बदलने का फैसला 2020 में ही किया गया। एक अन्य उदाहरण भारत के डेटा सुरक्षा कानून की लंबी प्रक्रिया है जिस पर वर्ष 2015 से ही चर्चा हो रही है लेकिन नौ वर्ष बाद भी इसे लागू नहीं किया जा सका है।

नीति बनाने की प्रक्रिया में कई जटिलताएं होती हैं जिनकी वजह से कई बार निर्णय लेने की प्रक्रिया में देरी हो सकती है और जिससे समग्र विकास के लक्ष्यों पर असर पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान कर हम सार्वजनिक नीतियों की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं और सार्थक बदलाव लाने के साथ ही हम दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित कर सकते हैं।

हालांकि परिवर्तन का विरोध प्रभावी नीति निर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है। व्यक्ति, संगठन और समुदाय रोजगार के मौके गंवाने के डर से, वित्तीय जोखिम या फिर प्रभाव के नुकसान के कारण परिवर्तन का विरोध करते हैं। उदाहरण के लिए श्रमिक संगठनों ने नौकरी की सुरक्षा की चिंताओं के कारण कंप्यूटरीकरण का विरोध किया। जो चलन जितना ही पुराना होता है उससे लोगों के अधिक हित जुड़े होते हैं। ऐसे में सुधार करना कठिन हो जाता है।

सरकारी नीतियों में बदलाव कानूनों, नियमों, कार्यकारी निर्देशों और परिपत्रों जैसे व्यापक दस्तावेजों की स्थापित परंपरा से और जटिल हो जाते हैं। इस तरह की जटिल दस्तावेजी प्रक्रिया यथास्थिति को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाती है और इसका एक नकारात्मक प्रभाव होता है और एक-दूसरे से जुड़ा हुआ जटिल नेटवर्क बनता है। प्रत्येक दस्तावेज में अक्सर दूसरे दस्तावेज का संदर्भ होता है जिससे अतिरिक्त दस्तावेज जुटाने की स्थिति बनती है। यह परस्पर संबंध एक जटिल प्रणाली बनाता है जहां किसी भी संशोधन का कई अन्य दस्तावेजों पर प्रभाव हो सकता है और इसकी सीमा भी अक्सर स्पष्ट नहीं होती है। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) मॉडल को सरकारी नियमन का विश्लेषण करने और नीतिगत बदलावों से होने वाले सभी संभावित अंतर्संबंधों की पहचान करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए।

अजय कुमार

मंत्रालयों के बीच नीतियों को लेकर सहमति बनाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है क्योंकि हर मंत्रालय विशिष्ट होता है और कभी-कभी इनकी परस्पर विरोधी प्राथमिकताएं होती हैं। उदाहरण के तौर पर एक मंत्रालय औद्योगिक विकास पर जोर दे सकता है जबकि दूसरा पर्यावरण संरक्षण पर जोर दे सकता है। संविधान के अनुच्छेद 75 (3) में मंत्रालयों के सामूहिक मंत्रिमंडलीय उत्तरदायित्व का प्रावधान है और विभिन्न मंत्रालयों के बीच असहमति का हल निकालने के लिए कोई मानकीकृत प्रक्रिया मौजूद नहीं है। हाल के वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सीधे हस्तक्षेप कर कई अंतर-मंत्रालय विवादों का समाधान किया है। निर्णय लेने की दक्षता बढ़ाने के लिए मुद्दों को पहले से ही हल करने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय की त्वरित भागीदारी के लिए एक औपचारिक तंत्र जरूरी माना जाता है।

अक्सर अफसरशाहों और नेताओं के अलग-अलग नजरिये के कारण एक प्रभावी नीतिगत ढांचा तैयार करना जटिल हो जाता है। अफसरशाह नतीजों से अलग रहकर जोखिम से बचते हैं और यथास्थिति बनाए रखने के पक्ष में होते हैं। वहीं मतदाताओं के प्रति जवाबदेह नेता, चुनावी लक्ष्यों के हिसाब से ऐसे नतीजे हासिल करने को प्राथमिकता देते हैं जो स्पष्ट रूप से दिखे लेकिन फिर भी उन्हें अक्सर अफसरशाही तंत्र में फंसी प्रक्रिया से गुजरना होता है। वहीं अफसरशाही व्यवस्था के भीतर नतीजों पर केंद्रित मूल्यांकन की ओर सांस्कृतिक बदलाव नीतिगत-दक्षता में काफी सुधार कर सकता है और यह परिणाम संचालित शासन को बढ़ावा दे सकता है।

सार्वजनिक नीति से जुड़ा निर्णय लेने में एक बड़ा अंतर, डेटा का कम उपयोग है और यह आदत साक्ष्यों की तुलना में सहज ज्ञान और अनुभव की ऐतिहासिक निर्भरता से उपजी है। प्रशासन से जुड़े अधिकारियों में विश्लेषणात्मक तरीकों के सीमित प्रशिक्षण और योग्यता के बजाय सत्ताधारी को प्राथमिकता देने वाली एक पदानुक्रम वाली कार्य संस्कृति से यह मामला और खराब हो जाता है। डिजिटल इंडिया के चलते डेटा की गुणवत्ता में काफी सुधार हुआ है, जिसे अब साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। डिजिटलीकरण से नए, अधिक कुशल और उत्पादक तरीके से काम करने के अप्रत्याशित अवसर भी बनते हैं। जैसे बैंकों के डिजिटलीकरण से दक्षता ही नहीं बल्कि पारदर्शिता भी बढ़ी और काले धन पर अंकुश लगा है। डिजिटलीकरण के दूसरे क्रम के लाभों का उपयोग जरूर किया जाना चाहिए। नीति निर्माण में एआई का लाभ उठाना भी आवश्यक है। एआई उपकरण के जरिये स्वास्थ्य डेटा का विश्लेषण कर बीमारी के प्रकोप की भविष्यवाणी की जा सकती है या फिर ऐतिहासिक रुझानों के आधार पर नीतिगत कदम उठाए जा सकते हैं और इस तरह अधिक जानकारी वाले और कम जोखिम वाले निर्णयों का समर्थन किया जा सकता है। प्रशासनिक अधिकारियों और नीति निर्माताओं को एआई में प्रशिक्षित करने से इसकी पूरी क्षमता की आजमाइश हो सकती है।

नीति निर्माण में अंतरिक्ष, ड्रोन, अत्याधुनिक सामग्री और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी उभरती तकनीकों को सक्रिय रूप से अपनाने को प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि इनमें बदलाव लाने की क्षमता है। हमारा ध्यान अक्सर इन तकनीकों में अनुसंधान एवं विकास (आरऐंडडी) का समर्थन करने तक सीमित रहता है लेकिन हम इन्हें अपनाने में पिछड़ जाते हैं। जो देश सक्रियता से उभरती तकनीक को अपनाते हैं, वे तेजी से विकास करते हैं। इसीलिए, नीति निर्माण को वैश्विक नेतृत्व के लिए उभरती तकनीक अपनानी चाहिए।

नीति निर्माण भी दोहराव और एक ही समय में कई गतिविधियों (ओवरलैप) से प्रभावित होता है। प्रत्येक मंत्रालय अपने बजट और परियोजनाओं को नियंत्रित करने पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित करता है और इस वजह से अक्सर संभावित तालमेल की अनदेखी हो जाती है। उदाहरण के तौर पर ग्रामीण रोजगार योजना के तहत परिसंपत्तियों का निर्माण सड़क एवं आवास मंत्रालयों के साथ समन्वय के बिना किया गया जिसके चलते सार्थक बदलाव नहीं आ पाया। वर्ष 2021 में शुरू किया गया पीएम गति शक्ति मंच बुनियादी ढांचे में इन दोहरावों को दूर करता है।

भारत में नीति निर्माण में अविश्वास सबसे बड़ी बाधा के तौर पर उभरा है और यह प्रशासन की औपनिवेशिक विरासत में गहराई से फंसा हुआ है। विश्वास आधारित प्रशासनिक संस्कृति बनाने के बजाय आजादी के बाद की कार्यप्रणाली ने पूरी व्यवस्था में अविश्वास बढ़ाया है। विश्वास की इस कमी का प्रभाव न केवल सरकार और जनता के बीच बल्कि अधिकारियों के बीच होने वाले संवाद पर भी पड़ता है।

अफसरशाह व्यापक स्तर पर जांच और संतुलन बनाने की कोशिश में हर किसी को संभावित धोखेबाज के रूप में देखते हैं। विश्वास-आधारित शासन की ओर जाना आवश्यक है क्योंकि अविश्वास से भरे तंत्र की लागत और इसकी अक्षमताएं कुछ लोगों की बेईमानी के कारण होने वाले संभावित नुकसान से कहीं अधिक हैं। उदाहरण के तौर पर मौजूदा अविश्वास-आधारित प्रणाली के चलते ऐसी नीतियां बनी हैं जो अक्सर निजी क्षेत्र की ताकत का लाभ उठाने की कीमत पर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के पक्ष में हैं। छोटे उद्यमों को प्रोत्साहित करने की इच्छाशक्ति है लेकिन बड़े उद्यमों को नहीं। नीति निर्माण में प्रदर्शन और योग्यता को प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि आकार को। उदाहरण के तौर पर उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन योजना का उद्देश्य वृद्धि को बढ़ावा देना है और यह एक स्वागत योग्य बदलाव है।

निष्कर्ष यह है कि भारत में प्रभावी नीति-निर्माण चुनौतियों के एक जटिल जाल में उलझा हुआ है। मोदी ने सराहनीय कदम उठाए हैं। कर्मयोगी मिशन कुशल सार्वजनिक सेवा वितरण के लिए एक नए ढांचे पर ध्यान केंद्रित करता है। उसे अधिक गहन सांस्कृतिक परिवर्तन पर भी विचार करना चाहिए। यदि हम इन चुनौतियों को दूर कर सकते हैं तब विकसित भारत की यात्रा आसान हो जाएगी।

*(लेखक आईआईटी कानपुर में विशिष्ट विजिटिंग प्रोफेसर और पूर्व रक्षा सचिव हैं)*

## आपका पक्ष

### जलवायु परिवर्तन का समाधान जरूरी

जलवायु परिवर्तन आज विश्व की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। इस विषय पर अक्सर चर्चाएं होती हैं, सम्मेलन होते हैं, लेकिन ठोस कदम उठाने में देरी होती जा रही है। यह समस्या इतनी गंभीर है कि इसका समाधान व्यक्ति से लेकर सरकार तक, सभी को मिलकर करना होगा। हम सभी को जलवायु परिवर्तन के खतरों के बारे में जागरूक होना होगा। हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाकर, ऊर्जा का कम इस्तेमाल करके और पर्यावरण को बचाने के उपायों को अपनाकर इस समस्या से लड़ना होगा। सरकारों को भी इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। उन्हें पर्यावरण-हितैषी नीतियां बनानी होंगी और प्रदूषण को कम करने के लिए कड़े नियम लागू करने होंगे। हमें ऐसे विकास मॉडल को अपनाना होगा जो पर्यावरण के अनुकूल हो। हमें स्वच्छ ऊर्जा के स्रोतों को बढ़ावा देना होगा।

*राजूराम प्रजापत, नागौर*

जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की रक्षा करने पर जोर देना होगा

### 'बुलडोजर कार्रवाई' पर अदालत का फैसला

कुछ राज्यों में आरोपियों के घर बुलडोजर से तोड़े जाने के मामले में बुधवार को उच्चतम न्यायालय ने नाराजगी जताई और इसे मनमाना करार दिया। घर हर किसी का सपना होता है और किसी व्यक्ति का घर रातोरात बुलडोजर से गिरा देना कानून सम्मत नहीं है। अगर किसी व्यक्ति पर कोई आपराधिक मामला है तो उसे सजा देने का काम अदालत का है, न कि किसी प्रशासनिक अधिकारी का। किसी के घर पर सिर्फ इसलिए बुलडोजर चलाया जाए कि वह आरोपी है तो यह मनमानी कार्रवाई के अलावा कुछ नहीं है। बुलडोजर पर अदालत ने किसी के घर को बचाने के साथ व्यक्ति के परिवार के प्रति संवेदना दिखाई है जो अपना घर गिरने के बाद रातोरात कहीं जा भी नहीं सकते।

*मोहित कुमार, नई दिल्ली*

### मधुमेह रोग को काबू में करने की जरूरत

अंतरराष्ट्रीय मधुमेह दिवस 14 नवंबर को मनाया गया। आज बहुत सी जानलेवा बीमारियां लोगों को जकड़ने लगी हैं। इनमें में से एक बीमारी मधुमेह है। दुनियाभर में बढ़ते मधुमेह के आंकड़ों पर चिंता करते हुए इंटरनैशनल डायबिटीज फाउंडेशन ने मधुमेह दिवस मनाने का फैसला वर्ष 1991 में किया था। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र ने दुनिया भर में लोगों को मधुमेह के प्रति जागरूक करने के लिए 14 नवंबर को अंतरराष्ट्रीय मधुमेह दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस समय पूरे विश्व में लगभग 50 करोड़ लोग इस बीमारी के शिकार हैं। भविष्य में इससे पीड़ित लोगों का आंकड़ा और बढ़ सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार यह बीमारी शरीर के सभी अंगों को प्रभावित करती है। दुनिया में ही नहीं बल्कि हमारे देश में भी इसके मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। समय-समय पर स्वास्थ्य की जांच कराने से रोग का पता चलता है जिसका वक्त रहते इलाज हो सकता है। अगर हम अपने खानपान और जीवनशैली में सुधार लाएं तो कई बीमारियों से दूर रह सकते हैं। अगर हमें इस बीमारी से बचना है तो अपनी जिंदगी में योग, मेहनत और उचित खानपान अपनाना होगा।

*राजेश कुमार चौहान, जालंधर*

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिजनेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

## देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

भारतीय वायुसेना ने बहरीन के सखीर एयरबेस में 'बहरीन इंटरनैशनल एयर शो' में हिस्सा लिया। उसने कहा कि यह भारत और बहरीन के बीच मैत्री और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करता है। भारतीय वायुसेना के हेलीकॉप्टर सारंग की टीम अगले दो दिन तक आसमान में अपने कौशल से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करेगी।

विचार

# नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स | नई दिल्ली। शुक्रवार, 15 नवंबर 2024

## भरोसा जीतना होगा

**पिछले करीब** डेढ़ साल से हिंसा की कभी तेज तो कभी धीमी होती आंच में जलते मणिपुर को राहत मिलने के कोई आसार नहीं दिख रहे। जिरीबाम में पिछले एक सप्ताह के दौरान हुई हिंसा की घटनाओं ने एक बार फिर राज्य में तनाव काफी बढ़ा दिया है।

**अतिरिक्त बलों की तैनाती** | इसे देखते हुए केंद्र सरकार ने हालांकि तत्काल केंद्रीय सशस्त्र बलों (CAPF) की 20 अतिरिक्त कंपनियां हवाई मार्ग से भेज दीं। लेकिन राज्य में भारी संख्या में सुरक्षा बल पहले से तैनात हैं। वहां CRPF की 115 कंपनियां और BSF की 84 कंपनियां तो हैं ही, इसके अलावा RAF, SSB और ITBP की भी कंपनियां तैनात हैं। राज्य पुलिस और सेना के जवान इसके अतिरिक्त हैं। जाहिर है, इतने बड़े पैमाने पर सुरक्षा बलों की तैनाती के बावजूद अगर हालात काबू में नहीं आ रहे तो मामला सिर्फ सुरक्षा बलों की संख्या का नहीं, कुछ और भी है।

मणिपुर में बेकाबू हालात

**असर नहीं** | हिंसा का ताजा दौर प्रदेश के जिरीबाम जिले में गुरुवार को एक 31 वर्षीया महिला की हत्या के बाद शुरू हुआ। आरोप है कि मैतेई समुदाय के उग्रवादी संगठन से जुड़े लोग इसके पीछे थे। दो दिन बाद कथित तौर पर कुकी उग्रवादियों ने बिष्णुपुर जिले में किसानों के एक समूह पर हमला किया था, जिसमें 34 साल की एक महिला मारी गई। सोमवार को जिरीबाम में ही एक CRPF पोस्ट पर हमले के बाद जवाबी कार्रवाई में सुरक्षा बलों ने दस उग्रवादियों को मार गिराया। इसके बाद भी जिरीबाम के एक गांव से दो नागरिकों के शव बरामद हुए। यही नहीं एक मैतेई परिवार के छह सदस्य लापता बताए जा रहे हैं जिनके अगवा किए जाने का शक है।

**पक्षपात का आरोप** | खास बात यह कि अलग-अलग समुदायों के लोग सुरक्षा बलों के अलग-अलग हिस्सों पर पक्षपात का खुला आरोप लगाते हैं। हालांकि इस तरह के सामुदायिक तनाव की स्थितियों में सुरक्षा बलों पर पक्षपात के आरोप कोई नई बात नहीं है, लेकिन इस तरह का अविश्वास अभूतपूर्व तात्कालिक ही होता है। मणिपुर में पिछले साल मई से शुरू हुआ हिंसात्मक घटनाओं का सिलसिला न तो कभी पूरी तरह बंद हुआ और न ही माहौल सामान्य हो सका।

**विश्वास जीतना होगा** | सबसे बड़ी बात यह है कि स्थानीय आबादी का विश्वास हासिल करने का कोई विशेष प्रयास भी होता हुआ नहीं दिखा। हिंसा के इतने लंबे दौर की जिम्मेदारी तय करने की कोई कोशिश नहीं नजर आई। ऐसे में सुरक्षा बलों की तैनाती और विभिन्न पक्षों में बातचीत के दावे फलित होते नहीं दिख रहे। मणिपुर एक सीमावर्ती और खासा संवेदनशील राज्य है। इसलिए हालात को जल्द सामान्य करना जरूरी है।

## बात बराबर की

### चांस तो दीजिए

शैलेंद्र पांडेय

**कोलंबिया और** वेनेजुएला के बीच फैले La Guajira प्रायद्वीप में रहने वाली Wayuu जनजाति का इतिहास सैकड़ों बरस पुराना माना जाता है। इस दौरान कभी इन्हें अपने इलाके से बेदखल नहीं होना पड़ा। हालांकि इस जनजाति का सबसे बड़ा बदलाव आया इसी सदी में, साल 2015 में। तब नेरिस उरियाना के रूप में पहली बार किसी महिला को जनजाति का प्रमुख चुना गया। उस समय इस फैसले को शक की निगाहों से देखा जा रहा था, लेकिन आज इसने पूरी जनजाति का चेहरा बदल दिया है। मुखिया बनने के बाद नेरिस ने दूसरी जनजातियों के साथ लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष को खत्म करा दिया। यह तकरीबन असंभव था, क्योंकि कोई भी जनजाति समझौते को अपने स्वाभिमान के खिलाफ मान रही थी। नेरिस ने खेती में सुधार किए, और महिलाओं को ट्रेनिंग दिलाई। कभी मुश्किल से अपने लिए दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कर पाने वाले लोग आज अनाज बेचते भी हैं।

नेरिस उरियाना ने क्या अलग किया? उन्होंने वही किया जो एक महिला की खासियत होती है- सभी को सुनना, समझना, मिल-जुलकर फैसले लेना, स्पष्ट संवाद। महिलाएं अपने साथ नई सोच और नया स्किल सेट लेकर आती हैं। चैपरली उनकी खूबी होती है छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना। गौर कीजिए, एक महिला किस तरह घर के हर कोने को व्यवस्थित रखती है। उसका ध्यान वहां भी जाता है, जिसे शायद एक पुरुष नजरअंदाज कर दे। यह खूबी महिलाओं को लीडरशिप रोल में जगहें सजग और जागरूक बना देती है। उन्हें अडजस्ट करना बेहतर आता है। कभी वह माहौल के हिसाब से ढलती हैं, कभी अपने हिसाब से ढाल देती हैं। वह परिवार को संभालती हैं, तो टीम को संभालना उनके लिए कोई मुश्किल नहीं। और सबसे बड़ी खासियत है अपनी बात को प्रधानी ढंग से रखना और दूसरों को कन्विंस कर लेना।

हालांकि इन सबके बाद भी हम महिलाओं को नेतृत्व सौंपने में हिचकते हैं। लीडरशिप के लिए आमतौर पर पुरुष स्वाभाविक पसंद बन जाते हैं। वजह यह माना जाना कि वे मजबूत हैं, मुश्किल हालात संभाल लेंगे और उन्हें इसी के लिए बचपन से तैयार किया गया है। इसी सोच ने 2024 में भी महिला सीईओ का आंकड़ा केवल 19% तक सीमित रखा है। सीनियर मैनेजमेंट रोल में केवल 33.5% महिलाएं हैं। प्रफेशनल सर्विसेज देने वाली फर्म Grant Thornton की रिपोर्ट कहती है कि अगर इस ओर ध्यान न दिया गया, तो सीनियर मैनेजमेंट में महिलाओं को बराबरी 2053 तक ही मिल पाएगी। महात्मा गांधी का मानना था कि शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं, अदम्य इच्छाशक्ति से आती है। हमारे आसपास की महिलाएं इसे हर दिन साबित कर रही हैं। इसके बाद भी उन्हें बराबर हक नहीं दिया जाता, तो यह मानव संसाधन की बर्बादी होगी। हम जितनी देरी करेंगे, नुकसान उतना ही बढ़ता जाएगा।

## एकदा

### जोश की वाह-वाह

**एक बार** एक मुशायरा आयोजित हुआ। मंच पर जाने-माने शायरों का जमघट लगा था। उस शाम के सितारे थे जोश मलीहाबादी और गोपीनाथ अमन। खास बात यह थी कि इस मुशायरे में नए शायरों को भी अपनी रचनाएं पेश करने का मौका दिया गया था। शुरुआत में बड़े शायरों के कलाम ने महफिल को गरमाया। लेकिन जैसे ही नए शायरों की बारी आई, माहौल कुछ ठंडा सा लगने लगा। कुछ नए शायरों की गजलें ऐसी थीं जिनमें तुकबंदी तो थी, मगर शेर में न कोई वजन था और न ही कोई गहराई। मुशायरे में बैठे बाकी शायर और श्रोता ऐसे कलाम पर खामोश रहते, जैसे नजरों ही नजरों में उस शेर को दरकिनार कर रहे हों। मगर वहां जोश मलीहाबादी कुछ अलग ही कर रहे थे। हर बार जब किसी नए शायर का फीका कलाम पेश होता, जोश मलीहाबादी बड़े जोर-शोर से 'वाह-वाह' करते। 'गजब कर दिया!', 'वाह क्या शेर कहा है!' ऐसे अल्फाज उनके मुंह से लगातार निकलते जा रहे थे। यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा। फिर गोपीनाथ अमन ने धीरे से उनसे पूछा, 'यह आप क्या कर रहे हैं?' जोश ने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'पालंडेड।' गोपीनाथ अमन थोड़ा चौंके, पर उन्हें जोश की बात का मतलब समझते देर न लगी। जोश मलीहाबादी का यह शब्द दरअसल एक गहरे व्यंग्य का प्रतीक था। वह चाहते थे कि कम से कम वाह-वाह के जरिए ही इस बात पर सभी का ध्यान जाए कि नई शायरी में कितना खोखलापन आ गया है। यह उनका एक अनोखा तरीका था। जोश की यह वाह-वाह आज भी नए शायरों पर लागू होती है।

संकलन : जमील गुलरेज

मानव सभ्यता के लिए आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के विकास को सही नहीं मानते युवाल नोआ हरारी

# AI की ताक़त तानाशाहों के लिए ख़तरा

**इतिहासकार** और 'Sapiens' के लेखक **युवाल नोआ हरारी** ने अपनी नई किताब 'Nexus' में बात की है इंफॉर्मेशन पर, जिसके जरिये यह दुनिया चल रही है। **Noema मैगजीन** को दिए उनके **इंटरव्यू** के चुनिंदा अंश पेश हैं :

**सूचनाओं का नैरेटिव** | इंसानों में मिलजुल कर काम करने की प्रवृत्ति होती है, लेकिन इसके लिए जरूरी है कि बहुत से लोग नियम-कायदे, कानून, मूल्यों और कार्य योजना पर सहमत हों। अब इतने सारे लोगों को एक नेटवर्क से कैसे जोड़ा जाए? तो जवाब है सूचना के जरिये, खासतौर पर मिथकों, कथाओं और कहानियों के माध्यम से। हम इसकी तुलना इंसानी शरीर से कर सकते हैं। पहले केवल एक कोशकीय जीव थे। फिर करोड़ों-अरबों साल में बहुकोशकीय जीवों का विकास हुआ। इन जीवों में अरबों कोशिकाएं नर्वस सिस्टम और वायोकेमिकल्स द्वारा ट्रांसफर की जाने वाली सूचनाओं से जुड़ीं। शरीर में कई इंफॉर्मेशन नेटवर्क होते हैं। यही बात किसी देश, सेना, संगठन या चर्च के लिए भी सही है। पिछले दो हजार बरसों में जीसस क्राइस्ट की अनगिनत तस्वीरें बनाई गईं और इनसे अनगिनत लोग जुड़े। यहां चर्चों के नेटवर्क ने एक नर्व सेंटर की तरह काम किया।

**सरल दृष्टिकोण घातक** | लोगों को लगता है कि सूचना का मतलब है सच। अगर सूचना ही सत्य है, तो किसी के पास जितनी ज्यादा सूचना होगी, उतना ही ज्यादा ज्ञान होगा। लेकिन, दुनिया में सारी सूचनाएं सही नहीं होतीं। ज्यादातर सूचनाएं काल्पनिक, झूठी और गढ़ी गई हैं।

**सूचनाओं की जीत** | सचाई को स्वीकारना बहुत मुश्किल होता है। यह बात व्यक्तिगत स्तर के साथ-साथ सभ्यताओं और मुल्कों पर भी लागू होती है। अगर इस्राइल में कोई राजनेता फलस्तीन के साथ चल रहे विवाद का पूरा सच जनता को बताता है, तो वह कभी चुनाव नहीं जीत सकता। यहां सूचनाओं के बीच जंग चल रही है। इसमें एक तरफ महंगी, जटिल और नीरस इंफॉर्मेशन है, जबकि दूसरी तरफ सीधी, सरल और खुश करने वाली। बताने की जरूरत नहीं कि कौन जीतेगा। अगर दुनिया को सिर्फ सूचनाओं से भर दें, तो सच को हारना ही है। सच को जिताने के लिए कुछ करना होगा, जैसे कुछ ऐसे संगठन बनना जो सचाई बाहर लाने के लिए मेहनत करें।

**दोधारी तलवार** | आज के दौर में नैरेटिव की लड़ाई सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। यह पूरे नेटवर्क को बिखेर सकती है। सूचनाओं का एक और दोहरा चरित्र यह है कि इनसे पावर सेंटर जुड़ा होता है। कई तरह के इंफॉर्मेशन नेटवर्क बनाए जा सकते हैं। आप देखेंगे कि इतिहास के ज्यादातर युद्ध इंफॉर्मेशन नेटवर्क के अलग-अलग मॉडल के चलते हुए। इसका सबसे सही उदाहरण है लोकतंत्र और तानाशाही के बीच संघर्ष। तानाशाही एक सेंट्रलाइज्ड इंफॉर्मेशन सेंटर है। वहीं, डेमोक्रेसी एक डिस्ट्रिब्यूटेड इंफॉर्मेशन सेंटर।

**लोकतंत्र की जीत** | 20वीं सदी का अंत इस धारणा के साथ हुआ कि लोकतंत्र ने जीत हासिल की है और तानाशाही से लोकतंत्र अधिक प्रभावी है। इस विचार को समझने का सबसे सरल तरीका नैतिक नहीं, बल्कि सूचना के दृष्टिकोण से है। तब यह तर्क दिया गया था कि जब एक बड़े देश, जैसे सोवियत संघ की सारी जानकारी केंद्रित है, तो यह बहुत ही अप्रभावी हो जाती है। इंसान के पास इतनी जानकारी को प्रॉसेस करने की क्षमता नहीं। तब गलतियां होती हैं, खासकर आर्थिक फैसलों में। गलतियों को सुधारने का कोई तंत्र नहीं होता। यही सोवियत संघ में हुआ। पश्चिम ज्यादा सफल रहा, क्योंकि वहां इंफॉर्मेशन सिस्टम बंटा हुआ था। सारे फैसले एक ही जगह से नहीं हो रहे थे। किसी ने गलती की, तो उसे हटाया जा सकता था।

**AI से क्या बदलाव आएगा** | जब इंसानों पर सूचनाओं का ढेर लादा जाता है, तो वह उसे संभाल नहीं पाता। AI के लिए सूचनाएं खुराक हैं, उसे बेहतर बनाती हैं। 20वीं सदी में केंद्र में इंसान थे, तो असफलता मिली।

युवाल नोआ हरारी

हो सकता है, अब केंद्र में AI के होने से सफलता मिल जाए। याद रखना होगा कि मानव इतिहास में एक तानाशाह को अपवाद स्वरूप ही लोकतांत्रिक क्रांति से खतरा पैदा हुआ। उसे सबसे ज्यादा खतरा रहा अपने किसी अधीनस्थ से, जो उससे ज्यादा ताकतवर होकर उसके काबू से बाहर हो गया। आज एक तानाशाह को AI से डरना चाहिए।

**टूल नहीं, एजेंट** | पिछली सारी टेक्नॉलजी एक टूल थी। AI टूल नहीं, एजेंट है। यह निर्णय लेता है। धरती पर पहली बार हमें बहुत समझदार एजेंट से लड़ना पड़ रहा है। यह बात भी ध्यान में रखने वाली है कि आज का AI प्रारंभिक स्तर का है। जिस तरह इंसानों का विकास हुआ, वैसे इसका भी होगा। लेकिन, ऑर्गेनिक इवॉल्यूशन में करोड़ों-अरबों साल लगे, जबकि डिजिटल इवॉल्यूशन महज 20 बरसों में हो सकता है। अगर ChatGPT अभीभी है, तो सोचिए कि AI का डायनासोर कुछ कैसा होगा! AI खुद सुधार करने का मैकेनिज्म नहीं है। यह भी गलती कर सकता है। तो कभी न कभी यह कोई भयानक गलती करेगा और उसे सुधारने वाला कोई नहीं होगा।

# असली दुनिया से दूर ले जा रहे स्मार्टफोन

मुकुल श्रीवास्तव

**तकनीक** ने पिछले कुछ बरसों में हमारे जीवन को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटॉप जैसी डिजिटल डिवाइस आज हर व्यक्ति की जीवनशैली का हिस्सा हैं। इनके बढ़ते प्रभाव ने हमारी आदतों, सोच और मानसिक क्षमता पर गहरा असर डाला है। कभी खाली समय में किताबें पढ़ना, पत्र लिखना शौक हुआ करते थे, लेकिन अब वह समय बिंज वॉचिंग, रील स्क्रॉलिंग और विडियो देखने में गुजरता है। बहुत से लोगों के लिए पढ़ना पुराने जमाने की बात हो गई है। यह बदलाव कहीं न कहीं मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रहा है।

**आदत से मजबूर** | वोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2010 में लोग औसतन 2 घंटे फोन पर बिताते थे, 2024 में यह समय बढ़कर 4.9 घंटे हो गया है। भारत में एक स्मार्टफोन यूजर दिन में औसतन 80 बार अपना फोन चेक करता है। ज्यादातर बार वह बिना जरूरत के, सिर्फ आदतन अपना फोन देखता है। इनमें से कई बार सुबह उठने के 15 मिनट के भीतर फोन देखना भी शामिल है। यह आंकड़ा दिखाता है कि हम अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा डिजिटल स्क्रीन के सामने बिता रहे हैं और उसका भी अधिकांश हिस्सा विजुअल कंटेंट के नाम कुर्बान हो रहा है।

**ध्यान में कमी** | स्मार्टफोन और विजुअल कंटेंट के बेतहाशा इस्तेमाल से हमारी किसी चीज पर ध्यान देने और समझने की क्षमता लगातार ही कम होती जा रही है। माइक्रोसॉफ्ट की एक स्टडी बताती है कि डिजिटल लाइफस्टाइल की वजह से इंसानों की ध्यान अवधि एक गोल्डफिश से भी कम हो गई है। असल में, सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म जैसे फेसबुक, यूट्यूब और इंस्टाग्राम वगैरह को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि हमारा दिमाग छोटे और संक्षिप्त कंटेंट को एक बार में ही झट से पकड़ने के लिए तैयार हो जाए। ये प्लैटफॉर्म हमें इन कंटेंट की इतनी आदत डाल देते हैं कि शब्दों से भरी किताबें, क्लासरूम और लंबे लेक्चर उबाऊ लगने लगते हैं। फिर हमारा दिमाग उन्हें पहले की तरह अच्छे से प्रॉसेस नहीं कर पाता। इन शॉर्ट विडियो प्लैटफॉर्म पर जब हमें कुछ अच्छा नहीं लगता तो हमारे पास अनगिनत स्क्रॉल का विकल्प होता है, लेकिन असल जिंदगी में ऐसा कुछ नहीं होता।

AI Image
कॉमन रूम

**पढ़ना मुश्किल हुआ** | प्यू रिसर्च सेंटर का एक सर्वे बताता है कि सोशल मीडिया के लगातार इस्तेमाल से स्टूडेंट्स को कई बार पढ़ाई पर फोकस और काम पर ध्यान केंद्रित करने में मुश्किल महसूस होती है। सर्वे में 31% किशोरों ने माना कि वे क्लास में अपना ध्यान खो बैठते हैं और 49% का कहना था कि उन्हें ज्यादा देर लेक्चर सुनना उबाऊ लगता है। रिपोर्ट में एक खास बात पर जोर दिया गया है कि अब किताबें पढ़ना पहले जितना आसान नहीं रह गया है। जानकारी याद रखना एक चुनौती की तरह हो गया है, जिससे लोगों में झुंझलाहट बढ़ गई है।

**किताबों की बिक्री घटी** | लोग पारंपरिक मीडिया जैसे अखबार, मैगजीन और टीवी से मिलने वाली खबरों के प्रति रुचि खोते जा रहे हैं। उनका रुझान डिजिटल मीडिया की ओर बढ़ रहा है। गॉलप्स की 2023 डिजिटल रिपोर्ट के एक सर्वे के अनुसार, 71% भारतीय ऑनलाइन समाचार देखना पसंद करते हैं। केवल 29% का रुझान अखबार पढ़ने में है। वहीं, इंडियन रीडरशिप सर्वे का अनुमान है कि 2026 तक ऑनलाइन न्यूज की पहुंच 70 करोड़ भारतीयों तक हो जाएगी। खबरों के अलावा युवा पाठक अब ई-बुक्स और ऑडियो बुक्स को ज्यादा पसंद कर रहे हैं। साल 2023 में 2022 के मुकाबले प्रिंट किताबों की बिक्री में 2.6% की गिरावट दर्ज की गई है।

**शिक्षा पर असर** | लेख और किताबों की जगह विडियो लेक्चर्स ने ले ली है। ऑनलाइन लर्निंग प्लैटफॉर्म पर स्टूडेंट्स बढ़ते जा रहे हैं। दरअसल, विजुअल और ऑडियो माध्यम से जानकारी को समझना और सीखना आसान हो जाता है। लेकिन, अगर छात्र किताबों को छोड़कर सिर्फ विडियो लेक्चर्स पर निर्भर हो जाएंगे, तो इससे उनकी समझ पर असर पड़ सकता है। किताबें विश्लेषण करने की क्षमता, एकाग्रता और गहरी सोच का निर्माण करती हैं।

# ED और CBI जैसी एजेंसियों का मनमाना इस्तेमाल संविधान की ख़ातिर नहीं है ठीक

राजस्थान के मुख्यमंत्री और भारत सरकार में केंद्रीय मंत्री रह चुके कांग्रेस नेता **अशोक गहलोत** नवभारत टाइम्स के कार्यालय में आए। इस दौरान **दामोदर व्यास** ने उनसे बातचीत की। पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश :

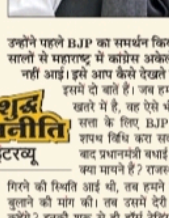

**■ महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में MVA और कांग्रेस को लेकर आपकी क्या उम्मीदें हैं?**

लोकसभा चुनाव के बाद महाविकास आघाड़ी का महाराष्ट्र में शानदार प्रदर्शन रहा। विधानसभा चुनावों में भी यही रिपीट होने की उम्मीद है। यहां के गांवों में काम करने वाले लोकल कार्यकर्ताओं से बात हुई है। वहां आज भी कांग्रेस मजबूत है। कई जगह तो हमारा गठबंधन एकतरफा जीत रहा है। हालांकि, शहरों में BJP की शुरू से ही पकड़ ठीक-ठाक रही है, लेकिन महाविकास आघाड़ी के दूसरे दल शहरों में भी अच्छा प्रदर्शन दोहराएंगे। दुर्भाग्यपूर्ण है कि जो चुनाव मुद्दों पर आधारित होने चाहिए थे, वे धर्म के नाम पर लड़े जा रहे हैं। हम इस बात को हमेशा कहते आए हैं कि BJP संविधान के लिए खतरा है। इस खतरे का आशय इसी से है कि इन्होंने कोर्ट, मीडिया या चुनाव आयोग को भी नियंत्रित किया हुआ है। ED, इनकम टैक्स और CBI जैसी एजेंसियों पर भी नियंत्रण किया है।

**■ क्या वजह है कि शहरों में BJP की पकड़ मजबूत है, लेकिन कांग्रेस की नहीं?**

जनसंघ के जमाने से ही BJP व्यापारियों की पार्टी मानी जाती है। शहर में रहने वालों की सोच थोड़ी अलग होती है। व्यापारी वर्ग के लोग या उच्चवर्गों का सरकार से सीधा पाला पड़ता है। अभी सरकार भी इनकी है, इसलिए शायद शहरों का झुकाव BJP की ओर ज्यादा है।

**■ गठबंधन की राजनीति से कांग्रेस को कैसे नुकसान हुआ है? अभी जो दल आपके साथ हैं, उन्होंने पहले BJP का समर्थन किया था। पिछले 25 सालों से महाराष्ट्र में कांग्रेस अकेले दम पर सत्ता में नहीं आई। इसे आप कैसे देखते हैं?**

इसमें दो बातें हैं। जब हम कहते हैं संविधान खतरे में है, यह ऐसे भी स्पष्ट होता है कि सत्ता के लिए BJP सुबह 6 बजे भी शपथ विधि करा सकती है और 1 घंटे बाद प्रधानमंत्री बधाई भी दे देते हैं। इसके क्या मायने हैं? राजस्थान में जब सरकार गिरने की स्थिति आई थी, तब हमने गवर्नर से असेंबली बुलाने की मांग की। तब उसमें देरी की गई। इसे क्या कहेंगे? इनकी शुरू से ही हॉर्स ट्रेडिंग की नीति रही है। इन्होंने मध्य प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र में सरकारें गिराने की कोशिशें कीं। हालांकि, राजस्थान में ऐसा कर नहीं पाए, जिसका इन्हें मलाल है।

**■ किसानों के मुद्दे पर आप क्या कहेंगे, जिसे उठाने के बावजूद हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में कांग्रेस अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी?**

यह रेकॉर्ड में है कि किसान आंदोलन में करीब 700 किसानों की मौत हुई। चुनावों की बात अलग है। उसके परिणाम कई बातों पर निर्भर करते हैं। BJP के लोग किसानों की बात करते हैं लेकिन उनके हक के लिए कुछ नहीं करते। किसानों के लिए कानून बनाए जाते हैं लेकिन किसी भी पक्ष को शामिल नहीं किया जाता। मनमोहन सरकार ने करीब 2000 करोड़ रुपये किसानों का कर्ज माफ किया था। 2018 में राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकारों ने भी किसानों के कर्ज माफ किए। ये लोग तो किसानों की कर्ज माफी के सवाल पर संसद में घूमा-फिरा कर जवाब देते हैं। महाराष्ट्र में तो किसानों की स्थिति सबसे ज्यादा दयनीय है।

**■ लोकसभा चुनावों में 'मंगलसूत्र' चर्चा में था। अब 'बटेंगे तो कटेंगे' चर्चा में है...**

मंगलसूत्र का परिणाम तो देश की जनता ने देख ही लिया। अब 'बटेंगे तो कटेंगे' के जरिए ध्रुवीकरण की राजनीति दोहराई जा रही है। यह देश के लिए सही नहीं है। यह पार्टी (BJP) ध्रुवीकरण की राजनीति ही करती है। बटेंगे तो कटेंगे कहने वाले ही नेताओं को उनकी पार्टियों से काट रहे हैं, पार्टियों को बांट रहे हैं। महाराष्ट्र में ऐसा हो चुका है। इन्होंने कर्नाटक में भी ऐसा करने का प्रयास किया। ये पार्टी लोगों को गुमराह करने का काम करती है।

**■ महाराष्ट्र में इस बार 'लाडकी बहिण' योजना की बड़ी चर्चा हो रही है। मुख्यमंत्री के तौर पर आप भी राजस्थान में ऐसी कई स्कीमें लेकर आए, फिर भी हार का सामना करना पड़ा...**

कांग्रेस की सरकार और BJP में यही मुख्य अंतर है कि हमारी सोशल वेलफेयर स्कीम चुनाव देखकर नहीं बनती। हमारी स्कीमें आज भी चल रही हैं, ये अलग बात है कि इन्होंने (BJP सरकार) स्कीमों का नाम बदल दिया। अन्य प्रदेशों में भी हमारी स्कीमों का ही दोहराव किया।

विशुद्ध राजनीति इंटरव्यू

## रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

**■ अधिकारियों की जिम्मेदारी**

**देश के** अलग-अलग हिस्सों में जिस तरह से बुलडोजर न्याय के रूप में अन्याय का नया प्रचलन शुरू हो गया था, उस पर सुप्रीम कोर्ट का रोक लगाना स्वागत योग्य है। इस पर प्रकाशित संपादकीय 'बुलडोजर पर ब्रेक' (14 नवंबर) पढ़ा। पिछले काफी समय से राजनीतिक दलों की बुलडोजर न्याय की प्रणाली बढ़ती ही जा रही थी, और वह राजनीतिक रूप भी लेती जा रही थी। अब सुप्रीम कोर्ट ने न सिर्फ उस पर रोक लगाई है, बल्कि बुलडोजर चलवाने वाले अधिकारियों की जिम्मेदारी भी तय की है। अब कम से कम अधिकारियों और सरकारी मशीनरी का राजनीतिक उपयोग तो नहीं हो पाएगा।

शुभम समर्थ, ईमेल से

**■ समझदार है मतदाता**

**संपादकीय पृष्ठ** पर प्रकाशित लेख 'क्या अपनी धार खो रही है लिबरल ताकतें' (13 नवंबर) पढ़ा। अमेरिकी चुनाव में डॉनल्ड ट्रंप की जीत ने मतदाताओं के मनोभाव में आए परिवर्तन को रेखांकित किया है। चुनाव अमेरिका में हो या भारत में, अब मतदाता अधिक परिपक्व और समझदार हो चुका है। अमेरिका में भी महंगाई और बेरोजगारी बड़ी समस्या है। वादे करना आसान है, और पूरे करना बहुत मुश्किल, यह बात ट्रंप को शायद अब समझ में आएगी।

सुभाष बुड़ावन वाला, ईमेल से

**■ कैसे संभले मौसम**

**13 नवंबर** का लेख 'खतरा सर पर, क्या बचा पाएगा COP 29' पढ़ा। अजरबैजान की राजधानी बाकू में पर्यावरण का यह महाकुंभ हो रहा है। जलवायु परिवर्तन से जुड़े खतरों को नजरअंदाज करने की कीमत अब सभी को चुकानी पड़ रही है। दुनिया लगातार गर्म हो रही है, जिसकी मार सभी देशों पर पड़ रही है। दिक्कत अमेरिका की तरफ से है। ट्रंप क्लाइमेट चेंज के खतरों को सही नहीं मानते। इस बार भी अमेरिकी रुख पर कई चीजें निर्भर करेंगी। देखना दिलचस्प होगा कि COP 29 में इस दिशा में क्या ठोस प्रगति होती है।

चंद्र प्रकाश शर्मा, रानी बाग

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

## अंतिम पत्र

**'बुलडोजर न्याय'** का अतिक्रमण ध्वस्त- एक खबर

अब इसका मलबा किस नेता जी के यहां डाला जाएगा?

सरला पांडे

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

www.speakingtree.nbt.in

## जब परमेश्वर के अलावा कोई नहीं है तो भय किसका

आनन्दमूर्ति गुरुमा

**जिसकी निष्ठा,** जिसका प्यार उस 'एक' से है, अनेक से नहीं, वही नानक है। गुरुजन ही परमात्मा है और उस परमात्मा की वंदना की यह सीख उन्होंने दी है। परमात्मा के स्वरूप को बताने के लिए गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं- 'आपहि सूक्षम आपहि असथूला।' स्थूल भी वही है, सूक्ष्म भी वही है। आप भी वही हैं, मैं भी वही हूं। लेकिन यह बात जल्दी से समझ में नहीं आने वाली है। इसलिए गुरु नानक देव जी ने उसका एक आसान तरीका भी दिया और सबको कहा कि सतनाम का सुमिरन करो।

परमात्मा का अनादि अनंत स्वरूप कैसा है? यह जानने का मूलमंत्र है- हे परमेश्वर! तू एक है। तू ही ओंकार, व्यापक स्वरूप है। उसका नाम सत्य है। वही 'करता पुरख' है। आमतौर पर इसका अर्थ लिया जाता है कि परमात्मा ही इस सारे संसार को बनाने वाले हैं। अगर इस बात को हम सही मानें तो यह कहना पड़ेगा कि परमात्मा ने सृष्टि बनाई और इसे बनाकर वह कहीं अलग हो गया। फिर तो वह व्यापक न रहा। 'करता पुरखु' का अर्थ है कि इस देह रूपी पुर (घर) में जो रहता है, वही करता पुरखु है। आप ही करती हैं, आप ही कृति हैं, और आप ही इस कृति में बैठे हैं। जैसे मकड़ी अपने ही शरीर से जाला बुनती है और फिर उसे समेटकर वापस अपने अंदर ही डाल लेती है। ऐसे ही परमेश्वर ने इस सारे संसार को पैदा किया और एक दिन उसी में सब लीन हो जाता है।

'निरभउ निरवैरु' उसे किसी से डर नहीं, किसी से वैर नहीं। जब परमेश्वर के अलावा कोई है ही नहीं तो फिर भय किसका? जिसके मन-बुद्धि एक ओंकार में ही टिक गए, वह व्यक्ति निर्वैर (जिसका कोई दुश्मन नहीं) हो जाता है। जिसके अंदर ज्ञान का दीपक जल जाता है, उसके लिए कोई शत्रु नहीं, कोई वैरी नहीं। 'अकाल मूरति' उस परमेश्वर का स्वरूप अकाल है। अकाल यानी जो समय से परे है। जो भूत, वर्तमान और भविष्य के घेरे में आ गया, उसका तो विनाश ही होता है। 'अजूनी सैभं' परमात्मा स्वयंभू और स्वयंप्रकाश है। जब हम दीपक जलाते हैं, तो उसमें भी होता है, बाती होती है। भी खत्म होते ही ज्योत बुझ जाती है। ऐसे ही चंद्रमा प्रकाश के लिए निर्भर है सूर्य पर, सूर्य निर्भर है महासूर्य पर। केवल परमात्मा ही है जो किसी पर निर्भर नहीं है। उसकी ज्योति अपने आप से है।

'गुर प्रसादि' के मूल मंत्र में गुरु नानक देव जी महाराज ने परमेश्वर की शुद्धतम व्याख्या दी है। 'गुर' का अर्थ है चेतना और 'प्रसादि' का अर्थ है आनंद। यह है परमात्मा का मूल स्वरूप। चेतना यानी ज्ञान वह रोशनी है जो आपके मन के अंधकार को दूर करती है और यह रोशनी संतों से, गुरुओं से मिलती है। संत वही है जिसके पास जाने से सत्य का बोध होता है। गुरुदेव कहते हैं कि अहंकार को मारना सीखो और मन के भ्रम को दूर करो। जब यह दूर हो जाए तो जन्म-मरण के बंधन से छूट जाओगे। सत्य की दृष्टि संसार में कभी नहीं मिलती, धन देकर भी नहीं। सत्य को समझने वाली नजर हमें सिर्फ सत्संग में ही मिलती है। 'राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरम तिनाह' गुरु नानक देव जी महाराज स्वयं मुक्त हैं और इस मुक्ति का प्रसाद वह सारे संसार को देते हैं।

[illegible]

दैनिक जागरण

लचीलापन से ही परिस्थितियों के अनुरूप ढला जा सकता है

## कब थमेगी साइबर ठगी

डिजिटल अरेस्ट का भय दिखाकर लोगों के साथ ठगी करने के मामले जिस तरह थमने का नाम नहीं ले रहे हैं, उससे यही स्पष्ट होता है कि पिछले दिनों प्रधानमंत्री की ओर से लोगों को साइबर ठगों के इस हथकंडे के प्रति चेताने और संबंधित एजेंसियों की ओर से सक्रियता दिखाए जाने की सूचनाएं आने के बाद भी नतीजा ढाक के तीन पात वाला है। यह चिंताजनक है कि न केवल डिजिटल अरेस्ट की धमकी देकर ठगने के मामले बढ़ रहे हैं, बल्कि ठगी की राशि भी बढ़ती जा रही है। अब तो लोगों से करोड़ों रुपये की ठगी की जा रही है। ठगी का शिकार होने वालों में पढ़े-लिखे और जानकार समझे जाने वाले लोग भी बढ़ रहे हैं। कई मामलों में यह भी देखने में आया है कि साइबर ठगों के शिकार लोग शर्मिंदगी के कारण पुलिस के पास शिकायत दर्ज कराने से हिचकते हैं। सरकारी एजेंसियां चाहे जो दावे करें, बहुत कम मामलों में ठगी गई राशि बरामद होती है और ठगों को गिरफ्तार किया जाता है। यह तब है, जब ठगी गई राशि देश के ही खातों में ट्रांसफर कराई जाती है। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि सरकार की ओर से यह स्पष्ट किया जा चुका है कि सीबीआइ, ईडी, आयकर विभाग आदि उसकी किसी भी एजेंसी की ओर से डिजिटल अरेस्ट जैसी कार्रवाई नहीं की जाती।

इसमें संदेह है कि आम लोग साइबर ठगों की चालबाजी से भली तरह जागरूक हो चुके हैं। जागरूकता के अभाव का एक कारण यह भी है कि सरकार ने साइबर ठगों और उनकी ठगी के नित-नए तरीकों के प्रति लोगों को सही तरह सतर्क नहीं किया है। यदि यह समझा जा रहा है कि समाचार पत्रों में एक-दो विज्ञापन जारी करने अथवा प्रधानमंत्री की ओर से मन की बात कार्यक्रम में इस समस्या को रेखांकित करने से लोग डिजिटल अरेस्ट के बहाने की जा रही ठगी के काले कारोबार से अवगत हो गए हैं तो यह सही नहीं। सरकार को न केवल साइबर ठगों की कमर तोड़ने के लिए और अधिक सख्ती का परिचय देना होगा, बल्कि लोगों को जागरूक करने का कोई व्यापक अभियान भी चलाना होगा। अच्छा हो कि इस पर विचार किया जाए कि कुछ दिनों के लिए मोबाइल कालर ट्यून के जरिये लोगों को चेताया जाए कि इस-इस तरह की फोन कल आए तो सावधान हो जाएं। साइबर ठगी के बढ़ते मामले केवल देश को डिजिटल करने के अभियान को ही चोट नहीं पहुंचा रहे हैं, बल्कि भारत की छवि भी खराब कर रहे हैं। साइबर ठग पहले लोगों को लालच देकर ठगते थे। अब वे लोगों को धमकाकर अथवा उनका मोबाइल फोन हैक करके यही काम कर रहे हैं। साफ है कि उनका दुस्साहस बढ़ रहा है। उनका बढ़ता दुस्साहस सुरक्षा एजेंसियों की नाकामी का ही परिचायक है। यह नाकामी निराश करने वाली है।

## पलायन की रोकथाम

विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले उत्तराखंड में गांवों से पलायन एक ऐसा विषय है, जिसका अभी तक समाधान नहीं हो पाया है। यद्यपि, पिछले आठ वर्षों के कालखंड में सरकारों ने इस विषय को प्रमुखता से लिया है। पलायन के कारण सामने आने के बाद इसकी रोकथाम के उपायों पर काम हो रहा है। गांवों के आसपास आजीविका के अवसरों की उपलब्धता और मूलभूत सुविधाओं के विस्तार की दिशा में आगे बढ़ा जा रहा है। आमजन के साथ ही स्वरोजगार करने वालों से सुझाव भी लिए जा रहे हैं। बावजूद इसके क्रियान्वयन के मोर्चे पर अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विशेषकर, पर्वतीय क्षेत्र में। यद्यपि, अब तक की पहल ने थोड़ी उम्मीद जगाई है। पूर्व में जो पलायन अन्य राज्यों के शहरों की ओर होता था, वह अपने ही राज्य के शहरों में हो रहा है। ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण में हुई पलायन निवारण आयोग की बोर्ड बैठक में भी समस्या के समाधान के दृष्टिगत विभिन्न योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को गंभीरता के साथ काम करने की जरूरत बताई गई। पलायन की रोकथाम के लिए आजीविका विकास व मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता के मोर्चे पर तो सरकार काम करेगी, लेकिन हर स्तर पर सोच में बदलाव भी आवश्यक है। इसके लिए पहल जनप्रतिनिधियों के माध्यम से होनी चाहिए। उस वर्ग को भी अपनी जड़ों से जुड़ाव का अहसास होना चाहिए, जो पढ़ाई-लिखाई के बाद यहीं रहकर कुछ करने के बजाय पलायन कर जाते हैं। इस पलायनवादी सोच को बदलने की जरूरत है। कहने का आशय यह कि समस्या के समाधान को हर स्तर पर सोचना होगा। जो प्रवासी हैं, वे अपनी जड़ों से जुड़कर कम से कम पैतृक गांव के विकास में भागीदारी करें तो इससे बेहतर क्या होगा। वे गांव, क्षेत्र व राज्य के विकास में योगदान दे सकते हैं।

गांवों से पलायन की रोकथाम के लिए हर स्तर पर सोच में बदलाव की आवश्यकता है

# जनजातीय गौरव की भावना का उत्सव

द्रौपदी मुर्मु

**स्वतंत्रता, न्याय, पहचान और सम्मान की भगवान बिरसा मुंडा की आकांक्षाएं हमारे देश के युवाओं की प्रेरणा हैं**

अशोक रगड़ा

इतिहास के प्रत्येक कालखंड में हमारी मातृभूमि ने ऐसे वीर बेटे-बेटियों को जन्म दिया है, जिन्होंने अपने विलक्षण योगदान के बल पर भारत की भावना को अभिव्यक्ति दी है। कुछ विभूतियों ने सप्तर्षि मंडल के नक्षत्रों की तरह हमारा मार्गदर्शन किया। भगवान बिरसा मुंडा हमारे नक्षत्र मंडल के सबसे चमकते सितारों में से एक थे, जिनका प्रकाश राष्ट्र के मार्ग को आलोकित करता है। आज जब देश ने अपने आधुनिक इतिहास के इस महान व्यक्तित्व की 150वीं जयंती का साल भर चलने वाला समारोह शुरू किया है, तब मैं उनकी पुण्य स्मृति को कृतज्ञतापूर्वक नमन करती हूं। मुझे यह आता है कि कैसे बचपन में भगवान बिरसा मुंडा की गाथाएं सुनकर मुझे और मेरे संगी-साथियों को अपनी विरासत पर गर्व होता था। मात्र 25 वर्ष की आयु में आज के झारखंड के उलिहातु गांव का वह बालक औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध जन-प्रतिरोध का महानायक बन गया। जब ब्रिटिश अधिकारी और स्थानीय जमींदार जनजातीय समुदायों का शोषण कर रहे थे, उनकी जमीनें हड़प रहे थे और अत्याचार कर रहे थे, तब भगवान बिरसा इस सामाजिक-आर्थिक अन्याय के विरुद्ध उठ खड़े हुए। उन्होंने लोगों को अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए प्रेरित किया।

'धरती आबा' के रूप में सम्मानित भगवान बिरसा ने ब्रिटिश उत्पीड़न के विरुद्ध 'उलगुलान' या मुंडा विद्रोह का संचालन किया। यह एक विद्रोह से कहीं बढ़कर न्याय और संस्कृतिक पहचान के लिए था। उनकी सूझबूझ ने जनजातीय लोगों द्वारा बिना किसी हस्तक्षेप के अपनी जमीन पर खेती करने के अधिकार और जनजातीय रीति-रिवाजों के महत्व को एक साथ जोड़ दिया। महात्मा गांधी की तरह उनका संघर्ष भी न्याय और सत्य की खोज से प्रेरित था। बीमारों की सेवा उनके लिए मिशन था। उन्हें एक उपचारकर्ता का प्रशिक्षण मिला था। अद्भुत घटनाओं की एक श्रृंखला ने लोगों में यह विश्वास पैदा किया कि ईश्वर ने उन्हें एक महान उपचारक का विशेष स्पर्श दिया है। वह गांव-गांव बीमारों से मिलने जाते और अपने कौशल से असंख्य लोगों को स्वस्थ करते। उनके बलिदान की गाथा भारत के जनजातीय समुदायों के महान क्रांतिकारियों के इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उनके संघर्ष हमारी उस अनूठी परंपरा को रेखांकित करते हैं, जहां कोई भी समुदाय कभी मुख्यधारा से अलग नहीं रहा। बनवासी, जो आज अनुसूचित जनजातियों की श्रेणी में आते हैं, हमेशा से राष्ट्रीय सामूहिकता का हिस्सा रहे हैं।

एक समय था जब भगवान बिरसा मुंडा और अन्य ऐसी विभूतियों का नाम इतिहास के 'गुमनाम नायकों' में था। हाल के दिनों में मातृभूमि के लिए उनके पराक्रम और बलिदान को अधिक से अधिक लोगों द्वारा सही मायने में सराहा जाने लगा है। आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान हमने अपनी संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का उत्सव मनाया। इससे देशवासियों, विशेषकर युवा पीढ़ी को ऐसे महान देशभक्तों के बीरतापूर्ण योगदान के बारे में अधिक जानकारी मिली, जिनके बारे में पहले कम लोग जानते थे। इतिहास के साथ इस नए जुड़ाव को तब बढ़ावा मिला, जब सरकार ने 2021 में जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का स्मरण करने के लिए बिरसा मुंडा की जयंती-15 नवंबर को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने का फैसला किया।

बिरसा मुंडा की विरासत के स्मरणोत्सव का उद्देश्य लंबे समय से उपेक्षित जनजातीय इतिहास को भारत के इतिहास के केंद्र में स्थापित करना है। इतिहास के ऐसे अध्याय आज और भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे आधुनिक विश्व को प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने और पारिस्थितिकी को संरक्षित करने की महत्वपूर्ण शिक्षा देते हैं। आम तौर पर जनजातीय समुदाय के लोग संतुष्ट रहते हैं, क्योंकि वे निजी महत्वाकांक्षाओं की तुलना में सामूहिक अच्छाई को अधिक महत्व देते हैं। मानव जाति के बेहतर भविष्य के लिए जनजातीय समाज की इस विशेषता को पोषित करने के लिए ही पिछले दशक में सरकार ने भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक तानेबाने में जनजातीय समुदायों के महत्व को उचित मान्यता देने के लिए व्यापक प्रयास शुरू किए। उसने नारों से परे जाकर जनजातीय कल्याण के प्रयासों को जमीनी स्तर पर ले जाने के उद्देश्य से कई कार्यक्रम एवं योजनाएं लागू की हैं। जनजातीय विकास और कल्याण हेतु समग्र दृष्टिकोण के साथ करीब 63,000 जनजातीय गांवों में सामाजिक विकास के बुनियादी ढांचे की कमी को पूरा करने के लिए गत माह धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान शुरू हुआ। प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान (पीएम-जनमन) भी कल्याणकारी प्रयासों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए 11 महत्वपूर्ण कार्यक्रमों पर केंद्रित है।

जनजातीय समुदायों के सर्वांगीण विकास के लिए अथक प्रयास करना ही भगवान बिरसा मुंडा और अन्य जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति राष्ट्र की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि है। मेरे लिए यह अत्यंत संतोष की बात है कि राष्ट्रपति भवन में भी जनजातीय समुदाय के लोगों तक पहुंचने के लिए नई पहल की गई। राष्ट्रपति भवन संग्रहालय में मैंने 'जनजातीय दर्पण' गैलरी के उद्घाटन को मैं अपना सौभाग्य मानती हूं। यह गैलरी समृद्ध कला, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण में जनजातीय समुदायों के योगदान की झलक दिखाती है। अगस्त में राज्यपालों के सम्मेलन में मुझे जनजाति कल्याण के लिए संसाधनों के बेहतर उपयोग की जरूरत पर विचार रखने का अवसर मिला।

मुझे विशेष रूप से कमजोर 75 जनजातीय समुदायों के प्रतिनिधियों से संवाद का मौका मिला, जिन्हें राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित किया गया। अगर कोई एक उपलब्धि है, जिस पर मुझे गर्व है तो वह हमारे जनजातीय भाई-बहनों की वह भावना है, जिसके कारण मेरे सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन होने को वे समस्त जनजातीय समुदाय के लिए एक अभूतपूर्व मान्यता के रूप में देखते हैं। हम सब मिलकर इसी भावना के साथ बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मनाने की शुरुआत कर रहे हैं। मेरा मानना है कि बिरसा मुंडा के आदर्श न केवल जनजातीय, बल्कि देश के सभी समुदायों के युवाओं के लिए गर्व और प्रेरणा का स्रोत हैं। स्वतंत्रता, न्याय, पहचान और सम्मान के लिए बिरसा मुंडा की आकांक्षाएं देश के हर युवा की आकांक्षाएं हैं।

(लेखिका भारत की राष्ट्रपति हैं)

response@jagran.com

# भारत से आस लगाए बांग्लादेशी हिंदू

कृपाशंकर चौबे

**बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हमले इसलिए नहीं रुक रहे, क्योंकि उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो रही**

ढाका से सटे नारायणगंज जिले में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में वक्तव्य देने के लिए मैं बीते दिनों बांग्लादेश में था। इस दौरान मुझे वहां के सामाजिक एवं मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, प्रबुद्ध नागरिकों और अल्पसंख्यकों से मिलने का अवसर मिला। उनसे बातचीत के बाद मैंने पाया कि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का सवाल अभी भी संवेदनशील बना हुआ है। कट्टरपंथी अब भी किसी न किसी बहाने अल्पसंख्यकों पर टूट पड़ते हैं। वर्ष 2001 के आम चुनाव में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) और जमात ए इस्लामी के सत्ता में आने पर आबामी लीग और उसके सहयोगी संगठनों के नेताओं, कार्यकर्ताओं के साथ ही अल्पसंख्यकों पर हमले हुए। उन हमलों की जांच के लिए एक न्यायिक आयोग बना था। बर्तमान राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन उसके अध्यक्ष थे। आयोग को लगभग 25 हजार शिकायतें मिलीं, किंतु केवल पांच हजार आरोप स्वीकार किए गए। इन पांच हजार आरोपों की भी न तो कोई जांच की गई और न ही किसी पर मुकदमा चलाया गया।

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर कट्टरपंथियों के अधिकांश हमले उनकी संपत्ति पर कब्जे के उद्देश्य से होते हैं। कट्टरपंथियों ने शेख हसीना को हटाने के लिए कथित आंदोलन की आड़ में जमकर हिंसा फैलाई। उन्होंने फिल्म्बारा ऋत्विक घटक के घर को भी नहीं बख्शा, जिन्होंने ढैनों और के बंगाल के सांस्कृतिक विभाजन को कभी स्वीकार नहीं किया। आरक्षण के खिलाफ आंदोलन के नाम पर तोड़फोड़, आगजनी और हिंसा की घटनाओं में जिन निर्दोष हिंदुओं एवं अन्य अल्पसंख्यकों के जानमाल का नुकसान हुआ, उस पर अंतरिम सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। बांग्लादेश के अल्पसंख्यक संगठन अपने घरों और मंदिरों पर हमलों की जांच के लिए अल्पसंख्यक आयोग का गठन करने की मांग कर रहे हैं। इस पर अंतरिम सरकार और उसके मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस ने चुप्पी ओढ़ रखी है। इससे साफ है कि अंतरिम सरकार इस्लामी कट्टरपंथियों के दबाव में है।

अल्पसंख्यकों पर हमले इसलिए नहीं रुक रहे हैं, क्योंकि हमलावरों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। कार्रवाई न होने से ही हमलावर भयमुक्त हैं। इसके चलते ही बांग्लादेश के अल्पसंख्यक अब संगठित हो रहे हैं। उन्होंने बांग्लादेश जातीय हिंदू महाजोट, हिंदू बौद्ध क्रिश्चियन एकता परिषद और अल्पसंख्यक अधिकार आंदोलन नामक संगठन बनाए हैं। ये संगठन अल्पसंख्यकों के आत्मविश्वास को बढ़ाने का यत्न कर रहे हैं और अल्पसंख्यकों के लिए अलग मंत्रालय बनाने, संसद में अपने लिए सीटें आरक्षित करने और हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम को बदलने की मांग कर रहे हैं।

अपनी सुरक्षा की गुहार लगाते बंगलादेशी हिंदू। फाइल

बांग्लादेश की कुल आबादी में करीब आठ प्रतिशत अल्पसंख्यक हैं। इनमें अधिकतर हिंदू हैं। हसीना सरकार ने जब अल्पसंख्यकों के हितों पर ध्यान देना प्रारंभ किया था तो कट्टरपंथियों ने यह कहकर आलोचना शुरू की थी कि अल्पसंख्यक नौकरियों पर कब्जा कर रहे हैं। इस दुष्प्रचार ने भी बांग्लादेश के कट्टरपंथियों को हसीना विरोधी माहौल बनाने में मदद पहुंचाई। अवामी लीग में हिंदुओं का बेहतर प्रतिनिधित्व है। वर्तमान में जहां शेख हसीना के देश से बाहर होने के कारण अवामी लीग के समर्थकों का मनोबल गिरा हुआ है, वहीं ढाका की सड़कें बीएनपी और जमात ए इस्लामी के बैनरों से अटी पड़ी हैं। बीएनपी और जमात द्वारा रैलियां की जा रही हैं, किंतु उनमें आम बांग्लादेशी अधिक संख्या में नहीं जुट रहे हैं। मैं इसकी भी अनदेखी नहीं कर सका कि ढाका की दीवारों पर शेख हसीना के लिए गाली-गलौज की भाषा में आपत्तिजनक नारे लिखे गए हैं। अवामी लीग के खिलाफ माहौल बनाए जाने के बावजूद अल्पसंख्यकों को भरोसा है कि संसदीय चुनाव के बाद बांग्लादेश कट्टरपंथियों के हाथ में नहीं जाएगा और उदार सरकार सत्ता में आएगी, जो अल्पसंख्यकों के प्रति सहिष्णु रहेगी, लेकिन यह भी सच है कि वहां कट्टरपंथ बढ़ता दिख रहा है। बांग्लादेश को पूर्ण इस्लामी राष्ट्र बनाने की मांग लगातार हो रही है। कुछ कट्टरपंथी तो शरिया लागू करने की भी मांग कर रहे हैं।

बांग्लादेश के अल्पसंख्यक भारत से आस लगाए बैठे हैं। उन्हें लगता है मोदी सरकार उनकी सुरक्षा के लिए प्रयास करेगी। बांग्लादेशी अल्पसंख्यकों को भरोसा है कि शेख हसीना की सुरक्षा भी भारत सरकार हर कीमत पर करेगी और स्थिति सामान्य होने पर हसीना बांग्लादेश लौटेंगी। वे भारत के विपक्षी दलों के रवैये से तो निराश हैं, लेकिन उन्होंने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से उम्मीद पाल रखी है, जिन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की कड़ी निंदा की थी। ट्रंप के वक्तव्य को बांग्लादेश की अंतरिम सरकार की आलोचना के रूप में देखा गया। ध्यान रहे कि ट्रंप के साथ मोहम्मद यूनुस के संबंध सामान्य नहीं हैं। जब 2016 में ट्रंप राष्ट्रपति बने थे तो यूनुस ने कहा था कि ट्रंप की जीत एक सूर्यग्रहण और काले दिनों की तरह है। यूनुस की निकटता डेमोक्रेट्स से है। माना जाता है कि बाइडन प्रशासन और हिलेरी क्लिंटन की वजह से ही यूनुस अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार की भूमिका में आए। जो भी हो, वहां के प्रबुद्धजन यह सवाल कर रहे हैं कि आखिर यूनुस किसके सलाहकार हैं, क्योंकि देश में कोई प्रधानमंत्री तो है नहीं और राष्ट्रपति को शक्तियां नहीं प्राप्त हैं। जाहिर है कि सेना पर्दे के पीछे से अंतरिम सरकार चला रही है। अंतरिम सरकार अभी तक यह बताने की स्थिति में नहीं कि बांग्लादेश में संसदीय चुनाव कब होंगे और क्या चुनाव में अवामी लीग को हिस्सा लेने दिया जाएगा? इसके कारण भी वहां बेचैनी बढ़ रही है।

(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

## प्रकाश पर्व

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक गुरु को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यहां तक कि सभी धर्मों में पूर्ण गुरु को परमात्मा के समान माना गया है। आज गुरु नानक देव जी महाराज की जयंती के अवसर पर प्रकाश पर्व मनाया जा रहा है। उनके मुख्य उपदेशों में 'किरत करो, नाम जपो और बंड छको' प्रमुख हैं। इसका तात्पर्य है कि मनुष्य अपनी मेहनत की कमाई करता हुआ प्रभु का सुमिरन करे और मिल-बांटकर खाए। गुरु नानक देव जी इस संसार के बारे में कहते हैं, 'नानक दुखिया सब संसार।' यानी इस संसार में हरेक व्यक्ति दुखों से घिरा हुआ है। कोई न कोई दुख सबको लगा हुआ है। अगर देखें तो जब समस्या आती है तभी हम प्रभु को याद करते हैं और जब सब कुछ ठीक हो जाता है, फिर हम अपने कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं। दुख और सुख का यह चक्र हमारे जीवन में चलता रहता है।

सवाल है हम सदा-सदा के लिए सुख कैसे पा सकते हैं? इस बारे में परम संत कृपाल सिंह जी महाराज अक्सर कहते थे कि 'सो सुखिया जो नाम आधार।' यानी जो व्यक्ति पिता-परमेश्वर के नाम के साथ जुड़ गया वही सुखी है। इस पर गुरु नानक देव जी ने कहा है कि 'नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।' यानी जो नाम की खुमारी है, जो प्रभु का अमृत हमारे अंदर बरस रहा है, जब ध्यान-अभ्यास द्वारा हम अपने अंतस में उसका अनुभव करते हैं तो उसका आनंद सदैव हमारे साथ रहता है। जब हमारा आत्मा यह अनुभव करता है तो उसका मिलाप पिता-परमेश्वर से हो जाता है। गुरु नानक देव जी के अनुसार हम सब एक ही पिता-परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं। इसलिए हम प्रेमपूर्वक रहें और एक-दूसरे की मदद करें। ऐसा करने पर हम अपने भीतर प्रभु के प्रेम का अनुभव करेंगे। इससे हमें जीवन जीने की सही राह मिलेगी। गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं को अपने जीवन में ढालें और उन पर अमल करें।

संत राजिंदर सिंह जी महाराज

# रोजगार से सशक्त बनेगी महिला

सुनीता मिश्रा

**महाकुंभ को प्लास्टिक मुक्त रखने के लिए महिलाओं से करोड़ों दोने-पत्तल एवं कुल्हड़ तैयार कराने का लक्ष्य रखा गया है**

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में जनवरी 2025 से महाकुंभ की शुरुआत होगी। इसके तहत यूपी, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ एवं उत्तराखंड के 86 जिलों की 14 हजार महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ीं लगभग सवा लाख महिलाओं से पत्तों के दोने-पत्तल, कुल्हड़, जूट बैग, कपड़े के थैले बनवाए जा रहे हैं। महाकुंभ को प्लास्टिक मुक्त रखने के लिए 60 करोड़ दोने-पत्तल एवं कुल्हड़ तैयार कराने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए शहर में विशेष दुकानें बिक्री के लिए खोली जाएंगी।

विकास योजनाओं में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए मोदी सरकार प्रयासरत है। इसी उद्देश्य के साथ इस वर्ष बजट में लड़कियों एवं महिलाओं को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं के लिए तीन लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए, ताकि इस राशि का उपयोग उनके कौशल विकास कार्यक्रम, स्वयं सहायता समूहों के लिए बाजार तक पहुंच को सक्षम बनाने और उन्हें रोजगार देने में हो सके। वैसे भारत की कामकाजी आबादी में महिलाओं की हिस्सेदारी अभी अपेक्षित स्तर पर नहीं है, लेकिन उन्हें अवसर मिले तो वे स्वयं को सिद्ध करने में पूरी तरह सक्षम हैं। देवें डेयरी उद्योग में 70 प्रतिशत कामकाजी आबादी महिलाओं की है। यह उनकी मेहनत का परिणाम है, जिसकी वजह से भारत में डेरी उद्योग प्रतिवर्ष छह प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रहा है। यह तो हम सभी जानते हैं कि डेरी क्षेत्र के अलावा देश की महिलाएं हर क्षेत्र में आगे निकल रही हैं। कामकाजी आबादी में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने का विषय लंबे समय से चर्चा में है, परंतु इसके लिए उचित परिवेश का निर्माण आवश्यक है।

प्लास्टिक के पत्तल, दोने और गिलास आदि का उपयोग करने से पर्यावरण को काफी नुकसान होता है। इसके विकल्प में महाकुंभ में पत्तों के पत्तल, दोने और कुल्हड़ को स्वच्छकर वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के साथ ही लाखों महिलाओं को रोजगार भी दिया जा रहा है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश की महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर 2017-18 में 23.3 प्रतिशत से बढ़कर 2022-23 में 37 प्रतिशत हो गई। यदि भारत को विकसित राष्ट्र बनने का सपना पूरा करना है तो कार्यबल में आधी आबादी की भागीदारी बढ़ानी होगी। आत्मनिर्भर महिलाएं घर और बाहर दोनों ही जगह निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं। आर्थिक रूप से मजबूत महिलाएं चुप रहकर घरेलू हिंसा भी नहीं सहती हैं। ऐसे में स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं लाखों महिलाओं को रोजगार देकर उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास सराहनीय है। इससे ज्यादा से ज्यादा महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से प्रेरित होकर उनके साथ जुड़ेंगी और अपने राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने के लिए तत्पर होंगी।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

### भारतीयता का सम्मान करे एएमयू

'एएमयू पर एक और फैसले की प्रतीक्षा' शीर्षक से लिखे आलेख में बलबीर पुंज ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान संस्थान के संस्थापक सर सैयद अहमद खान की भूमिका का ही विस्तृत वर्णन नहीं किया है, अपितु विश्वविद्यालय के स्थापना काल से इसकी गतिविधियों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। भारत भूमि पर स्थापित कोई भी संस्थान सरकार द्वारा बिना पीषित हो या निजी संस्थान हो, उसे भारतीयता का सम्मान करना ही चाहिए। सबसे अहम बात यह है कि भारतीयता के अंतर्गत संविधान का सम्मान भी निहित है। आरक्षण संविधान का अभिन्न अंग है। ऐसे में अल्पसंख्यक संस्थान होने के नाम पर या सरकार द्वारा वित्त पोषित न होने के कारण कोई भी संस्था संवैधानिक नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकती है। ऐसे में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के आधारभूत चिंतन में उन मनीषियों की विचारधारा समाहित होनी चाहिए, जिनका मजहब इस्लाम था, पर वे राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित रहे, जिसमें मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे कुछ स्वाधीनता सेनानी थे। वहीं स्वाधीनता के बाद भी ऐसे राष्ट्रवादी मुस्लिम नेताओं, बुद्धिजीवियों (यथा पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम सरीखे), आमजनों की कमी नहीं है, जो संभवतः एएमयू के क्रियाकलाप एवं उनके संस्थापकों से असहमति रखते होंगे। लिहाजा समय की मांग है कि इसके आधारभूत चिंतन में परिवर्तन आए। इसका वास्तविक पंथनिरपेक्ष स्वरूप बहाल होना चाहिए।

mukeshkr.m7542@gmail.com

## मेलबाक्स

### ट्रंप के आने से हानि भी

अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए डोनाल्ड ट्रंप के विजयी होने पर भारत में अत्यधिक खुशी मनाई गई। कहा गया कि ट्रंप भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अच्छे मित्र हैं, जिससे दोनों राष्ट्रों में संबंध और प्रगाढ़ होंगे। जिसका आर्थिक लाभ भारत को मिल सकता है। पर ट्रंप के जीतने से डालर मजबूत हुआ है। उसकी मजबूती से रुपया सर्वाधिक निम्न स्तर 84.40 पर पहुंच गया है। भारत में होने वाला विदेशी निवेश यहां से स्थानांतरित होकर अमेरिका जा रहा है। उत्पादन लागत बढ़ने से मूल्य वृद्धि के कारण निर्यात में कमी आएगी। खाद एवं पेट्रोल का आयात बिल भी बढ़ जाएगा। एक तरफ ट्रंप की जीत के कारण डालर मजबूत हो रहा है तो दूसरी ओर भारत में बढ़ती महंगाई ने स्थिति को 'करेला फिर नीम चढ़ा' वाली स्थिति में पहुंचा दिया है। बढ़ती महंगाई के कारण रिजर्व बैंक अपनी ब्याज दर में कमी भी नहीं कर पाएगा।

धर्मेंद्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

### बुलडोजर पर अदालती आदेश

सुप्रीम कोर्ट ने अवैध निर्माण को हटाने के लिए विभिन्न राज्यों में की गई बुलडोजर कार्रवाई को लेकर सख्त फैसला सुनाया है। कहा है कि इस आधार पर किसी का घर नहीं गिराया जा सकता कि वह दोषी है या अपराधी है। अदालत का यह भी कहना है कि बिना सूचना के सरकारें किसी की संपत्ति नहीं गिरा सकती। हालांकि सरकारें नियमों के तहत ही करवाई करती हैं। पहले नोटिस दिया जाता है, फिर रिमाइंडर भेजे जाते हैं, फिर खाली करने के लिए टाइम दिया जाता और जब आरोपित इनकी परवाह नहीं करता, तब कोई कड़ी कार्रवाई की जाती है। सुप्रीम कोर्ट का यह भी कहना है कि सरकार को प्रभावित पक्ष को समय देना होगा, ताकि वह उसके ध्वस्तीकरण के फैसले को अदालत में चुनौती दे सके। जाहिर है अब अवैध निर्माण करने वाले लोग कोर्ट में जाएंगे और जब तक वह फैसला न देग तब तक वे सुरक्षित रहेंगे। अब हम जानते हैं कि कोर्ट में फैसले आने में बरसों लग जाते हैं। परिणामस्वरूप अवैध निर्माण के ध्वस्तीकरण की कार्रवाई रुकी रहेगी। क्या ऐसा करके कोर्ट अवैध निर्माण करने वालों को संरक्षण प्रदान नहीं कर रहा है? देश में लाखों एकड़ सरकारी जमीन पर लोगों ने कब्जा कर रखा है। सालों से रह रहे हैं। तात्कालीन सरकारों ने तब आंख, कान, मुंह बंद कर रखा था। ऐसे में तो उनको हटाना कठिन हो जाएगा।

चंद्र प्रकाश शर्मा, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

**174** अब डालर की मदद दी है अमेरिका ने यूक्रेन को, फरवरी, 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध के आरंभ होने के बाद से सितंबर, 2024 तक, जबकि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि पद की शपथ लेने के बाद वह इस मदद को रोक देंगे।

जयप्रकाश रंजन
jpranjan@del.jagran.com

आजकल

# ट्रंप की भावी नीतियों के प्रति भारत की तैयारी

**डोनाल्ड ट्रंप एक बार फिर चुनाव जीत चुके हैं और जनवरी में वह दोबारा अमेरिका के राष्ट्रपति का पद संभालेंगे। अपनी भावी सरकार की नीतियों को लेकर हाल ही में उन्होंने जो संकेत दिए हैं, वे केवल घरेलू राजनीति में ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी दूरगामी असर डालने वाले हो सकते हैं। उनका एजेंडा स्पष्ट दिख रहा है कि अमेरिका में अभी तक जैसा चल रहा था, वैसा अब नहीं चलेगा। यह भी तय है कि इस 'ट्रंप मूवमेंट' से भारत भी काफी हद तक प्रभावित होने जा रहा है। ऐसे में डोनाल्ड ट्रंप की भावी नीतियों का सामना करने के लिए भारत कितना तैयार है, हमें इस बारे में भी विचार करना होगा**

डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिकी राष्ट्रपति चुने जाने से वैश्विक परिदृश्य में एक बड़े बदलाव की उम्मीद की जा रही है। फाइल

वर्ष 2016 में डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति बन चुके थे। सत्ता में आने के बाद उनकी तरफ से कुछ निर्णय हुए थे जो अमेरिकी राजनीति में अपारंपरिक माने जा सकते हैं। कारोबारी शुल्क के मुद्दे पर भारत के विरुद्ध भी कई बार उनके बयान आ चुके थे। एक अनौपचारिक पत्रकार चर्चा के दौरान तत्कालीन वित्त मंत्री स्वर्गीय अरुण जेटली से ट्रंप की नीतियों को लेकर जब सवाल पूछा था तो उनका जवाब था, 'वह राजनेता बहुत खतरनाक होता है जो चुनाव में किए गए सारे वादों को सरकार में आने के बाद अमल में लाने की कोशिश करे।' परंतु डोनाल्ड ट्रंप की स्थिति को देखकर ऐसा लगता है कि वह सरकार चलाने नहीं, बल्कि एक आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए सत्ता में आ रहे हैं, जैसा कि वक्त उनके कई समर्थक भी करते रहते हैं। 78 वर्षीय ट्रंप 82 वर्ष तक सत्ता में रहेंगे और इतिहास में अपनी छवि छोड़ने को वह बेताब नजर आते हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव प्रचार ने इस बार साफ कर दिया है कि ट्रंप केवल एक आम रिपब्लिकन उम्मीदवार नहीं थे, बल्कि यह अमेरिका में दो बेहद विपरीत विचारधाराओं की लड़ाई को महत्वपूर्ण दिशा देने को मैदान में थे। चाहे राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा हो या आम जनता को सीधे तौर पर प्रभावित करने वाले शिक्षा व स्वास्थ्य जैसे क्षेत्र का मुद्दा हो, ट्रंप ने पारंपरिक नीतियों को तिलांजलि देकर उनकी जगह नई नीतियों को लाने का वादा किया था। चुनाव जीतने के बाद उन्होंने पक्के संकेत दिए हैं कि वह अपने वादों को लेकर गंभीर हैं। अमेरिका की शिक्षा व्यवस्था में केंद्र की भूमिका को पूरी तरह से खत्म करके इसकी पूरी जिम्मेदारी राज्यों के हाथ में देने की उनकी घोषणा को एक शुरूआत माना जा रहा है। अब सभी की नजर गैर-कानूनी तौर पर अमेरिका में घुसपैठ करने वालों पर रोक लगाने, मैन्यूफैक्चरिंग उत्पादों पर चीन पर निर्भरता को कम करने, दूसरे देशों के आयात की महंगा करके अमेरिका में विनिर्माण को बढ़ावा देने, पारंपरिक ऊर्जा की खपत एवं उत्पादन को महत्व देने, क्रेडिट कार्ड कंपनियों के लिए ब्याज लगाने की अधिकतम सीमा घोषित करने, यूक्रेन-रूस युद्ध और पश्चिम एशिया के वर्तमान हालात को लेकर उनकी नीतियों पर है। इसमें से कुछ नीतियां सीधे तौर पर भारत की कूटनीति व अर्थनीति की परीक्षा लेंगी तो कुछ परोक्ष तौर पर और कुछ नीतियों का असर आने में वक्त लगेगा।

**यूक्रेन को मदद पर लगाम :** इस संदर्भ में यूक्रेन-रूस युद्ध स्थिति का आकलन करें तो ट्रंप ने कहा है कि वह केवल एक दिन में युद्ध को रुकवा देंगे। इसको विस्तार से तो उन्होंने नहीं बताया है, लेकिन माना जा रहा है कि वह यूक्रेन को अमेरिका से मिल रही मदद पर तत्काल रोक लगाएंगे। फरवरी, 2022 में युद्ध की शुरुआत होने के बाद से सितंबर, 2024 तक अमेरिका ने यूक्रेन को कुल 174 अरब डालर की मदद दी है और ट्रंप इसके पूरी तरफ से खिलाफ रहे हैं। ट्रंप स्वयं 'माग' यानी 'मेक अमेरिका ग्रेट एगेन' के नारे से अपने पक्ष में लहर बनाने में सफल रहे, लेकिन यूक्रेन से समर्थन वापस लेने को रूस व चीन के गठबंधन की जीत के तौर पर भी देखा जाएगा। यह माना जा रहा है कि रूस को लेकर ट्रंप का रवैया नरम रहेगा, क्योंकि उनका पूरा ध्यान चीन पर रहेगा। यह भारत के लिए अच्छी स्थिति होगी। अमेरिकी दबाव में रूस के साथ अपने संबंधों को भारत वैसी दिशा नहीं दे पा रहा है जैसा वह चाहता है, खास तौर पर रक्षा व सुरक्षा क्षेत्र में। एस-400 एंटी मिसाइल सिस्टम की आपूर्ति का रुकना इसका एक उदाहरण है। तो क्या ट्रंप अपने अभिन्न मित्र भारत के पीएम को रूस के साथ बेलगाम कारोबार करने, रक्षा संबंध प्रगढ़ करने या खुल कर तेल-गैस खरीदने की छूट देंगे। शायद नहीं, क्योंकि वह अमेरिका को सबसे बड़े तेल उत्पादक बनाने की भी बात कर रहे हैं और भारत से बड़ा अमेरिकी तेल का खरीदार नहीं मिलेगा। ट्रंप के साथ अमेरिका का पारंपरिक ऊर्जा उद्योग है। ट्रंप के कार्यकाल में ही पहली बार भारत ने अमेरिका से क्रूड की खरीद की थी।

**विनिर्माण में आगे बढ़ने की उम्मीद :** ट्रंप शासन में भारत व रूस की ऊर्जा साझेदारी की परीक्षा होगी। ट्रंप भारत को हर तरह के अत्याधुनिक हथियार व सैन्य साजो-सामान की आपूर्ति करने को तैयार हैं। वह अपने पहले कार्यकाल में ही भारत पर दबाव बनाने की कोशिश की थी कि रूस से एस-400 की जगह अमेरिकी एंटी मिसाइल सिस्टम खरीदा जाए। चीन को लेकर ट्रंप बेहद आक्रामक नीति का समर्थन करते हैं। वह चाहे कारोबार की दुनिया हो या हिंद प्रशांत महासागर का क्षेत्र। इन दोनों क्षेत्रों में ट्रंप की नीतियों का असर भारत पर होगा। ट्रंप चीन समेत सभी देशों से होने वाले आयातों को महंगा करके, अमेरिका निर्मित उत्पादों की बढ़ावा देने के पक्षधर हैं। हाल ही में जारी कई रिपोर्ट बताती हैं कि इसका दीर्घकालिक अवधि में भारत को लाभ होगा, क्योंकि अमेरिकी किसी भी सूरत में चीन से होने वाले सारे आयातों को खत्म नहीं कर सकता। ऐसे में उसे दूसरे देशों से भी समान खरीदना होगा। यहां भारत हो चीन का एक बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। वैसे ट्रंप भारत सरकार की आर्थिक नीतियों, खास तौर पर अमेरिकी उत्पादों पर ज्यादा शुल्क लगाने की नीति के भी कट्टर विरोधी रहे हैं।

यहां सवाल यह है कि क्या भारत का मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर चीन का विकल्प बनने को तैयार है? यहां कुछ बातों को ध्यान में रखना होगा। भारत केवल श्रम लागत के मामले में चीन से सस्ता है, नहीं तो बिजली-पानी-कारोबार की सहूलियत, कच्चे माल पर निर्भरता आदि में काफी पीछे है। चीन उत्पादकता के मामले में पांच गुणा ज्यादा आगे है। भारत का मैन्यूफैक्चरिंग अधिकांश मामले में चीन से आयातित कच्चे माल पर निर्भर है। सफ है कि भारत की सरकार को बगैर किसी देरी के इस बात की तैयारी करनी होगी कि वह ट्रंप की भावी नीतियों का फायदा उठाने की स्थिति में हो।

**हिंद प्रशांत क्षेत्र :** अब इसी तरह से अगर हिंद प्रशांत क्षेत्र की स्थिति का आकलन करे तो ट्रंप प्रशासन अमेरिका, भारत, जापान व आस्ट्रेलिया के संगठन क्वाड को लेकर ज्यादा सक्रियता दिखा सकता है। भारत को अमेरिका की अत्याधुनिक रक्षा तकनीक हस्तांतरित करने की राह में जो रोड़े हैं, उन्हें भी ट्रंप तेजी से हटा सकते हैं। इससे दोनों देशों के बीच रक्षा व सुरक्षा क्षेत्र में पहले से ही प्रगाढ़ हो रहे संबंधों को और ठोस करेगा। कई अमेरिकी रणनीतिकार भारत को अमेरिका के लिए सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार मानते हैं। भारत के लिए यह भी संतोष की बात होगी कि भारत के रणनीतिक हितों पर सकारात्मक विचार रखने वाले माइक वाल्ट्ज को ट्रंप ने अपना नया राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया है। मगर यहां सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या भारत क्वाड में उस तरह की भागीदारी चाहेगा जैसा अमेरिका चाहता है। हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामक गतिविधियों को रोकने में भारत क्वाड के साथ रहेगा, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह चीन के साथ अपने द्विपक्षीय रिश्ते को केवल क्वाड से परिभाषित करना चाहेगा। हाल ही में भारत व चीन ने लगभग साढ़े तीन साल पुरानी सीमा विवाद का समाधान करने में सफलता पाई है। चीन के साथ रिश्तों में हो रहे सुधार की प्रक्रिया को शायद ही भारत किसी और कारण से तोड़ना चाहेगा।

## वैश्विक शांति के लिए मंथन

डा. शशांक द्विवेदी

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से विश्व को बचाने के लिए संयुक्त राष्ट्र का जलवायु सम्मेलन कन्फ्रेंस आफ पार्टीज यानी काप-29 अजरबैजान की राजधानी बाकू में हो रहा है। इसमें जलवायु परिवर्तन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील देशों के लिए जलवायु वित्त का नया लक्ष्य तय करने पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया जाएगा। साथ ही, इसमें पेरिस समझौते के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए वैश्विक तापमान की वृद्धि को सीमित करने और विकासशील देशों के लिए समर्थन जुटाने पर भी चर्चा की जाएगी। इस सम्मेलन की सफलता का सबसे बड़ा मापदंड यह होगा कि क्या एक ऐसे जलवायु वित्त लक्ष्य पर सहमति बनेगी, जो वास्तव में विकासशील देशों की आवश्यकताओं को पूरा करता हो।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने की दिशा में विकासशील देशों की राह में प्रमुख अवरोध वित्तीय संसाधनों का अभाव है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के बावजूद विकसित देशों का योगदान बहुत कम है। वर्ष 2009 के सम्मेलन में विकसित देशों द्वारा 2020 तक प्रतिवर्ष 100 अरब डालर की प्रतिबद्धता जताई गई थी, लेकिन यह लक्ष्य केवल एक बार 2022 में पूरा किया गया। भारत इस सम्मेलन में इस धनराशि को बढ़ाने की मांग करेगा। भारत ने विकसित देशों की ओर से विकासशील देशों के लिए प्रतिवर्ष एक लाख करोड़ डालर का प्रस्ताव किया है, जबकि अन्य देशों एवं ग्रुप ने इस राशि को 1.3 लाख करोड़ डालर की मांग की है। 2022 में विकसित देशों ने 115.9 अरब डालर उपलब्ध कराए। हालांकि यह अभी भी कम है, क्योंकि अगर विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन से जुड़े लक्ष्य हासिल करने हैं तो 2030 तक हर साल दो ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर राशि की आवश्यकता होगी। कर्ज का अंबार विकासशील देशों की राह में एक और बाधा बना हुआ है। तमाम विकासशील देश कर्ज के बोझ से ऐसे कराह रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए उनके पास संसाधन बहुत सीमित हो जाते हैं। वर्ष 2011 से 2022 के बीच उन देशों की संख्या 22 से बढ़कर 59 हो गई, जिनका कर्ज उनकी जीडीपी के 60 प्रतिशत के स्तर को पार कर गया। इसमें तीसरी बाधा निजी पूंजी से जुड़ी सीमित पहुंच की है। चूंकि जलवायु परिवर्तन से जुड़े उपक्रमों में प्रतिफल कम होने के साथ ही कई जोखिम भी जुड़े होते हैं तो निजी निवेशक अक्सर उनमें निवेश से कतराते हैं। यह एक बड़ी चुनौती है। **(लेखक पर्यावरण विज्ञान के जानकार हैं)**

खरी-खरी

## मनमुताबिक सरकार

पूरन सरमा

गरीब को थाली में भोजन परोस कर लाने वाले गिरोह सक्रिय हो गए हैं। अब झुंड के झुंड नेताओं के गरीबों के घरों पर वोटों के लिए दस्तक दे रहे हैं। विकास की बातें फिर वे ही लोग कर रहे हैं, जिन्होंने गरीब को और अधिक गरीब बनाया था। अपना-अपना वोट बैंक सुनिश्चित करने की चालें और जनता की आंखों में धूल झोंकने का तमाशा शुरू हो गया है। चुनावी आगाज हो गया है। उन्हें केवल दिल्ली चाहिए, ताकि वे मुखिया बनकर देश को बागडोर सँभाले तथा देश को अपने ढंग से हांक सके। दिल्ली की गद्दी के लिए घमासान फिर शुरू हुआ है। अब तो सबको दरकिनार करके वे आह्वान करने की मुद्रा में आ गए हैं। उनके आह्वान पर वोट न्यौछावर होंगे या नहीं, यह तो समय बताएगा, लेकिन वे देश पर इस समय पूरी तरह फना हैं। वे जनता से कहलवा रहे हैं 'यस वी कैन, यस वी विल डू'। देशभक्ति उनकी रग-रग में समा गई है। कुछ भी कहो, अंदाज उनका अपना मौलिक है। दुश्मनों को ललकारा तो केंद्र की सत्तारूढ़ सरकार को बुद्ध मरने के लिए कहा। उनकी नीतियां विकास की हैं। बिन-विकास के समस्याओं का समाधान संभव नहीं।

यह घड़ी बड़ी अद्भुत है। वोटर की परेशानी यह है कि कहे किस ओर जाए। लुभावनी बातें दोनों ओर हैं। मुझे लगता है एक बार फिर निर्दलियों की पौ बारह होगी, क्योंकि इनके नारों में केवल छलावा और धोखा है। एक पार्टी का राज मिल जाएगा, कहना कठिन है। वैसे वे एक पार्टी से मुक्त भारत का सपना देख रहे हैं। उनका सपना यही तो है कि केवल उनकी पार्टी सत्ता में हो।

वे तालियां बजा रहे हैं, हाथ उठवा रहे हैं और सामने बैठे हजारों-लाखों को बेवकूफ समझने की भूल भी कर रहे हैं। मन करता है ऐसी कायापलट करने वाली सरकार तो अगले वर्ष की एवज इसी वर्ष बन जाए तो मजा आ जाए। उन्हें वोट के अलावा कुछ नहीं चाहिए। बाकी चीजें तो इसी भरोसे पर वे सब बटोर लेंगे। आंखें चुंधिया रही हैं। विकास का उजाला फैला हुआ दिखाई दे रहा है। दिक्कत एक ही दिखाई दे रही है कि उनकी टांग खींचने वालों को रोक लीजिए, वरना वे गिर जाएंगे और सरकार नहीं बना पाएंगे अपने मनमुताबिक।

पोस्ट

अगर अदालतें सही समय पर फैसला कर दें तो लोग बुलडोजर कार्रवाई को कभी भी समर्थन नहीं देंगे।
मुकेश पाठक@MukeshPathakji

दिल्ली में सांस लेने पर ऐसा लग रहा है कि जैसे कहीं अलाव जल रहा हो। अच्छी बात है कि दीवाली इस साल जल्दी निकल गई और उसे इसके लिए दोष नहीं दिया जा सकता। शुभांगी शर्मा@ItsShubhangi

हिमाचल की आइपीएस अधिकारी इल्मा अफरोज को छुट्टी पर क्यों भेजा गया है? क्योंकि एक विधायक के भ्रष्टाचार पर एक्शन लिया? ईमानदारी का यह इनाम? जो लड़की लड़े, उसके पर कतर दो? बाते बहुत हुईं, अब लड़िए इल्मा के लिए, अन्यथ कोई लड़ायी आगे नहीं आएगी।
ऋचा अनिरुद्ध@richaanirudh

अगर भारत ने अपना सोशल नेटवर्क प्लेटफार्म और इन्स्टेंट मैसेजिंग एप नहीं बनाया तो कुछ दशक बाद भारत का चुनाव भी अमेरिका से तय होगा। हालांकि बहुत से लोग मेड इन इंडिया के नाम पर दोयम दर्जे के प्रोडक्ट खाना चाहते हैं। एफडीआइ के जमाने में जनता भी प्रोडक्ट और प्राइस देखती है, कट्टी नहीं।
रंगनाथ सिंह@rangnathsingh_

जागरण जनमत

कल का परिणाम

**सुप्रीम कोर्ट के फैसले से अपराधियों के खिलाफ बुलडोजर का प्रयोग कठिन होगा?**

**आज का सवाल**

क्या भारत में भी सरकारी खर्चे घटाने के लिए डिपार्टमेंट आफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी यानी दक्षता मंत्रालय के गठन की आवश्यकता है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

जिनको भाती है नहीं बुलडोजर की चाल,
वे कागज पढ़कर करें फिर जोड़ें वे माल।
फिर जो है वे माल भूमि जो भी लूटेगा,
निश्चित ही घर-बार लुटेरे का टूटेगा।
बाबा जी के राज सदा डरना है उनको,
भारत का कानून समझना आता जिनको।
- ओमप्रकाश तिवारी

झारखंड डायरी

# चुनाव में हेमंत के सहारे पर टिकी कांग्रेस

प्रदीप सिंह
राज्य ब्यूरो प्रमुख, झारखंड

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी झारखंड में ताबड़तोड़ चुनावी रैलियां और रोड शो कर रहे हैं। गृह मंत्री अमित शाह से लेकर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत पार्टी के तमाम दिग्गज नेताओं ने यहां डेरा डाल रखा है। कुछ माह पहले पार्टी ने केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा को राज्य में भाजपा की चुनाव कमान सौंप दी थी। इसके मुकाबले झामुमो के कार्यकारी अध्यक्ष और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सामान्य तौर पर हर दिन तीन बड़ी रैलियां और रोड शो कर रहे हैं। उनकी पत्नी कल्पना सोरेन का भी जोरदार प्रचार अभियान चल रहा है, लेकिन चुनावी घमासान से कांग्रेस अलग-थलग दिख रही है। पार्टी ने मोर्चा के साथ मिलकर सीटें आपस में बांटी, लेकिन इनके प्रचार की भी जिम्मेदारी हेमंत-कल्पना के कंधे पर ही है।

भाजपा और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के शीर्ष नेतृत्व के मुकाबले कांग्रेस आलाकमान आधे-अधूरे मन से चुनावी समर में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। इसका उदाहरण है कि राहुल गांधी ने पहले चरण के चुनाव प्रचार में केवल दो बार राज्य का रुख किया। अनमने तरीके से मल्लिकार्जुन खरगे आए। पार्टी की तरफ से प्रचारकों का टोटा है। एक प्रकार से कांग्रेस के प्रदर्शन का पूरा दारोमदार भी क्षेत्रीय दल झारखंड मुक्ति मोर्चा के ही जिम्मे है। लोकसभा चुनाव में भी मोर्चा के कंधे पर सवार होकर कांग्रेस ने दो जनजातीय सुरक्षित सीटें जीतने में कामयाबी पाई तो इसकी बड़ी वजह यह थी कि मोर्चा का सहयोग उसे मिला। ठीक यही स्थिति विधानसभा चुनाव की भी है। शिथिल और निस्तेज नेतृत्व ने राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस को यहां क्षेत्रीय दल झारखंड मुक्ति मोर्चा के भरोसे लाकर खड़ा कर दिया है तो इसका दुष्परिणाम दोनों पर पड़ना स्वाभाविक है। दोनों दलों ने मिलकर पिछली बार सत्ता पर काबिज होने में कामयाबी पाई थी।

कांग्रेस प्रत्याशी रामचंद्र सिंह के समर्थन में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हेमंत सोरेन। फाइल

इस बार स्थिति बदली हुई है। मोर्चा के गठबंधन के मुकाबले भाजपा के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन राज्य में सत्ता में वापसी के लिए पूरा जोर लगा रहा है। इसकी बानगी है कि कद्दावर नेताओं की पूरी फौज यहां मौजूद है।

कांग्रेस के प्रदेश नेतृत्व की स्थिति और बिकट है। चुनाव के पहले प्रदेश अध्यक्ष बदलने के पीछे तर्क दिया गया कि इससे प्रभावी कुर्मी समुदाय के मतदाता आकर्षित हो सकते हैं, लेकिन इसका कोई असर नहीं दिख रहा है। ज्यादातर नेता अपने क्षेत्र में सिमटे हैं। जो चुनावी मैदान में हैं, उनका ध्यान पूरी तरह अपने क्षेत्र पर है। कद्दावर नेताओं में शुमार आलमगीर आलम जेल में हैं। चुनाव के मौके पर कई नेताओं ने दल से किनारा कर लिया, लेकिन उन्हें मनाने या रोक की रत्ती भर कोशिश नहीं की गई। जबकि इसके मुकाबले भाजपा में असंतोष को थामने के लिए युद्धस्तर पर कोशिशें हुईं। जहां से भी ऐसी सूचनाएं आईं, वहां बिना देरी किए नेताओं ने कूच किया। इस मिशन में ऊपर से लेकर नीचे के नेताओं को लगाया गया। जहां आवश्यकता हुई, वहां शिवराज सिंह चौहान और हिमंत बिस्व सरमा मनाने के लिए पहुंच गए। कई नेताओं की वापसी हुई और उन्हें तत्काल जिम्मेदारी भी दे गई। चुनाव में जीत के लिए ऐसे प्रयत्न करती कांग्रेस कहीं नजर ही नहीं आ रही है। प्रचार के मोर्चे पर लगे राहुल गांधी घिसी-पिटी बातें कर रहे हैं।

कहा जा सकता है कि हरियाणा के हालिया विधानसभा चुनाव की हार से भी कांग्रेसियों ने सीख नहीं ली। वे कोई नई बातें नहीं कर रहे, जबकि भाजपा का आक्रामक अभियान चल रहा है। आरक्षण, जातीय जनगणना से आगे राहुल गांधी की गाड़ी आगे बढ़ ही नहीं रही है। साथी दलों के साथ बेहतर समन्वय की भी कमी स्पष्ट झलक रही है। पहले कांग्रेस ने समेकित रूप से झारखंड मुक्ति मोर्चा के साथ घोषणापत्र जारी किया था। जब झामुमो ने अलग से अपना घोषणापत्र जारी किया तो अगले दिन कांग्रेस के दूसरी कतार के नेताओं ने आनन-फानन घोषणापत्र जारी कर आफत मोल ले ली। इसकी शिकायत चुनाव आयोग तक पहुंची है। आयोग ने इस पर संज्ञान लिया है, जिससे कांग्रेस की मुश्किल बढ़ सकती है।

कांग्रेस की कामचलाऊ मानसिकता से झामुमो के भीतर भी खलबली है, जो अपेक्षित चुनाव परिणाम नहीं आने पर बाहर निकल सकता है। वैसे भी चुनाव की अधिसूचना से पहले अपने सीएम चेहरे की बात कर कांग्रेस ने हेमंत को नराज कर दिया है। फिर सफाई देकर मामले को रफा-दफा किया गया। अब परिणाम पर सारा दारोमदार है। गठबंधन की सत्ता में वापसी हुई तो तालमेल आगे चल सकता है। यदि परिणाम विपरीत आए तो दोनों की राह अलग हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। ऐसे में कमजोर साथी को ढोने के बजाय झामुमो स्वयं को अधिकाधिक मजबूत बनाए रखने की भरसक कोशिश करेगा।

मंथन

# घुसपैठियों पर कसे शिकंजा

**भारत में बसे बांग्लादेशी घुसपैठियों को पकड़ने के लिए ईडी ने हाल में झारखंड और बंगाल में 17 स्थानों पर छापा मारा। लिहाजा देश में सभी घुसपैठियों पर शिकंजा कसा जाना चाहिए**

पूर्णिमा शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

हमारे देश में घुसपैठ की समस्या लंबे समय से जारी है। खासकर बांग्लादेश से होने वाला घुसपैठ भारत के लिए सिरदर्द साबित होता जा रहा है। हाल में इस पर केंद्रीय एजेंसियों ने कार्रवाई शुरू की है, परंतु इसमें जो तेजी होनी चाहिए, उसका फिलहाल अभाव है। घुसपैठियों के भारत में प्रवेश करने की आशंकाओं के बीच पहले भी कई केंद्रीय एजेंसियां इस संबंध में अभियान छेड़ चुकी हैं। वैसे इस समस्या को जिस गंभीरता से लिया जाना चाहिए, उस तरीके से अब तक इसे नहीं लिया गया है और न ही कार्रवाई हो पाई है। संभवतः यही कारण है कि एक हालिया शोधपत्र से यह सामने आया है कि भारत में यदि एक बांग्लादेशी घुसपैठिया पकड़ा जाता है तो चार गायब हो जाते हैं।

वर्ष 2016 में राज्यसभा में सरकार ने कहा था कि भारत में लगभग दो करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठिए हो सकते हैं। परंतु जिस प्रकार से देश के तमाम शहरों में बांग्लादेश के भारतीय सीमावर्ती क्षेत्रों के लोग रहते हैं, उस आधार पर एक आशंका यह भी है कि भारत में अवैध बांग्लादेशी लोगों की संख्या पांच करोड़ से भी अधिक हो सकती है। क्या वाकई मालदा और कूचबिहार से एक ही समुदाय के लाखों निवासी दिल्ली और आसपास के इलाकों में घरों में काम कर रहे हैं? तो क्या मालदा और कूचबिहार अब खाली हो चुके हैं?

हाल ही में नई दिल्ली के हजरत निजामुद्दीन थाने से जुड़ी एक रिपोर्ट सामने आई थी। इस रिपोर्ट में बताया गया था कि इस साल जंगपुरा एक्सटेंशन के अब तक केवल तीन लोगों ने ही अपने नौकरों का पुलिस सत्यापन करवाया, वहीं 2023 में यह आंकड़ा दो और 2022 में केवल एक था। यानी दिल्ली के पाश इलाकों में भी लोग कोताही बरतते हैं। जबकि दिल्ली के कई इलाके ऐसे हैं, जहां इन घुसपैठियों की वास्तविक संख्या कहीं बहुत अधिक मानी जा रही है। बिना सत्यापन के यदि ये लोग हमारे देश में रह रहे हैं, तो इसके लिए जिम्मेदार हमलोग स्वयं हैं।

**देश विरोधी ताकतें :** भारत और बांग्लादेश के बीच लगभग 4,100 किमी की सीमा है, जिसके अधिकांश हिस्से में बाड़बंदी की जा चुकी है। जहां बाड़बंदी नहीं है, वहां भी प्राकृतिक अवरोध के कारण घुसपैठ करना बहुत आसान नहीं है। इसके बावजूद घुसपैठ का होना कई सवाल खड़े करता है। घुसपैठियों का भारत में होना हमारे इंफ्रास्ट्रक्चर, सरकारी अस्पतालों, शैक्षणिक संस्थानों आदि पर भारी बोझ है। जो संसाधन भारतीय नागरिकों के लिए है, उनका उपयोग ये घुसपैठिए कर रहे हैं। ये घुसपैठिए हमारी सुरक्षा के लिए भी बड़ा खतरा हैं। देश विरोधी ताकतें इनका उपयोग भारत में आंतरिक गड़बड़ियां पैदा करने में करती हैं।

**डिजिटल सत्यापन :** यह भी देखा गया है कि घुसपैठियों के कुछ पैटर्न होते हैं। जैसे जानबूझकर ये कुछ छोटे-मोटे अपराध करते हैं और जब मुकदमा चलता है, तो जमानत लेकर भारत में रुक जाते हैं। अधिकांश तो फर्जी दस्तावेजों के आधार पर राशनकार्ड एवं वोटरआइडी कार्ड तक बनवा लेते हैं। इनके माध्यम से ये हमारे संसाधनों को हथियाते हैं। ऐसे में हाल ही में झारखंड हाई कोर्ट ने आदेश जारी किया है कि आधार कार्ड, वोटर कार्ड आदि देने से पहले प्रशासन लैंड रिकार्ड्स चेक करे। पूरे देश में इस प्रक्रिया को अपनाया जाना चाहिए। यह कार्य अब मुश्किल भी नहीं है, क्योंकि सब कुछ डिजिटाइज हो चुका है।

बांग्लादेश सीमा पर बाड़बंदी के बावजूद बड़ी संख्या में घुसपैठिए भारत में आकर बस रहे हैं। फाइल

क्यों अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के मुद्दे को कुछ राजनीतिक दल सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश करते हैं, जबकि मुद्दा यह है कि कौन भारत का नागरिक है और कौन घुसपैठिया व विदेशी। वस्तुतः भारत-बांग्लादेश सीमा पर बाड़बंदी का बांग्लादेश लंबे समय तक विरोध करता रहा था। बांग्लादेश में बीते दिनों हुए तख्तापलट के बाद बांग्लादेश बार्डर गार्ड्स अब फिर से बीएसएफ (सीमा सुरक्षा बल) को सीमा पर बाड़बंदी करने से रोक रहे हैं। बाड़बंदी न होने से, न केवल घुसपैठ, बल्कि पशु-तस्करी, अवैध-व्यापार के अलावा सीमावर्ती क्षेत्रों में बसे लोग बांग्लादेशी अपराधियों का निशाना बनते हैं।

इतिहास गवाह है कि जब डेमोग्राफी बदलती है तो इलाके का माहौल भी बदल जाता है। असम में यही हुआ। असम के 28 हजार पोलिंग बूथ में से 19 हजार में डेमोग्राफी बदल चुकी है। इसका बड़ा कारण बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं। वर्ष 2005 में सुप्रीम कोर्ट ने आइएमडीटी एक्ट को रद करते हुए कहा कि लाखों अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों का आना असम राज्य पर आक्रमण था। इस कानून ने पूर्व में बांग्लादेशी प्रवासियों की असम में बसने में मदद की। यह एक्ट अवैध प्रवासियों की पहचान और उन्हें वापस भेजने में बड़ी रुकावट बना। असम के कई जिलों में मूल निवासी अल्पसंख्यक हो गए। ऐसे में इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए केंद्र समेत घुसपैठ से दुष्प्रभावित राज्यों की सरकारों को इस दिशा में पर्याप्त कदम उठाने की जरूरत है।

********

## झारखंड चुनाव

### पक्ष-विपक्ष के लिए अहम

**झारखंड** विधानसभा चुनाव 13 नवंबर को पहले चरण के मतदान के साथ शुरू हुए, जिसमें 15 जिलों की 43 सीटों पर वोटिंग हुई। यह चुनाव राज्य के राजनीतिक परिदृश्य में एक निर्णायक क्षण है, जहां दो प्रमुख गठबंधन- भाजपा और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) और कांग्रेस के नेतृत्व वाला इंडिया ब्लॉक- विधानसभा पर नियंत्रण के लिए भीषण लड़ाई में उलझे हुए हैं। हाई-प्रोफाइल उम्मीदवारों, दबाव वाले मुद्दों और आदिवासी निर्वाचन क्षेत्रों पर ध्यान देने के साथ, दोनों खेमों के लिए दांव अविश्वसनीय रूप से ऊंचे हैं। 2000 में बिहार से अलग होकर बने झारखंड में विभिन्न राजनीतिक दलों के लिए युद्ध का मैदान रहा है, जिसमें भाजपा ऐतिहासिक रूप से राज्य पर हावी रही है। हालांकि, 2019 के पिछले विधानसभा चुनावों में, भाजपा ने सत्ता खो दी, कुल 81 में से केवल 25 सीटें हासिल करने में सफल रही। झामुमो सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, जिसने 30 सीटें जीतीं और बाद में कांग्रेस के साथ गठबंधन सरकार बनाई, जिसने 16 सीटें जीतीं इस गठबंधन ने जेएमएम के हेमंत सोरेन को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाया, जहां वे पिछले पांच सालों से सेवा दे रहे हैं। हालांकि, हेमंत सोरेन के कार्यकाल में उथल-पुथल रही है, जिसमें भ्रष्टाचार के एक मामले में प्रवर्तन निदेशालय द्वारा उनकी गिरफ्तारी के बाद पद से कुछ समय के लिए हटाया जाना भी शामिल है। इन

असफलताओं के बावजूद, सोरेन फिर से चुनाव के लिए भारतीय ब्लॉक की बोली का नेतृत्व करने के लिए एक नए अभियान के साथ राजनीतिक मंच पर लौट आए हैं।

चुनाव अभियान ने कई विवादास्पद मुद्दों को उजागर किया है। सबसे अधिक ध्रुवीकरण करने वाले विषयों में से एक बांग्लादेशी घुसपैठ रहा है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा, जो झारखंड में भाजपा के अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं, ने हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाले प्रशासन पर राजनीतिक लाभ के लिए बांग्लादेश से अवैध प्रवासन की सुविधा देने का आरोप लगाया है। जवाब में, सोरेन ने भाजपा पर कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व के समर्थन से राज्य में सांप्रदायिक कलह बोने का आरोप लगाया है। उनके जवाबी अभियान ने भाजपा की कथित विभाजनकारी राजनीति पर जोर देने और झारखंड के सांप्रदायिक सद्भाव और आदिवासी अधिकारों की रक्षा के लिए झामुमो के नेतृत्व वाले इंडिया ब्लॉक को स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया है। पहले चरण में प्रमुख राजनीतिक हस्तियों के साथ कई उच्च-दांव प्रतियोगिताएं हैं। इनमें से सरायकेला सीट है, जहां झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन, जो हाल ही में चार दशकों के बाद झामुमो छोड़कर भाजपा में शामिल हुए हैं, चुनाव लड़ेंगे। जमशेदपुर पूर्व में कांग्रेस के अजय कुमार का मुकाबला भाजपा की पूर्णिमा दास साहू से है। जमशेदपुर पश्चिम में कांग्रेस के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता का मुकाबला जद (यू) नेता सरयू रॉय से है, जिन्होंने 2019 में रघुबर दास को हराने के बाद प्रसिद्धि पाई थी, जब दास मुख्यमंत्री थे। भाजपा के लिए, झारखंड में नियंत्रण हासिल करना पूर्वी भारत में सत्ता को मजबूत करने की उनकी बड़ी राष्ट्रीय रणनीति में महत्वपूर्ण है, खासकर राज्य में उनके ऐतिहासिक प्रभुत्व को देखते हुए। अंततः, जमीनी स्तर पर मतदाताओं की भावना और जनजातीय निर्वाचन क्षेत्रों का प्रभाव ही झारखंड चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाने की संभावना है।

# कर सरलीकरण की अनिवार्यता

**कर व्यवस्था में स्पष्टता, दक्षता और निष्पक्षता लाने के लिए संरचनात्मक सुधार, कर दरों को सुव्यवस्थित करने और डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देने की तत्काल आवश्यकता है।**

**सुभाष चंद्र अग्रवाल**
(लेखक, आरटीआई कंसल्टेंट हैं)

भारतीय कर प्रणाली बेहद जटिल और पुरानी है, जिसकी जड़ छह दशक पुराने आयकर अधिनियम 1961 में है, जिसमें कई संशोधन हुए हैं। इन लगातार, टुकड़ों में किए गए समायोजनों ने एक जटिल कर संरचना बनाई है, जिससे करदाता और प्रशासक दोनों ही स्पष्टता की कमी से जूझ रहे हैं। इसी तरह, अप्रत्यक्ष करों को सुव्यवस्थित करने के लिए एक ऐतिहासिक सुधार के रूप में 2017 में शुरू की गई वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) प्रणाली में भी कई तरह के भ्रामक प्रावधान और कई कर दरें हैं, जिससे व्यवसायों के लिए अनुपालन चुनौतीपूर्ण और महंगा हो गया है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर व्यवस्थाओं में संशोधनों और पैचवर्क सुधारों की यह परत कर संरचना को सरल बनाने वाले व्यापक सुधार की आवश्यकता को उजागर करती है।

एक एकीकृत, सुव्यवस्थित कर व्यवस्था शुरू की जानी चाहिए, जिसमें दुरुपयोग की संभावना वाले अनगिनत छूटों को कम किया जाना चाहिए। वैश्विक मानदंडों के अनुरूप उच्चतम आयकर दर को 30 प्रतिशत पर सीमित करने के लिए राजा चेलिया समिति की सिफारिशों को लागू करना-पहले काले धन के लेन-देन को कम करने में सफल रहा था। हालांकि, अतिरिक्त अधिभार और उपकर के फिर से लागू होने से यह लाभ काफी हद तक खत्म हो गया है। उच्चतम कर स्लैब पर 30 प्रतिशत की सीमा को बहाल करने से अधिक व्यक्तियों को अपनी आय सही ढंग से रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा, जिससे कर चोरी से बचा जा सकेगा। एक वैकल्पिक समाधान एक स्थायी स्वैच्छिक प्रकटीकरण योजना (वीडीएस) स्थापित करना हो सकता है।

ऐसी प्रणाली अनौपचारिक लेन-देन, विशेष रूप से रियल एस्टेट जैसे उच्च मूल्य वाले क्षेत्रों में, आधिकारिक अर्थव्यवस्था में लाएगी, यदि संपत्ति पंजीकरण शुल्क में लगभग 3 प्रतिशत की कमी की जाए। पारदर्शिता को बढ़ावा देने और कर चोरी को हतोत्साहित करने के लिए, इस योजना के तहत आय का खुलासा करने वाले करदाताओं के नाम सरकारी वेबसाइट पर सार्वजनिक किए जा सकते हैं। आयकर छूट को तर्कसंगत बनाने से कर परिदृश्य को सरल बनाने में भी मदद मिलेगी।

आधारभूत छूट सीमा 5 लाख रुपये निर्धारित की जानी चाहिए, धर्मार्थ दान, राजनीतिक योगदान और यहां तक कि कृषि आय के लिए छूट को हटा दिया जाना चाहिए, जिसका अक्सर उच्च-निवल-मूल्य वाले व्यक्ति और मशहूर हस्तियां कृषि लाभ की आड़ में बेहिसाब आय को चैनल करने के लिए शोषण करते हैं। किसान आमतौर पर सालाना 5 लाख रुपये से अधिक नहीं कमाते हैं, इसलिए इस सीमा पर आधारित सीमा दुरुपयोग को कम कर सकती है।

5-10 लाख रुपये की आय पर 10 प्रतिशत और 10-15 लाख रुपये की आय पर 20 प्रतिशत कर लगाया जा सकता है, जबकि 15 लाख रुपये से अधिक की आय पर 30 प्रतिशत की दर लागू होगी। इसके अतिरिक्त, वित्तीय वर्ष को अप्रैल-मार्च से कैलेंडर वर्ष में बदलने के लिए एलके झा समिति की सिफारिश को अपनाने से भारत की कार्यप्रणाली अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो जाएगी, जिससे कर प्रणाली और अधिक सुव्यवस्थित हो जाएगी।

कर प्रणाली में एक स्पष्ट अक्षमता नकद लेनदेन पर निर्भरता है, विशेष रूप से छोटी राशियों के लिए। 10,000 रुपये से अधिक के सभी लेनदेन बैंकों के माध्यम से किए जाने चाहिए। इसे प्रोत्साहित करने के लिए, क्रेडिट कार्ड भुगतान पर लेनदेन शुल्क को घटाकर 0.5 प्रतिशत किया जाना चाहिए - जीएसटी से मुक्त - और केंद्र सरकार द्वारा अवशोषित किया जाना चाहिए, जो क्रेडिट कार्ड खरीद के लिए प्रोत्साहन भी बंद कर देगा। यह कम शुल्क क्रेडिट कार्ड के उपयोग को काफी बढ़ाएगा और इस प्रकार औपचारिक अर्थव्यवस्था में अधिक लेनदेन लाएगा। वर्तमान में, उच्च 2 प्रतिशत लेनदेन शुल्क अक्सर व्यापारियों को कार्ड का उपयोग करने से रोकता है, खासकर कम लाभ मार्जिन वाले क्षेत्रों में, जिससे ग्राहकों के लिए अतिरिक्त शुल्क होता है।

क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल में वृद्धि से पर्याप्त कर राजस्व प्राप्त होगा और कम लेनदेन शुल्क के बावजूद कार्ड जारी करने वाले बैंकों की आय में वृद्धि होगी। सुचारू भुगतान की सुविधा के लिए, प्रत्येक जीएसटी-पंजीकृत डीलर को कम से कम दो कार्ड-स्वाइपिंग मशीनें रखनी चाहिए और कार्ड स्वीकार करने से इनकार करने वालों को सख्त दंड का सामना करना चाहिए।

एक और महत्वपूर्ण चिंता जीएसटी व्यवस्था में इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) तंत्र है, जो कर चोरी का एक बड़ा केंद्र बन गया है, खासकर विनिर्माण क्षेत्र में। बिना बिके जीएसटी चालान अक्सर आईटीसी चाहने वाले निर्माताओं द्वारा खरीदे जाते हैं, जिन्हें फिर विक्रेताओं से नकद वापस मिलता है। इस प्रथा ने प्रचलन में मुद्रा की समस्या को और बढ़ा दिया है जिसे विमुद्रीकरण ने संबोधित करने का प्रयास किया था। दुरुपयोग को रोकने के लिए, सभी आईटीसी दावों के लिए एक वार्षिक फोरेंसिक ऑडिट अनिवार्य किया जा सकता है। एक और बेहतर समाधान 18 प्रतिशत जीएसटी स्लैब को खत्म करना और आईटीसी पात्रता को व्यापार योग्य वस्तुओं जैसे विशिष्ट क्षेत्रों तक सीमित करना हो सकता है, जो निर्माताओं के लिए जीएसटी अनुपालन को सुव्यवस्थित करेगा और कर चोरी को कम करेगा।

6 प्रतिशत, 12 प्रतिशत और 30 प्रतिशत के तीन कर स्लैब वाला सरलीकृत जीएसटी ढांचा कई दरों वाली मौजूदा प्रणाली की तुलना में कहीं अधिक प्रबंधनीय होगा। भारत ऐसे कुछ देशों में से एक है, जहां जीएसटी प्रणाली इतनी खंडित है, जो अक्सर व्यवसायों के लिए भ्रमित करने वाली होती है। समय के साथ, 6 प्रतिशत और 12 प्रतिशत स्लैब को एक ही 10 प्रतिशत दर में समेकित किया जा सकता है।

कृषि उत्पाद, मछली और सूती धागे जैसे आवश्यक कच्चे माल, जिन्हें आगे प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है, छूट में रह सकते हैं। कार, उपकरण और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी उच्च मूल्य वाली वस्तुओं को 30 प्रतिशत जीएसटी ब्रैकेट के अंतर्गत आना चाहिए, जबकि इन वस्तुओं के पुर्जों पर 12 प्रतिशत कर लगाया जा सकता है। मौजूदा प्रणाली, जो समान वस्तुओं को अलग-अलग दरों के तहत वर्गीकृत करती है, जैसे क्लच प्लेट्स पर 18 प्रतिशत और क्लच बियरिंग पर 28 प्रतिशत, अनावश्यक भ्रम पैदा करती है। इसी तरह, हलवाई द्वारा बेची जाने वाली खाद्य वस्तुएँ अलग-अलग दरों के अधीन हैं, जिसमें मिठाई, बिस्कुट और स्नैक्स पर 5 प्रतिशत से 28 प्रतिशत के बीच कर लगता है। आभूषण एक और ऐसा क्षेत्र है जिसे युक्तिसंगत बनाने से लाभ मिल सकता है।

सोने के आभूषणों पर जीएसटी को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- एक धातु सामग्री के लिए और दूसरा बनाने के शुल्क के लिए। विलासिता की वस्तुओं पर उपकर को अतिरिक्त जीएसटी स्लैब से बदला जा सकता है, आदर्श रूप से पेट्रोलियम उत्पादों को जीएसटी व्यवस्था के तहत लाया जा सकता है ताकि देश भर में ईंधन की कीमतों को मानकीकृत किया जा सके। आगे के सुधारों को सरकारी लेन-देन, डाक सेवाओं और विदेशी मेल शुल्कों पर जीएसटी लागू करने में विसंगतियों को दूर करना चाहिए।

सरकारी भुगतानों के लिए जीएसटी लगाना विरोधाभासी है, क्योंकि इससे अनावश्यक लेखांकन जटिलताएं पैदा होती हैं, जिससे सरकारी विभागों के बीच धन का हस्तांतरण होता है। इसी तरह, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह की डाक दरों के लिए लगातार वृद्धि के साथ अधिक तार्किक मूल्य निर्धारण संरचना की आवश्यकता होती है।

# जलवायु व टिकाऊ विकास के क्षेत्र में साझीदारी

> यह साझेदारी नेट-जीरो संक्रमण, ग्रीन फाइनेंस और जलवायु अनुकूलन में सार्थक योगदान देने के लिए तैयार है, जो एक लचीले भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी।

**वाउशुआन गेर**
(लेखक, भारत में ताइवान के प्रतिनिधि हैं)

जैसे जैसे जलवायु परिवर्तन हमारी दुनिया को नया आकार दे रहा है, ताइवान और भारत, कई अन्य देशों की तरह, खुद को इसके साथ आने वाली गहन चुनौतियों से जूझते हुए पाते हैं। इंडो-पैसिफिक में प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के रूप में, ताइवान और भारत न केवल अपने पर्यावरण कल्याण की जिम्मेदारी लेते हैं, बल्कि वैश्विक जलवायु संकट को संबोधित करने के लिए प्रतिबद्धता भी साझा करते हैं।

जलवायु परिवर्तन पर हमारा सहयोग अपार संभावनाएं रखता है, क्योंकि ताइवान और भारत हरित विकास, नवाचार और सतत विकास के साझा दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं। हाल के वर्षों में, ताइवान ने जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों का सामना किया है, जिसमें एक सदी में सबसे खराब सूखा, अभूतपूर्व वर्षा और शक्तिशाली तूफान शामिल हैं। राष्ट्रपति लाई चिंग-ते के नेतृत्व में, ताइवान ने 2050 तक नेट-जीरो उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रणनीति की रूपरेखा तैयार की है।

इस दृष्टिकोण में दूसरे ऊर्जा संक्रमण को आगे बढ़ाना, भूतापीय, हाइड्रोजन, बायोमास, सौर और महासागर ऊर्जा के विकास में तेजी लाना, उद्योगों के दोहरे डिजिटल और हरित परिवर्तन को बढ़ावा देना और संभारणीय जीवन शैली को बढ़ावा देना शामिल है। ताइवान की नेट-जीरो यात्रा निष्पक्षता को प्राथमिकता देती है, यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक व्यक्ति इस परिवर्तनकारी प्रक्रिया से लाभान्वित हो। जून में, ताइवान ने राष्ट्रपति कार्यालय के तहत राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन समिति की स्थापना की। यह उच्च-स्तरीय पहल नीति पारदर्शिता और सार्वजनिक सहभागिता को मजबूत करती है, ताइवान के प्रयासों को वैश्विक जलवायु लक्ष्यों के साथ जोड़ती है।

नेट-जीरो के मार्ग, विविध कार्बन कटौती तकनीक, हरित वित्त और संभारणीय जीवन सहित सात प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ समिति घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय जलवायु कार्रवाई दोनों के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है। जलवायु शासन के लिए ताइवान की प्रतिबद्धता आपसी हितों के मुद्दों पर भारत के साथ नए सहयोग का अवसर प्रदान करती है। भारत ने स्वच्छ ऊर्जा में वैश्विक नेता बनने की अपनी महत्वाकांक्षा का प्रदर्शन किया है, जिसके पास अक्षय ऊर्जा विकास के लिए समृद्ध संसाधन हैं।

हरित प्रौद्योगिकी, जलवायु अनुकूलन और कम कार्बन नवाचार में विश्व नेता ताइवान, भारत की ताकतों का पूरक है, जिससे दोनों देश अपने संभारणीय विकास लक्ष्यों को गति दे सकते हैं। ताइवान ने अपने 2050 नेट-जीरो लक्ष्य को जलवायु परिवर्तन प्रतिक्रिया अधिनियम में एकीकृत कर दिया है और 2025 से कार्बन शुल्क प्रणाली लागू करेगा। लगभग 10 अमेरिकी डॉलर प्रति टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य (इ2ज2द) का यह प्रारंभिक कार्बन शुल्क धीरे-धीरे बढ़ेगा, जो 2030 तक 40 से 60 अमेरिकी डॉलर प्रति इ2ज2द के अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होगा। इसके अतिरिक्त, ताइवान अगले चार वर्षों के भीतर उत्सर्जन व्यापार प्रणाली शुरू करने की योजना बना रहा है, जिससे वैश्विक कार्बन बाजार में उसकी भूमिका बढ़ेगी।

यह ढांचा कार्बन बाजारों, नीति विनिमय और प्रौद्योगिकी साझाकरण में सहयोग के लिए एक मजबूत मंच प्रस्तुत करता है। ताइवान हरित उद्योगों के विकास को बढ़ावा देने के लिए तीन प्रमुख फंड लॉन्च कर रहा है, जिसमें घरेलू स्तर पर उभरते नेट-जीरो उद्योगों का समर्थन करने के लिए इ3ज10 बिलियन ग्रीन ग्रोथ फंड शामिल है। इसके अतिरिक्त, ऊर्जा-बचत, परिपत्र अर्थव्यवस्था और नेट-जीरो क्षेत्रों में दीर्घकालिक निवेश को बीमा और वित्त क्षेत्रों द्वारा समर्थित ग्रीन फाइनेंस इनोवेशन फंड द्वारा समर्थित किया जाएगा।

ताइवान नेट-जीरो फंड उन्नत कार्बन न्यूनीकरण प्रौद्योगिकियों में निवेश करने के लिए उच्च-उत्सर्जन उद्योगों, उद्यम पूंजी और वित्तीय संस्थानों के साथ सहयोग करेगा। ये पहल पेरिस समझौते के अनुच्छेद 9 के अनुरूप हैं, जिसमें वैश्विक जलवायु क्रियाओं का समर्थन करने के लिए विभिन्न स्रोतों से जलवायु वित्त जुटाने का आह्वान किया गया है। ताइवान के प्रयास अधिक हरित निवेश को आकर्षित करेंगे, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को मजबूत करेंगे और भारत के साथ अपनी जलवायु साझेदारी को गहरा करेंगे। जलवायु अनुकूलन के क्षेत्र में, ताइवान ने मई में अपनी नवीनतम राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन विज्ञान रिपोर्ट जारी की। यह रिपोर्ट स्थानीय सरकारों को प्रभावी अल्पकालिक और मध्यम अवधि के अनुकूलन उपायों की योजना बनाने, शहरी लचीलापन बढ़ाने में सहायता करने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक डेटा प्रदान करती है।

यह पूर्व चेतावनी प्रणालियों और आपदा रोकथाम तंत्रों की आवश्यकता को रेखांकित करता है जो पूर्वानुमान, प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति को एकीकृत करते हैं। ताइवान की अनुकूलन पहल पेरिस समझौते के अनुच्छेद 7 के अनुरूप हैं और हम ताइवान और भारत के लिए पूर्व चेतावनी प्रौद्योगिकियों, आपदा रोकथाम और लचीलापन-निर्माण पर सहयोग करने की बड़ी संभावना देखते हैं, जिससे दोनों देशों की जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने की क्षमता मजबूत होगी।

ताइवान और भारत जलवायु कार्रवाई में एक स्पष्ट लक्ष्य साझा करते हैं। द्विपक्षीय सहयोग से हरित विकास को बढ़ावा मिलेगा और वैश्विक जलवायु संकट का मिलकर सामना किया जा सकेगा। जैसे-जैसे ताइवान कार्बन मूल्य निर्धारण और हरित प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ा रहा है, हम भारत के साथ नवीकरणीय ऊर्जा, नेट-जीरो संक्रमण और तकनीकी नवाचार में सहयोग को गहरा करने की आशा करते हैं, जिससे वैश्विक जलवायु शासन में एक साथ योगदान मिल सके।

## आप की बात

### आरक्षण में वर्गीकरण

**शीर्ष** न्यायालय द्वारा राज्य सरकारों को आरक्षण में उपवर्गीकरण के जो दिशा-निर्देश दिये थे, उसे लागू करने वाला उत्तराखंड पहला राज्य बन गया है। उपवर्गीकरण आरक्षण पर राजनीतिक दलों द्वारा बेतुके तर्क दिये जा रहे हैं। यही नहीं इन दलों द्वारा आरक्षित वर्गों के लोगों को प्रदर्शन के लिए भी उकसाया जा रहा है।यह एक घटिया राजनीति है। इसके विरोध में जो लोग खड़े हैं,वे वहीं हैं जिन्होंने आरक्षण की मलाई का सबसे अधिक मजा चखा है और चख रहे हैं। संविधान में जिन वंचितों और अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उद्धार के लिए आरक्षण का प्रवधान रखा गया था, वह उद्देश्य स्वतन्त्रता के 77 वर्ष बाद भी पूरा होता दिखाई नहीं दे रहा। उपवर्गीकरण के विरोधियों का कहना है कि इससे वर्गीय एकता को ठेस पहुंचेगी और वर्ग के अन्दर ही द्वेष की भावना पनपेगी। इस पर यह प्रश्न भी उठना स्वाभाविक है कि जब संविधान में जाति के नाम पर आरक्षण का निर्धारण किया गया था तो तब यह आशंका क्यों नहीं उठाई गई कि जातिगत आरक्षण से विभिन्न जातियों के बीच द्वेषभाव पनपने के साथ - साथ धार्मिक एकता को भी ठेस पहुंचेगी। आरक्षण यदि सुपात्र तक नहीं पहुंचा तो यह अपने उद्देश्य से भटक जाएगा अत: उपवर्गीकरण आरक्षण बहुत आवश्यक है।

**- डॉ नरेन्द्र टोंक**, मेरठ

### अतिक्रमण की समस्या

**सरकार** तब जागती है जब या तो उसे विकास की चिंता होती है या फिर आवागमन में बाधाएं आने और पब्लिक से अत्यधिक शिकायतें आने पर. उससे पहले गांव हो या नगर अथवा महानगर सभी बेरोक-टोक अतिक्रमणकारियों के अतिक्रमण से फलते-फूलते रहते हैं। और तब स्थानीय प्रशासन भी शिथिलता बरतता रहता है। समय गुजरता है बरसों बीत जाते हैं. लोगों के रहवास, गुमटियां, दुकानें तक स्थापित हो जाती हैं और वहां रहने के साथ ही रोजगार-धंधे भी जोर पकड़ लेते हैं। अगर यूं कहें कि छोटे-छोटे बाजार तक पनपकर स्थायी हो जाते हैं. अगर स्थानीय प्रशासन योजनाबद्ध तरीके से बसाहट पर ध्यान दे और विधिवत समय-समय पर उचित कार्रवाई करते रहे तो गांव हो या शहर अथवा महानगर बहुत ही व्यवस्थित और खूबसूरत तरीके से बस सकते हैं. व किसी के घर,गुमटी व दुकानें भी न तोड़ना पड़े और न ही रहवास व धंधे चौपट करना पड़े। यह माना कि शुरुआत में न तो जगह की कमी होती है और न ही आवागमन में किसी तरह की बाधाएं आती हैं. किन्तु जैसे-जैसे बसाहट फिर चाहे कच्चे-पक्के घर हो या गुमटी अथवा दुकानें अगर बढ़ने लगे तो लोकल अथॉरिटी को समय पर उचित कार्रवाई करके अतिक्रमण हटाने और स्थायी पट्टे देने की विधिसम्मत व उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

**- शकुंतला महेश नेनावा**, इंदौर

### अदालत के झटके

**उत्तर** प्रदेश सरकार एवं केंद्र सरकार को, अदालतों ने, एक नहीं बल्कि दो बड़े झटके दिए है। पहला झटका था बुलडोजर पर ब्रेक लगाना। दूसरा था दिल्ली उच्चन्यायायालय द्वारा अमेरिका में रहने वाले एक प्रोफेसर के ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया कार्ड को रद्द करने के केंद्र के आदेश को खारिज कर दिया। उन पर भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया गया था ,मगर न्यायालय ने कहा कि नोटिस में इन दावों का समर्थन करने वाले विवरण या सबूतों का अभाव है। बफेलो विश्वविद्यालय में जैकब स्कूल ऑफ मेडिसिन एंड बायोमेडिकल साइंसेज में चिकित्सा के क्लिनिकल प्रोफेसर के रूप में कार्यरत, 80 वर्षीय श्री खालिद जहांगीर काजी 1970 के दशक में भारत से अमेरिका चले गए थे और अपने परिवार के साथ वहीं रह रहे हैं। उन्होंने अपने ऊपर लगाए गए दो प्रतिबंधात्मक उपायों की वैधता को चुनौती दी थी पहला नागरिकता अधिनियम के तहत उनका ओसीआई कार्ड रद्द करने का आदेश और दूसरा विदेश अधिनियम के तहत गृह मंत्रालय द्वारा जारी ब्लैकलिस्टिंग आदेश, जिसमें उनके भारत में प्रवेश पर रोक लगाई गई थी। व्यक्तिगत अधिकारों और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन बनाते हुए, न्यायालय ने कहा कि श्री काजी को देश में प्रवेश की अनुमति देने से पहले, अधिकारियों को एक नया नोटिस जारी करने का निर्देश दिया जाता है।

**- जंगबहादुर सिंह**, जमशेदपुर

### बुलडोजर पर फैसला

**सुप्रीम** कोर्ट द्वारा बुधवार को बुलडोजर-कार्रवाई की सीमा तय करना एक दूरदर्शी फैसला माना जाएगा। अदालत ने साफ कर दिया हैकि किसी संपत्ति को सिर्फ इसलिए नहीं तोड़ा जा सकता, क्योंकि उस संपत्ति का मुखिया कथित आरोपी है। साथ ही, अदालत ने बिंदुवार दिशा-निर्देश जारी करके ऐसे मामलों की सांविधानिक स्थिति भी साफ कर दी है। दरअसल, पिछले कुछ महीनों से कई राज्य सरकारों पर ये आरोप लग रहे थे कि ऐसी कार्रवाइयों में पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाया जा रहा है, जिससे न्याय की मूल अवधारणा खंडित हो रही है। हालांकि, खबर यह भी है कि इन कार्रवाइयों का मुकसान अल्पसंख्यकों की तुलना में बहुसंख्यक समुदाय को ज्यादा हुआ है। अपराधशास्त्र का एक महत्वपूर्ण और स्थापित सिद्धांत है कि जिसने अपराध किया है, सजा उसी को दी जाए। लिहाजा अतिक्रमणकरियों को ही जेल मिलनी चाहिए। यदि पूरी जांच के बाद जमीन अतिक्रमित साबित हो, तो उस पर बुलडोजर चलाने से ऐतराज नहीं होना चाहिए। इसमें शायद ही न्याय के सिद्धांत की अवहेलना होगी।

**- गोपाल सोनी**, मनावर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से **responsemail.hindipioneer@gmail.com** पर भी भेज सकते हैं।

हिन्दुस्तान 1936

# धुंध-कोहरे का घेरा

राजधानी दिल्ली में कर्तव्य पथ पर कुछ दूर पैदल चलिए, तो इंडिया गेट दिखना बंद हो जा रहा है। उधर, आगरा में कुछ ही दूर से देखने पर ताजमहल नजर नहीं आ रहा है। जब धुंध और कोहरे की मजबूत जुगलबंदी है, तब उत्तर भारत के शहरों में जो लोग घूमने आ रहे हैं, वे अपने साथ प्रदूषण की यादगार तस्वीरें भी ले जा रहे हैं। यह बताना मुश्किल है कि प्रदूषण की वजह से फैली धुंध का कितना असर है और कोहरे का कितना साया है? वैज्ञानिक बताते हैं कि आगरा को सोमवार के बाद कोहरे से मुक्ति मिल सकती है, पर दिल्ली में राहत की आमद के बारे में कुछ भी आश्वस्त भाव से नहीं कहा जा सकता। हालांकि, दिल्ली में उम्मीद है कि वायु गुणवत्ता में सुधार होगा और इसीलिए यहां की स्थानीय सरकार राष्ट्रीय राजधानी में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) का तीसरा चरण लागू नहीं करेगी। वैसे, कड़े उपाय आजमाने के प्रति हिचक नई नहीं है। यहां एक बड़ा खतरा आर्थिक विकास के प्रभावित होने का है। वास्तव में, प्रदूषण अब एक ऐसा मसला है, जिसे समग्रता में देखते हुए लाभ-हानि का आकलन करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि आर्थिक विकास को बचाने की कोशिश में सबके स्वास्थ्य से खिलवाड़ हो जाए।

कोई न कोई दिन ऐसा आएगा, जब हमें कड़े उपायों के जोर पर प्रदूषण का समाधान करना पड़ेगा। क्या अभी प्रदूषण से जुड़ी समस्याएं गंभीर नहीं हुई हैं? केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, गुरुवार दोपहर 1 बजे शहर में एक्यूआई 425 था। वैसे, स्विस मॉनिटरिंग पोर्टल के अनुसार, दिल्ली के कुछ हिस्सों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 1,300 तक पहुंच गया था। किन इलाकों में ज्यादा प्रदूषण है, इस सवाल से बड़ा सवाल यह है कि क्या हमारे यहां प्रदूषण को सही पैमाने पर मापा नहीं जा रहा है? क्या प्रदूषण की निगरानी करने वाली एजेंसियां, संस्थाएं हमें वास्तविक तस्वीर नहीं दिखा रही हैं? जो हम खुली आंखों से देख पा रहे हैं, क्या वह सच्चाई नहीं है? 300 से ज्यादा उड़ानों और ट्रेनों पर असर पड़ा है। सड़क पर वाहन चलाते समय लोगों को सावधान रहने के लिए कहा गया है। इधर हुई कुछ सड़क दुर्घटनाएं चिंता को बहुत बढ़ा रही हैं। जिन बच्चों, बुजुर्गों का स्वास्थ्य पहले से ही दुर्बल है, उन्हें ज्यादा सतर्क रहना होगा। बहुत जरूरी होने पर ही घर से निकलने की सलाह एक बार फिर प्रासंगिक हो गई है।

**धुंध और कोहरे के समय जब खुशनुमा उम्मीदों का अभाव हो गया है, जब सरकारें कड़े कदम उठाने से बच रही हैं, तब उम्मीदें सर्वोच्च न्यायालय पर टिकी हुई हैं।**

धुंध और कोहरे के समय जब खुशनुमा उम्मीदों का मानो अभाव सा हो गया है, जब सरकारें ज्यादा कड़े कदम उठाने से बच रही हैं, तब उम्मीदें सर्वोच्च न्यायालय पर टिकी हैं। सर्वोच्च न्यायालय गुरुवार को दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की इस शिकायत पर सोमवार को सुनवाई के लिए सहमत हो गया है कि प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में पहुंचने से पहले एहतियाती कदम क्यों नहीं उठाए गए? न्यायमूर्तियों से आशा गलत नहीं है। दिल्ली के लोगों को पहले मिली राहतों में न्यायालय का योगदान किसी से छिपा नहीं है। न्यायालय को कारगर फैसला सुनाने में हिचकना नहीं चाहिए। सेहत और पर्यावरण सुरक्षा को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। फैसलों का असर जमीन पर होना चाहिए। केवल निर्देश और सलाह से बात नहीं बनेगी। आज यह सवाल उठना बिल्कुल स्वाभाविक है कि कुछ कार्रवाई करने से पहले हम दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर बने रहने पर क्यों आमादा हैं?

## हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले

15 नवंबर, 1949

### आर्थिक संकट का मुकाबला

देश को इन दिनों असाधारण आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। वह लोगों के दैनिक जीवन को स्पर्श करता है और इसलिए वह व्यापक असन्तोष का कारण बन रहा है। युद्धकाल में हालत काफी खराब थी। लोग उसको समझ सकते थे, क्योंकि उत्पादन का एकमात्र उद्देश्य युद्ध की आवश्यकताओं को पूरा करना था। लोगों ने युद्ध के समाप्त हो जाने पर सन्तोष की सांस ली थी और आशा की थी कि युद्धकालीन अभावों से उनको मुक्ति मिल जायेगी और वे सुख तथा शान्तिपूर्वक अपना जीवन बिता सकेंगे। देश की स्वतंत्रता ने लोगों की आशाओं को और भी जगाया, किन्तु उन्हें अधिकतर निराशा का ही सामना करना पड़ा। इसका प्रधान कारण यह समझा जा सकता है कि देश के विभाजन के कारण ऐसी अनेक समस्याएं उठ खड़ी हुई थीं, जिनकी ओर सरकार को सबसे पहले ध्यान देना पड़ा। अब उन समस्याओं से बहुत कुछ निपट लिया गया है और सरकार आर्थिक संकट का निर्धारण करने की दिशा में विशेष तौर पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रही है। सरदार पटेल ने देशी राज्यों की जटिल समस्या को बड़ी सफलता के साथ हल किया और सैकड़ों अलग-अलग टुकड़ों में बिखरे हुए देश को एक ही राजतंत्र के अधीन ला दिया, सारे देश के लिए शासन का समान स्तर स्थापित कर दिया। इस घटना ने सरदार पटेल के प्रति लोगों के विश्वास को और बढ़ा दिया और उनकी यह आम धारणा हो चली है कि चाहे काम कितना ही मुश्किल क्यों न हो, यदि सरदार पटेल ने उसको अपने हाथ में ले लिया, तो सफलता अवश्य मिलकर रहेगी। पिछले दिनों से सरदार पटेल देश की आर्थिक समस्याओं में भी दिलचस्पी ले रहे हैं, यह जनता के लिए अतिरिक्त सन्तोष का कारण होगा।

अभी नई दिल्ली में केन्द्रीय औद्योगिक सलाहकार कौंसिल की स्थायी समिति की एक बैठक हुई है। इसमें सरदार पटेल और डा. जान मथाई दोनों ने देश की आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाला था। सरदार पटेल ने ठीक ही कहा था कि देश की आर्थिक अवस्था इतनी खराब हो चुकी है कि अब उसमें अधिक बिगाड़ को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने आर्थिक संकट का सामना करने के लिए चार उपाय सुझाये।... इन पर अमल करने के लिए सभी सम्बन्धित पक्षों का सहयोग अपेक्षित है।

# भारतवंशियों पर बढ़ता जा रहा भरोसा

यहां स्कैन करें

शशांक | पूर्व विदेश सचिव

**भारत को जो विशेष तवज्जो देने की बात 2000 के दशक में रिपब्लिकन सरकार कहा करती थी, अगले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप उसे दोहराने लगे हैं।**

यह 1970 के दशक की बात होगी। मैं पहली बार अमेरिका में अपनी सेवा दे रहा था। संयुक्त राष्ट्र में मेरी पोस्टिंग थी। अखबारों में मैं देखा करता कि भारतवंशियों को अमूमन मजदूरों की तरह पेश किया जा रहा है। वहां की फैक्टरियों में काम करने वाले भारतीयों की ही चर्चा ज्यादातर होती रहती। भारत को लेकर अमेरिकियों की समझ काफी कमजोर थी। यह तस्वीर वियतनाम युद्ध के बाद से बदलने लगी, जब जंग से अमेरिकियों की उदासीनता के कारण भारतीय पेशेवरों की अमेरिका में आमद शुरू हुई। और, 2000 के दशक में, जब मैं फिर से वहां जाने लगा, तो मैंने यही महसूस किया कि अमेरिकी विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर और शोधकर्ताओं के रूप में भारतीय अपना मुकाम बना चुके हैं। यहां तक कि वहां भारतीय मूल के द्रोने डॉक्टर थे कि उनकी पहुंच गांव तक हो गई थी। अच्छे से अच्छे अमेरिकी भी भारतीय डॉक्टरों पर भरोसा करने लगे थे। बाद में विज्ञान-तकनीक के क्षेत्रों में भी हमारा प्रभुत्व बढ़ा।

संभवतः इन्हीं सब वजहों से विदेश सेवा की अपनी नौकरी के दौरान मैं जहां कहीं गया, वहीं सुनने को मिला कि भारतीयों ने अमेरिका और इंग्लैंड को काफी फायदा पहुंचाया है, तो हमारे यहां भी अपने विद्यार्थियों और नौजवानों को भेजा करिए। वे कहा करते, दुनिया भर में सिर्फ दो समुदाय अपनी मेहनत और मौलिक चिंतन के लिए प्रसिद्ध हैं- एक, यहूदी और दूसरे, भारतीय। इधर के दस वर्षों में तो भारतवंशियों की इज्जत और बढ़ गई है। विशेषकर, जब से भारत सरकार ने अनिवासी भारतीयों को अपना अनौपचारिक राजदूत मानना शुरू किया है, भारतवंशियों का कद काफी ऊंचा हो गया है। अमेरिका में तो यह भी माना जाने लगा है कि अन्य समुदायों की तुलना में भारतवंशी काफी अधिक टैक्स चुकाते हैं और काम भी काफी अच्छा करते हैं।

हालांकि, अवैध तरीके से अमेरिका में दाखिल होने वाले लोगों को लेकर परेशानी भी खूब होती रही है। भारतीयों की तरह दिखने वाले दक्षिण व पश्चिम एशिया के लोगों को पहचानना आसान नहीं होता, इसलिए कई बार अवैध आप्रवासन का नुकसान भारतीयों को भी उठाना पड़ता है। यह कितना गंभीर मसला है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 9/11 की घटना के बाद वहां सिख समुदाय को काफी ज्यादा निशाना बनाया गया, क्योंकि लंबी दाढ़ी रखने जैसी वेश-भूषा उनके मुसलमान होने का भ्रम पैदा करती थी।

बहरहाल, अब अमेरिका में भारतवंशी कई कंपनियों के सीईओ बन चुके हैं, उनके यूनिकॉर्न अच्छा काम कर रहे हैं, शोध-संस्थानों में वे नेतृत्व की भूमिका में हैं और समाज व राजनीति में अच्छा-खासा दखल रखने लगे हैं। नतीजतन, अमेरिका में एक सोच वह भी बनी है कि भारत के साथ दोस्ती अपने बढ़ती रहनी चाहिए, क्योंकि यदि भारतवंशी अपने मूल वतन को लौट गए, तो उनकी अर्थव्यवस्था बैठ जाएगी।

नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इसे बखूबी समझ रहे हैं। जिस तरह से उनको 'पॉपुलर वोट' मिले हैं, लगता यही है कि वह अपने चुनाव प्रचार में भारतवंशियों की तारीफ में जो कसीदे गढ़ा करते, अमेरिकी मतदाताओं ने उस पर विश्वास किया है। यह भरोसा आगे के दशकों की दशा-दिशा तय करने में काफी कारगर माना जा रहा है। संभवतः इसी कारण ट्रंप की नई टीम में भारतवंशी भी दिखने लगे हैं।

विवेक रामास्वामी ऐसा ही एक नाम है, जिनको एक्स, टेस्ला व स्पेसएक्स जैसी कंपनियों के मालिक एलन मस्क के साथ डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएन्सी का प्रमुख बनाया गया है। यह विभाग सरकार में नौकरशाही, अतिरिक्त नियम-कानून व गैर-जरूरी खर्चों को रोकने की दिशा में काम करेगा। यह इसलिए काफी महत्वपूर्ण विभाग है, क्योंकि ट्रंप मानते हैं कि पिछली सरकार की नीतियों का नुकसान अमेरिकी खजाने को हुआ है, जिसमें संतुलन बनाना आवश्यक है। रामास्वामी पर ट्रंप को इतना विश्वास है कि उन्होंने उनके लिए कभी कहा था कि अपने पूरे जीवन में रामास्वामी जैसा सुलझा इंसान उन्होंने कभी नहीं देखा।

दूसरी अहम जिम्मेदारी भारतीय परंपराओं को जीने वाली जिस शख्सियत को मिली है, वह हैं तुलसी गबार्ड। इनको राष्ट्रीय खुफिया विभाग का निदेशक बनाया गया है। तुलसी दो दशकों तक सेना में रह चुकी हैं और इराक में भी अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। हालांकि, भारतवंशी ही नहीं, भारत-समर्थक नेताओं को भी ट्रंप प्रशासन में अहम जिम्मेदारी मिलने लगी है, जिनमें 'इंडिया कॉकस' के प्रमुख माइक वाल्ट्ज को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाना महत्वपूर्ण है। उम्मीद है, आने वाले समय में भारत और अमेरिका के आपसी रिश्ते पर इन सबका खासा असर पड़ेगा और दोनों देश मिलकर एक नई इबारत लिख सकेंगे।

मुझे याद है, 2003-04 में जब मैं विदेश सचिव था, तो उस समय अमेरिका में जॉर्ज डब्ल्यू बुश की रिपब्लिकन सरकार थी। तब अमेरिकी कहा करते थे कि अगले 20-25 वर्षों में सिर्फ तीन देशों- अमेरिका, भारत और चीन आगे निकलेंगे, इसलिए वाशिंगटन और नई दिल्ली के रिश्ते काफी अच्छे बनने चाहिए। मगर बाद के वर्षों में इस पर शायद ही ध्यान दिया गया। अलबत्ता, अमेरिकी प्रशासन की मंशा यही रही कि नई दिल्ली में उनकी पसंद की ऐसी सरकार बने, जिसे वह नियंत्रित कर सके। भारत की आंतरिक गड़बड़ियों को भी हवा देने की कोशिश की गई, ताकि एक कमजोर सहयोगी के तौर पर वह अमेरिका से साथ जुड़े। यहां तक कि वाशिंगटन ने बीजिंग के साथ अपने रिश्ते सुधारे और बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल जैसे देशों के लिए अपने तई नीतियां तय कीं। इनसे चीन का दबदबा इन देशों पर काफी बढ़ गया। जाहिर है, यह अमेरिका की कथनी और करनी में अंतर का नतीजा था, जिसका नुकसान हमें उठाना पड़ा है।

इस पृष्ठभूमि के बावजूद यदि ट्रंप कहे रहे हैं कि एक सक्षम सहयोगी के तौर पर वह भारत के साथ संबंध बढ़ाएंगे, तो उसके सकारात्मक निहितार्थ हैं। इससे भारतीयों के दिलो-दिमाग की कटु यादें खत्म हो सकती हैं। वैसे भी, भारत में पड़ोसी देश से होती ड्रग्स की तस्करी, आतंकवाद, रोहिंग्या शरणार्थी, अन्य देशों में खड़ा किया जाता खालिस्तान आंदोलन आदि मसलों का अमेरिका समाधान करता है, तो यह हमारे लिए अच्छी बात होगी। इन सबकी उम्मीद की भी जा सकती है, क्योंकि भारत को जिस 'एक्सेप्शनल ट्रीटमेंट' (विशेष तवज्जो) देने की बात 2000 के दशक में रिपब्लिकन सरकार कहा करती थी, ट्रंप उसको भी दोहराने लगे हैं। हालांकि, हमें यह बात रखना चाहिए कि लोकतंत्र में हालात बदलने में वक्त लगता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

# एक अनाज में नहीं, पूरी थाली में परोसिए पोषक आहार

यहां स्कैन करें

अश्विनी महाजन | अर्थशास्त्री

सरकारी हलकों में चावल को खनिजों और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों से संपन्न करने (फोर्टिफिकेशन) को एक बड़े उपाय के रूप में देखा जाता रहा है। यह माना जाता है कि किन्हीं अनाजों को अगर अतिरिक्त रूप से पोषक बना दिया जाए, तो कुपोषण की समस्या का समाधान किया जा सकता है। हालांकि, अब अनाज को ज्यादा पोषक बनाने के प्रति विश्वास घटने लगा है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (पीएमईएसी) के एक सदस्य की रिपोर्ट से पता चलता है कि कुपोषण दूर करने के लिए फोर्टिफिकेशन सही विकल्प नहीं है। उन्होंने आगाह किया है कि फोर्टिफिकेशन की रणनीति को कुछ अंतरराष्ट्रीय दानदाता और गैर-सरकारी संगठन आगे बढ़ा रहे हैं। किसी अनाज को पौष्टिक बनाने की क्रिया के पक्ष में अधिक मजबूत साक्ष्यों की जरूरत है।

प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद् के नवीनतम घरेलू उपभोग सर्वेक्षण डाटा के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत में आयरन और जिंक के सेवन को बेहतर बनाने और एनीमिया को कम करने में फोर्टिफिकेशन का सीमित प्रभाव पड़ता है। शमिका रवि (पीएमईएसी की एक अन्य सदस्य) और भारतीय सांख्यिकी संस्थान के कई विशेषज्ञों ने 2022-23 और 2011-12 के सर्वेक्षण डाटा पर आधारित खास विश्लेषण किया है। सच है कि हमारे देश में एक आबादी पर्याप्त पोषण से वंचित है। हालांकि, पोषक तत्वों की कमी की समस्या के बारे में नीति निर्माताओं की चिंता समझ में आती है, लेकिन नीति निर्माताओं को इस अंतर को पाटने के लिए तरीके और साधन विकसित करने की जरूरत है, ताकि भोजन की थाली में पर्याप्त पोषक तत्व सुनिश्चित किए जा सकें। गरीबी को खत्म करने और आम लोगों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए नीतियों का विवेकपूर्ण मिश्रण विकसित होना चाहिए।

**चावल या किसी अन्य अनाज को अतिरिक्त रूप से पौष्टिक बनाकर कुपोषण दूर करने के पक्ष में साक्ष्यों का अभाव है।**

आमतौर पर कहा जाता है कि भारतीय महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा आयरन की कमी, यानी एनीमिया से पीड़ित है। इसी तरह, देश में बड़ी संख्या में बच्चे अपनी उम्र और लंबाई के मुकाबले बौने और कमजोर हैं। ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि उन्हें बचपन में पर्याप्त पोषक तत्व नहीं मिलते। वैज्ञानिकों का मानना है कि कुपोषण से निपटने का सबसे कारगर तरीका भोजन की थाली में पर्याप्त पोषक तत्व उपलब्ध कराना है।

गौर करने की बात है कि केंद्र सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत वितरित चावल को बड़े पैमाने पर फोर्टिफाइड करना शुरू कर दिया है, जिसके लिए हाल ही में 17,000 करोड़ रुपये का बजटीय प्रावधान किया गया है। यहां भ्रम से बचते हुए नीतिगत स्पष्टता जरूरी है। ऐसा लगता है कि कुछ एजेंसियों की सलाह पर भरोसा किया जा रहा है और फोर्टिफिकेशन के जरिये सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करने की कोशिश हो रही है। हालांकि, इसकी प्रभावशीलता संदिग्ध है।

हमें समझना होगा कि गरीबी से कहीं ज्यादा संतुलित और पौष्टिक भोजन के बारे में जानकारी की कमी के चलते बड़ी आबादी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो रही है। यही कारण है कि कुपोषण पर तीन-आयामी दृष्टिकोण से हमला किया जाना चाहिए और भ्रामक सलाह से बचना चाहिए।

सर्वप्रथम कम आय वाले परिवारों को प्रोत्साहन और सहायता देने की जरूरत होगी। दूसरे, हमें लोगों को संतुलित, पौष्टिक आहार के बारे में शिक्षित करके और उनको अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों से बचने के लिए प्रोत्साहित करके कम पोषक तत्व वाले आहार को हतोत्साहित करना चाहिए। तीसरा, दूध व दूध से बने उत्पादों, फलों और सब्जियों, अंडों, दालों और पौष्टिक बाजरा के उत्पादन को बढ़ावा देकर लोगों तक किफायती पौष्टिक भोजन पहुंचाने के प्रयास ज्यादा तेज होने चाहिए।

अब हमें फोर्टिफिकेशन के दृष्टिकोण पर प्रमाणों के साथ पुनर्विचार करना होगा, जो पोषण संबंधी लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए एक महंगा और अप्रभावी तरीका लगने लगा है। इसके बजाय, ताजा पका हुआ आहार पोषण को बेहतर बनाने का प्राकृतिक और किफायती तरीका है। भारत के पोषण ट्रैक और अन्य आंकड़े संकेत करते हैं कि सरकार द्वारा समर्थित आंगनबाड़ी और मिड डे मील कार्यक्रम कहीं ज्यादा प्रभावी हैं। इसीलिए, ज्यादा कारगर पोषण उपायों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

## मनसा वाचा कर्मणा

# गुरु नानक देव का संदेश

गुरु नानक ऐसे व्यक्ति थे, जो धर्मग्रंथ नहीं जानते थे, वह जीवन को जानते थे। वह बहुत दयालु और साहसी व्यक्ति थे। उनके बारे में एक खूबसूरत कहानी है। वह पैदल यात्रा कर रहे थे और लोगों को उपदेश दे रहे थे। एक दिन वह इलाके के एक बहुत अमीर आदमी के घर मेहमान बनकर आए। कुछ दिनों बाद जब वह जाने लगे, तब उन्होंने अमीर आदमी को एक सिलाई सुई दी और कहा, 'इसे अपने पास रखो। कुछ समय बाद जब तुम मुझे देखो, तो लौटा देना।' गुरु नानक देव के जाने के बाद अमीर व्यक्ति ने अपनी पत्नी को यह बताया।

पत्नी ने तुरंत डांटा, 'आपने गुरु से सुई क्यों ली? वह बूढ़े हैं। मान लो कि वह मर जाते हैं और आप सुई लौटा नहीं पाते हैं, तो आप क्या करेंगे? सदैव कर्ज में डूबे रहेंगे। आप इस एक कर्म को धोने में असमर्थ होंगे और इसकी कीमत आपको जन्मों तक चुकानी पड़ सकती है। यह अच्छी बात नहीं। किसी तरह उन्हें ढूंढने की कोशिश कीजिए और सुई तुरंत लौटा दीजिए।'

अमीर आदमी गुरु नानक देव के बारे में पता करने लगा। कुछ महीनों बाद वह नानक देव तक पहुंचने में कामयाब हो गया, भेंट होते ही कहा, 'गुरु जी, मैं इस सुई को अपने साथ नहीं रखना चाहता। आप बूढ़े आदमी हैं, यदि आपका निधन हो जाए, तो मैं इस सुई को स्वर्ग नहीं ले जा सकता और न ही आपको सुई लौटा सकता हूं। मैं हमेशा के लिए कर्जदार हो जाऊंगा।'

गुरु नानक ने उत्तर दिया, 'तो आप जानते हैं कि आप इस सुई को स्वर्ग तक नहीं ले जा सकते?' उस आदमी ने 'हां' कहा। तब नानक देव ने कहा, 'जब आप जानते हैं कि आप एक सुई नहीं ले जा सकते, तो उन तमाम चीजों का क्या होगा, जो आप जमा कर रहे हैं? आप कुछ भी साथ नहीं ले जा पाओगे।' अमीर आदमी को तत्काल संदेश मिल गया। वह गुरु के चरणों में गिर पड़ा। वह घर वापस चला आया। परिवार के लिए जो जरूरी था, उसे पास रखा और लोगों की भलाई में जुट गया। लोगों की तन-मन-धन से सेवा करने लगा।

विश्व एक सीमित स्थान है और यहां सीमित संसाधन हैं। कई लोग अंतहीन रूप से कुछ न कुछ संचय करते रहते हैं। सक्षम लोग ज्यादा संचय कर लेते हैं और बाकी लोगों को बहुत पीड़ा व संघर्ष से गुजरना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति को तय करना होगा कि मुझे अपने लिए बस इतना चाहिए और मैं अपनी बाकी क्षमताओं-संसाधनों का उपयोग सभी की भलाई के लिए करूंगा। अगर यह बात किसी इंसान की समझ में नहीं आए, तो वह खुद के लिए और दुनिया के लिए आपदा है। इस ग्रह पर वास्तविक आपदा भूकंप, ज्वालामुखी या सुनामी नहीं है; यह मानवीय अज्ञानता है। अज्ञानता ही एकमात्र विपत्ति है। आत्मज्ञान ही एकमात्र समाधान है।

**नानक देव ने कहा, 'जब आप जानते हैं कि आप एक सुई नहीं ले जा सकते, तो उन तमाम चीजों का क्या होगा, जो आप जमा कर रहे हैं? आप उनमें से कुछ भी साथ नहीं ले जा पाओगे।'**

सद्गुरु जग्गी वासुदेव

तुलसी गबार्ड | अमेरिका की भावी राष्ट्रीय खुफिया निदेशक

मैं 21 वर्षों से अधिक समय से सैनिक हूं और लेफ्टिनेंट कर्नल के रूप में कार्यरत हूं। मुझे अनगिनत महान अमेरिकियों के साथ सेवा का सौभाग्य मिला है। हम जिस देश से प्यार करते हैं, उसके लिए जान देने को तैयार हैं।

# किसी के सपनों का घर तोड़ देना गलत

हर आदमी का सपना होता है कि उसका अपना एक आशियाना हो और उसे बनाने के लिए वह हरसंभव प्रयास करता है। अब चाहे वह प्रयास गलत तरीके से हो या सही तरीके से, यह बात उसमें रहने वाले हरेक इंसान को पता नहीं होती। न्यायालय द्वारा बुलडोजर कार्रवाई पर रोक लगाने की प्रक्रिया बिल्कुल सही है। अपराधी को उसके अपराध की सजा जरूर मिलनी चाहिए और इसके लिए कानून व न्यायालय बने हैं, फिर भी कई राज्यों में अपराधी के घर पर बुलडोजर चलाकर उसकी सजा मुकम्मल की जाती है, जो कि गलत है और इसे अब शीर्ष अदालत ने भी अनुचित बताया है। व्यक्ति चाहे अपराधी हो या न हो, महज आरोप के आधार पर उसका घर गिराना गलत है, क्योंकि सभी को अपना घर बहुत प्यारा होता है। उस घर को सजाने में उसकी गृहिणी का हाथ होता है, घर के आंगन में बच्चों की खिलखिलाहट छिपी होती है और उसकी दीवारों में घर के बड़े-बुजुर्गों का खून-पसीना मिला होता है। इसलिए एक घर टूटने से यह सब टूट जाता है। अपराधी को और भी तरीके की सजा दी जा सकती है। सर्वोच्च न्यायालय के ताजा फैसले से कई आंखों के आंसू थम सकेंगे।

**शैलबाला कुमारी**, गृहिणी

### सुप्रीम फैसला

देश की सर्वोच्च अदालत ने 'बुलडोजर न्याय' पर 'सुप्रीम-फैसला' दे दिया है। अदालत ने दिन के उजाले की तरह साफ कर दिया कि किसी की संपत्ति को सिर्फ इसलिए नहीं तोड़ा जा सकता, क्योंकि उस संपत्ति का मुखिया कथित आरोपी है। अदालत ने इसे रोकने के लिए बाकायदा दिशा-निर्देश भी जारी किए हैं। दरअसल, पिछले कुछ महीनों से कई राज्य सरकारों पर यह आरोप लग रहे थे कि ऐसी कार्रवाईयों में उनका रवैया एकतरफा होता है और वे न्याय की मूल अवधारणा को भी नजरंदाज करती हैं। दुखद है कि मीडिया भी ऐसे मामलों के गौरव-गान में लगा रहता है, जिससे बुलडोजर न्याय के समर्थकों की संख्या काफी बढ़ गई है। यह सही है कि देश में करीब एक चौथाई भूमि अतिक्रमणकारियों के कब्जे में है, जिनको मुक्त कराना आवश्यक है। मगर इसके लिए रातों-रात ढांचा गिरा देना उचित नहीं। अव्वल तो पहले उन अधिकारियों को दंडित करना चाहिए, जिन्होंने समय पर अतिक्रमण को रोकने की कार्रवाई नहीं की और फिर संबंधित व्यक्ति को एक तय वक्त में घर गिराने का नोटिस भेजा जाना चाहिए। पूरी प्रक्रिया का पालन करके ही अनधिकृत ढांचा गिराया जाना चाहिए। कानून के शासन का यही अर्थ है।

**हर्षवर्द्धन कुमार**, टिप्पणीकार

## अनुलोम-विलोम

### बुलडोजर न्याय

# कठोर कार्रवाई से ही घटते अपराध

देश के विभिन्न भागों में अपराधियों में भय उत्पन्न करने के लिए बुलडोजर न्याय के तहत अपराधियों अथवा दोषियों के घरों को ध्वस्त करने की जो कार्रवाई चल रही थी, उसे एक तरह से रोक दिया गया है। माननीय उच्चतम न्यायालय ने साफ कर दिया है कि कानूनी प्रक्रिया अपनाए बिना घर गिराना सत्ता का दुरुपयोग है। सही भी है कि किसी अपराधी के आपराधिक कृत्य की सजा उसके परिवार को क्यों मिले? पाई-पाई जोड़कर कोई परिवार सिर ढकने के लिए अपना आशियाना बनाता है और फिर, ऐसी कार्रवाई से निरपराधों को भी अपराधी की सजा का भागीदार बना दिया जाता है। मगर *अति सर्वत्र वर्जयेत* की अवधारणा जीवन के हर क्षेत्र पर लागू होनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि अब अपराधी खुद को बेखौफ समझने लग जाएं, हालांकि शीर्ष अदालत ने उचित ही इसके लिए प्रक्रिया के तहत कार्रवाई के निर्देश जारी किए हैं।

यह विडंबना है कि लोकतांत्रिक मूल्यों की परवाह न करते हुए कुछ अराजक तत्व अपने कृत्यों से बाज नहीं आते। कई राजनीतिक दल भी इन अपराधियों के संरक्षण में पीछे नहीं रहते। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कानूनी प्रक्रिया अपनाए बिना घर गिराए जाने को सत्ता का दुरुपयोग बताने पर ऐसे दल फूले नहीं समा रहे होंगे, क्योंकि उनका वजूद ही अपराधियों के महिमामंडन पर टिका है। कहना गलत न होगा कि न्यायिक प्रक्रिया का अनुपालन सभी के लिए जरूरी है, किंतु न्यायिक प्रक्रिया में देरी के चलते यदि अपराधियों को अल्प समय में सजा नहीं मिल पाती या उसको बार-बार जमानत पर रिहा किया जाता है, तब अपराधियों की दबंगई और दुस्साहस बढ़ता है। अपराध के विरुद्ध निश्चित समय में सजा का विधान भी उनमें भय पैदा करेगा।

**सुधाकर आशावादी**, टिप्पणीकार

पर्यावरण प्रदूषण एक लाइलाज बीमारी है। इसे केवल रोका जा सकता है। -बैरी कॉमनर

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली समेत पूरे उत्तर भारत का बीते बुधवार को घने कोहरे से घिरना और मौसम में पहली बार राजधानी में प्रदूषण के स्तर का बेहद गंभीर श्रेणी में पहुंचना चिंताजनक होने के साथ ही उस 'सालाना' बन चुके संकट का भी प्रतीक है, जो हमारे स्वास्थ्य, जीवन और भविष्य पर मंडरा रहा है।

## सालाना संकट

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली समेत पूरे उत्तर भारत का बीते बुधवार को घने कोहरे से घिरना और मौसम में पहली बार राजधानी में प्रदूषण के स्तर का बेहद गंभीर श्रेणी में पहुंचना चिंताजनक होने के साथ ही उस 'सालाना' खतरे का भी प्रतीक है, जो हमारे स्वास्थ्य, जीवन और भविष्य पर मंडरा रहा है। उल्लेखनीय है कि मौसम विभाग के अनुसार, उत्तर भारत में अचानक छाए इस कोहरे की वजह हिमालय क्षेत्र में सक्रिय होने वाला पश्चिमी विक्षोभ है, जिसकी वजह से हवा ने अपनी दिशा बदली और पाकिस्तान, पंजाब और हरियाणा के ऊपर एकत्रित प्रदूषण को अपने साथ ले आई। दरअसल, तापमान बढ़ने के साथ हवा फैलने लगती है, जिससे प्रदूषण के कण बिखर जाते हैं। लेकिन अक्तूबर में जब तापमान कम होना शुरू होता है, तब हवा ठहर जाती है। इससे प्रदूषक तत्व बिखर नहीं पाते और वहीं फंसे रह जाते हैं। कोहरा और प्रदूषण मिलकर स्मॉग की स्थिति पैदा करते हैं। इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं निकाला जाना चाहिए कि राजधानी में सर्दियों में ही प्रदूषण होता है। प्रदूषण यहां वर्ष भर रहता है, बस सर्दियों में दिखता ज्यादा है। हालांकि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) और भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) के पूर्वानुमान के अनुसार तेज हवाओं के चलते अगले कुछ ही दिनों में हवा में मौजूद प्रदूषकों की सांद्रता में गिरावट आने की संभावना है, जिससे एक्यूआई की स्थिति भी सुधरने की उम्मीद है। हालांकि स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पूरे एनसीआर में आज से ग्रेप-3 लागू किया जा रहा है। बेशक हर वर्ष सर्दियों की शुरुआत के वक्त दिल्ली में प्रदूषण की स्थितियों के लिए पराली जलाने को जिम्मेदार ठहराया जाता है, जबकि सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वॉयरन्मेंट की हालिया रिपोर्ट स्पष्ट बताती है कि राजधानी में प्रदूषण के लिए पराली बहुत कम जिम्मेदार है। आईआईटीएम के आंकड़े बताते हैं कि नवंबर में भले पराली जलाने के मामले बढ़े हों, लेकिन 2024 लगातार दूसरा वर्ष रहा

है, जब पराली जलाने के मामलों में कमी आई है। जाहिर है कि दिल्ली की हवा की गुणवत्ता सुधारने के लिए अधिक कारगर और दीर्घकालिक उपायों की जरूरत है। बेहतर सार्वजनिक परिवहन और सख्त नियंत्रणों से लेकर स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने तक के हरसंभव प्रयास जरूरी हैं। यह भी जरूरी है कि नागरिक खुद को जागरूक बनाएं और अपनी जिम्मेदारी निभाएं। कार-पूलिंग, सार्वजनिक परिवहन का अधिक इस्तेमाल, कचरे का सही ढंग से निपटान और पौधारोपण जैसे छोटे-छोटे कदम बड़ा फर्क ला सकते हैं। दिल्ली और देश का भविष्य उस हवा में है, जिसमें हम सांस लेते हैं। ऐसे में, जरूरी है कि इसे स्वच्छ रखने के लिए सरकार, संस्थाएं व आम जनता एकजुट हों।

## पाकिस्तान भी पराली से परेशान

प्रदूषण की वजह से दोनों मुल्कों के पंजाब प्रांत परेशान हैं, जिसने नागरिकों के जीवन को खतरे में डाल दिया है। लाहौर और नई दिल्ली, दोनों इस बार बारी-बारी से दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर बताए जा रहे हैं।

बिना चीजा और पासपोर्ट के फैलती धुंध और प्रदूषण की चादर ने पूर्वी और पश्चिमी पंजाब को तो अपने आगोश में ले ही रखा है, पाकिस्तान में होने वाली आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में भाग लेने से भारत के इन्कार से पाकिस्तान में भारी निराशा का माहौल है और ये दोनों खबरें हर रोज पाकिस्तान में सुर्खियां बटोर रही हैं। इस बात का कोई आसान जवाब भी नहीं है कि यह कैसे खत्म होगा। पाकिस्तान अब भी पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज शरीफ के आग्रह पर भारत के जवाब की प्रतीक्षा कर रहा है, जिसमें उन्होंने भारतीय पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान को राजनीति को अलग रखकर जानलेवा धुंध से निपटने के लिए हाथ मिलाने का प्रस्ताव दिया है। इस प्रदूषण की वजह से दोनों मुल्कों के पंजाब प्रांत के शहर प्रदूषित हो गए हैं और इसने नागरिकों के जीवन को खतरे में डाल दिया है। लाहौर और नई दिल्ली, दोनों इस बार बारी-बारी से दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर बताए जा रहे हैं।

**मरियाना बाबर**
वरिष्ठ पाकिस्तानी पत्रकार

मरियम नवाज ने भारत आने की इच्छा भी जाहिर की है और भगवंत मान को पाकिस्तान आने का न्योता दिया है। पाकिस्तानी पंजाब प्रांत के पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन सचिव राजा जहांगीर अनवर ने मीडिया को बताया, 'हम मानते हैं कि ये मामले विदेश मंत्रालय के तहत आते हैं, जिसके लिए केंद्र सरकार और संबंधित हितधारकों की मंजूरी जरूरी है, लेकिन मौजूदा स्थिति गंभीर एवं अत्यावश्यक है। अगर यह मसला भारत एवं पाकिस्तान को अन्य मुल्कों के साथ एक साथ ला सकता है, तो इस मौके को क्यों गंवाया जाए?'

जब इन पंक्तियों की लेखिका ने इस्लामाबाद में विदेश मंत्रालय से पूछा कि क्या मरियम नवाज शरीफ ने मंत्रालय को इस आशय का पत्र भेजा है, जिसे कूटनीतिक मानदंडों के अनुसार नई दिल्ली स्थित भारतीय विदेश मंत्रालय को भेजा जाएगा, तो जवाब मिला कि 'नहीं, पंजाब प्रांत की मुख्यमंत्री मरियम नवाज शरीफ से हमें अब तक ऐसा कोई भी पत्र नहीं मिला है।'

लगता है कि मरियम नवाज इस आशय का औपचारिक पत्र इसलिए नहीं भेज रही हैं, क्योंकि भारतीय पंजाब की तरफ से पाकिस्तानी प्रस्ताव पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। अगर मीडिया के जरिये कोई संकेत भी मिलता, जिसका इसेमाल आम तौर पर दोनों मुल्क एक-दूसरे को संदेश देने के लिए करते हैं, तो मरियम नवाज इस मामले में पहल करतीं। हाल ही में मैंने एक वीडियो देखा, जिसमें भगवंत सिंह मान हंसते हुए कह रहे थे कि लाहौर और नई दिल्ली, दोनों ही धुंध और प्रदूषण के लिए दोनों मुल्कों के पंजाब को दोषी ठहराते हैं। दरअसल, दोनों पंजाबों में पराली जलाना जारी है और यह हवा पर निर्भर करता है कि वह धुएं को किस दिशा में ले जाए। पीटीआई के पूर्व मंत्री चौधरी फवाद हुसैन ने ट्विपणी की, 'दो बड़े शहर लाहौर और नई दिल्ली धुंध में डूब रहे हैं। ऐसे में, सहयोग महत्वपूर्ण है।'

पाकिस्तान के लोगों का मानना है कि अब इसकी जिम्मेदारी भारत पर है। अगर वह जलवायु परिवर्तन कूटनीति में शामिल होने से इन्कार करता है, तो दोनों पंजाबों में धरती और आकाश को धुंधला करने वाला यह धुंध अंततः नागरिकों के लिए जानलेवा साबित होगा, फिर यह एक और दरवाजा बंद हो जाएगा, जिस पर पाकिस्तान दस्तक दे रहा है।

इस बीच एक तरफ जहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय क्रिकेट मैच की सीरीज जीतने पर पाकिस्तान जश्न मना रहा था, वहीं दूसरी तरफ भारत से एक निराश करने वाली खबर आई। भारत ने आधिकारिक तौर पर चैंपियंस ट्रॉफी टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान आने से इन्कार कर दिया है। पाकिस्तान के लोगों के लिए क्रिकेट का मतलब सिर्फ भारत और पाकिस्तान की टीमों को मैदान में देखना है। बाकी टीमें टाइम पास हैं। मैंने जिस भी पाकिस्तानी से बात की, सबका कहना है कि अभी इंग्लैंड की टीम पाकिस्तान आई थी, जिसकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया। उसी तरह भारत और अन्य मुल्कों की टीमों को भी पूरी सुरक्षा दी जाएगी, इसलिए कोई चिंता की बात नहीं है। कई अन्य विदेशी टीमें भी यहां खेलने के लिए आईं। इस साल विभिन्न खेलों की कई टीमें खेलने के लिए पाकिस्तान आई थीं। अब इसी महीने भारतीय ब्लाइंड क्रिकेट टीम के आने का पाकिस्तान इंतजार कर रहा है।

क्रिकेट एक ऐसा खेल है, जो दोनों मुल्कों को जोड़ता है, ऐसे में क्रिकेट का राजनीतिकरण क्यों किया जा रहा है? पाकिस्तान ने भारत में खेलने से कभी संकोच नहीं किया, भले ही वहां दर्शकों ने उतनी गर्मजोशी से उसका स्वागत नहीं किया। विश्वास कीजिए, अगर भारतीय टीम पाकिस्तान खेलने आती है, तो पिछली बार की तरह इस बार भी उसका उत्साह बढ़ाया जाएगा। कई भारतीय खिलाड़ियों का पाकिस्तान में बहुत बड़ा फैन क्लब है, जहां प्रशंसकों को राजनीति से कोई मतलब नहीं होता, बल्कि उन्हें एक शानदार खेल से मतलब होता है।

वास्तव में पाकिस्तान सरकार ने भी भारत से संपर्क किया था और उनसे उनकी पसंद का स्थल भी पूछा था, जहां वे खेलना चाहेंगे, ताकि वे सहज महसूस कर सकें। भारत के इस फैसले पर इसलिए भी हैरानी हो रही है, क्योंकि हाल ही में भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर इस्लामाबाद आए थे और जाते समय उन्होंने ट्वीट कर पाकिस्तानी सरकार को उनके 'शानदार मेजबानी' के लिए धन्यवाद दिया था। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री और पाकिस्तान के लोगों को भी गर्मजोशी से स्वागत के लिए धन्यवाद दिया।

अगर भारत के इतने वरिष्ठ मंत्री यहां आकर खुश होकर घर लौट सकते हैं, तो भारतीय क्रिकेट टीम को यहां आने में क्या दिक्कत है? किसी भी बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन में राजनीतिक दखल ठीक नहीं है। लेकिन क्रिकेट बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि अब बहुत हो चुका और वे भारत की मांग के अनुसार, पाकिस्तान-भारत क्रिकेट मैच दुबई में नहीं कराएंगे।

इस मसले पर द न्यूज इंटरनेशनल ने अपने संपादकीय में लिखा, 'क्रिकेट के मैदान पर भारत-पाकिस्तान के बीच स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता जरूरी है, यानी खेल को राजनीति से अलग रखना चाहिए।' यह वही समाचार पत्र समूह है, जिसने दोनों पड़ोसियों के बीच बेहतर संबंधों को बढ़ावा देने के लिए 'अमन की आशा' की स्थापना की थी।

edit@amarujala.com

## जीवन धारा

बालमुकुंद गुप्त

हंसने से खुद को अच्छा लगता है। मित्र को हंसाने पर वह प्रसन्न होगा और दुश्मन कम घृणा करेगा। हंसी भय भगाती है, दुख मिटाती है, निराशा को घटाती है। कंगाली का आधा बोझ उड़ा देती है।

### सौ साल जीना है तो हंसते-हंसाते रहिए

*हंसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम से उत्तम वस्तु एक बार हंस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी से अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हंसो और पेट फुलाओ। हंसी कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हंसोगे, उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों पर खीजने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाकीटस 109 वर्ष तक जिया। हंसी-खुशी ही का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।' कालदीप एक राजकुमार था। वह संसार त्यागी हो गया था। वह कहता है कि जो जी से हंसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हंसो, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हंसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हंसाओ, तुमसे कम से कम घृणा करेगा। एक अनजान को हंसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हंसाओ, उसका दुख घटेगा। एक निराश को हंसाओ, वह अपने को जवान समझने लगेगा। एक बालक को हंसाओ, उसका अच्छा स्वभाव, अच्छा स्वास्थ्य होगा। वह प्रसन्न और प्यारा बालक बनेगा।*

*पर हमारे जीवन का उद्देश्य केवल हंसी ही नहीं है, हमको बहुत काम करने हैं। तथापि उन कामों में, कष्टों में और चिंताओं में एक सुंदर आतंरिक हंसी, बड़ी प्यारी वस्तु भगवान ने दी है। हंसी सबको भली लगती है। सभा में हंसी विशेषकर प्रिय लगती है। जहां तक बने, हंसी से आनंद प्राप्त करो। प्रसन्न लोग कोई बुरी बात नहीं करते। हंसी बैर और बदनामी की शत्रु है और भलाई की सखी। हंसी स्वभाव को अच्छा करती है। जी बहलाती है और बुद्धि को निर्मल करती है। हंसी सजे-सजाए घर के समान है। मनुष्य रोने के लिए नहीं बनाया गया है। हंसने के लिए ही आदमी बना है। मनुष्य खूब जोर से हंस सकता है, पशु-पक्षी को वह शक्ति ईश्वर ने नहीं दी है। मनुष्य हंसने-मुस्काने, हो-हो करने, टोपी उछालने, गीत गाने और स्फूर्ति करने के लिए बनाया गया है। हंसी भय भगाती है, दुख मिटाती है, निराशा को घटाती है। कंगाली का आधा बोझ उड़ा देती है। उदास आदमी से दूर रहो।*

*मेलबर्न के डॉक्टर एब्ल्यू कोल ने डॉक्टरी पर एक पुस्तक लिखी है। इस विषय में वह एक कहानी लिखता है। एक डॉक्टर अपने मित्रों सहित पहाड़ पर घूम रहा था। एक चट्टान पर उसे एक कौवे का घोंसला दिखाई दिया। डॉक्टर ने काका-आओ सब दौड़ो, देखें उस घोंसले के पास पहले कौन पहुंचता है। सब दौड़े। एक आदमी हांफ कर बैठ गया। जब सब जमा हुए, तो इतना हंसे कि उनके पेट फूल गए। जब इन मित्रों को हंसना होता, तो उस घोंसले की कहानी को फिर दोहराते। कई साल बाद उनमें से एक मित्र बीमार हो गया, वह मरने को था कि उस डॉक्टर को खबर हुई। वह गया। लोगों ने कहा कि लो तुम्हारा मित्र आया, आंखें खोलो। पर वह कुछ न बोला। तब डॉक्टर ने जोर-जोर से कौवे के घोंसले की कहानी सुनाई। कहानी सुनकर बीमार हंस पड़ा। यहां तक कि वह अच्छा हो गया।*

### खुशहाल जीवन जिएं

सूत्र

*कोई भी दवा उस चीज को ठीक नहीं कर सकती, जिसे खुशी ठीक नहीं कर सकती। आत्म-ज्ञान खुशी की कुंजी है। हम केवल अपने स्वभाव, अपने मूल्यों और अपनी रुचियों की नींव पर ही खुशहाल जीवन जी सकते हैं। एकमात्र चीज, जो आपको खुश करेगी, वह है हंसी।*

## दूसरा पहलू

एक समय देश में चालीस हजार से ज्यादा हाथी थे, लेकिन वर्तमान में करीब 27 हजार ही बचे हैं।

### अस्तित्व के संकट से जूझ रहा गजराज

हमारी आस्था का प्रतीक, जंगल का इंजीनियर या फिर पारिस्थितिकी तंत्र का असली वास्तुकार गजराज यानी हाथी आज अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रहा है। एक समय देश में चालीस हजार से भी अधिक हाथी थे, जो आज करीब 27 हजार बचे हैं। कड़वा सच यह भी है कि हाथी संरक्षण के नाम पर करोड़ों खर्च करने के बाद भी असल आंकड़ा किसी के पास भी नहीं है। सरकार इनकी तादाद करीब तीस हजार बताती है, तो जानकार 15 हजार से कुछ अधिक बताते हैं। जानकारों के अनुसार, 2017 में हाथियों की संख्या 19,825 थी, जिसमें अब करीब 20 फीसदी की कमी आई है।

**इरवेंद्र रावत**

हाथियों के संरक्षण पर करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं, लेकिन असली आंकड़े किसी के पास नहीं हैं। सरकार और जानकारों के दावे भी अलग-अलग हैं।

'क्रिटिकल नीड ऑफ एलीफेंट' रिपोर्ट के मुताबिक, इस समय दुनिया में तकरीबन 50 हजार हाथी हैं, जिनमें से 60 फीसदी भारत में हैं। भारत में 34 स्थान हाथियों के लिए संवेदित हैं। उनमें भी हालात ठीक नहीं हैं।

हाल ही में केंद्र सरकार ने रबी की फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की घोषणा की है। यहीं, कार्यरत और सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को साल भर में करीब सात फीसदी वेतन और पेंशन में वृद्धि दी गई है। साथ ही पदोन्नति पर अलग से वेतनवृद्धि मिलती है। लेकिन कृषि उपज के दाम यानी एमएसपी में बढ़ोतरी बहुत कम की गई है।

एमएसपी को समर्थन मूल्य कहना असल में बहकाना है। इसका उद्देश्य है कि बाजार में कृषि उपज के खरीद के दाम एमएसपी से नीचे न गिरें और अगर गिरते हैं, तो सरकार उन उपजों को समर्थन मूल्य पर खरीदकर मूल्य गिरने न दे। लेकिन वास्तव में ऐसा होता नहीं है। समर्थन मूल्य सुनने में भले ही अच्छा लगता है, पर यह घोषित मूल्य भ्रांति से भरा होता है, क्योंकि हकीकत पूरे लागत-खर्च पर आधारित ही नहीं है। इसे बारीकी से समझना जरूरी है। फसल उगाने के लिए किसान को कई खर्च, निवेश और विनियोग करने पड़ते हैं। इनके तीन प्रकार हैं-

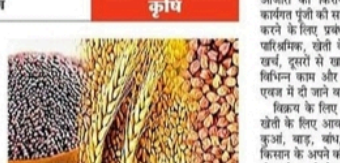

किसान द्वारा नकद भुगतान किए जाने वाले पहले प्रकार को ए-2 खर्च कहा जाता है। शुरुआत से ही कुछ साल पहले तक भी सरकारें सिर्फ ए-2 प्रकार के खर्च को ही लागत खर्च में गिनती रही, लेकिन ए-2 के अलावा ऐसे ही दूसरे बड़े खर्च भी हैं, जिन्हें अनदेखा किया जाता रहा है। इस दूसरे प्रकार में वे खर्च हैं, जिन्हें फसल के लिए किसान को निवेश करना पड़ता है। जैसे कि परिवार के श्रम, घर की गोबर खाद, घर से बिजाई, सिंचाई के लिए कुएं का पानी, घर की बैलजोड़ी-इन सबको एफएल अर्थात फैमिली लेबर प्रकार कहा गया। हालांकि अब सरकार इस प्रकार के कुछ खर्चे शामिल करने लगी है।

तीसरे प्रकार के खर्चे में विभिन्न लागतें, जमीन का सालाना किराया, मवेशी के बाड़े, भंडारण के मकानात, औजारों का किराया अथवा घिसावट (अवमूल्यन), कार्यगत पूंजी की समूची राशि पर ब्याज, खेती का प्रबंधन करने के लिए प्रबंधक के नाते किसान के समय का पारिश्रमिक, खेती के लिए किए जाने वाले प्रवास का खर्च, दूसरों से खासकर, सरकारी दफ्तरों से खेती के विभिन्न काम और कागजात के लिए खर्चे और उनके एवज में दी जाने वाली रिश्वत अलग हैं।

विक्रय के लिए परिवहन समेत कई प्रकार के खर्चे, खेती के लिए आवश्यक संपत्ति के लिए (भूमि सुधार, कुआं, बाड़, बांध, रास्ता आदि) लगने वाले खर्चे, किसान के अपने कौशल विकास के खर्चे, खेती के लिए दी जाने वाली भेंट, और फसलों की विफलता, विपदा और अकाल के कारण खेती में लगे हुए संपूर्ण खर्चे-ऐसी सब प्रकार की वास्तविक परंतु अदृश्य मदों पर लगे खर्चे शामिल कर ही सच्चे उत्पादन खर्च पर आधारित दाम तय किए जाने चाहिए।

इसलिए सिर्फ ए-2 व एफएल को शामिल करते हुए, लेकिन तीसरे प्रकार के खर्च की सारे मदों को छोड़कर हिसाब आंकना सीधा छलावा है। सच में संपूर्ण सर्व-समावेशी लागत खर्च के अलावा आय के लिए उसके ऊपर 50 फीसदी जोड़कर किसान को दाम मिले, तो ही किसानी का उद्यम करने वाले अन्नदाता किसान को कुछ आय मिलेगी। अनेक सरकारी और अर्ध-सरकारी संस्थाओं, अर्थशास्त्रियों, शोधकर्ताओं और संगठनों ने हिसाब लगाकर सरकार को रिपोर्ट देते हुए स्थापित किया है कि सरकार उत्पादन खर्च का जो आंकड़ा दिखाती है, उसकी तुलना में वास्तविक उत्पादन लागत खर्च लगभग डेढ़ गुना होता है। एमएसपी में सिर्फ छह फसलों को ही शामिल किया गया है। एमएसपी पर बढ़ोतरी दो से छह फीसदी की गई है, जबकि सरकारी कर्मचारियों के वेतन-भत्ते में सात फीसदी वृद्धि की गई है। इससे सरकार का किसानों के साथ सौतेला व्यवहार समझ आता है। वहीं कृषि क्षेत्र को मिलने वाली सहूलियतें, छूट, अनुदान आदि नाकाफी हैं। गैट एग्रीमेंट, डंकल प्रस्ताव के समय केंद्र सरकार ने लिखकर कबूला था कि भारत का खेती क्षेत्र 70 फीसदी नकारात्मक सब्सिडी का नुकसान बर्दाश्त करके देश को पाल-पोस रहा है। इसी तरह हाल में सरकारी कृषि-लागत व मूल्य-आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष अशोक गुलाटी द्वारा सरकार को सौंपे गए हिस्सा के अनुसार, वर्ष 2000 से 2015 के बीच 15 वर्षों में किसानों को 45 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। मौटे तौर पर प्रत्येक किसान प्रतिवर्ष पांच एकड़ खेती पर करीब 50 हजार रुपये का नुकसान बर्दाश्त कर रहा है। इसके समाधान के लिए किसानों को छूट, सब्सिडी और माफी जैसी खैरात नहीं चाहिए, बल्कि खेती में किसान के श्रम, प्रबंधन व उद्यमशीलता का सही दाम चाहिए। खेती विरोधी सारी जुल्मी नीतियों (आयात-निर्यात नीतियों के साथ सभी) को हटाकर न्यायपूर्ण व पोषक नीतियां बनें। कृषि का बजट बढ़ना चाहिए। साथ ही जलवायु परिवर्तन का आसमानी जुल्म, बाजार व सरकारी नीतियों के सुलतानी जुल्म से सुरक्षा के लिए खेती की स्वदेशम तकनीकें और पद्धतियां अपनानी होंगी।

*-लेखक कृषि वैज्ञानिक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं।*

## आंकड़े

### चाय की खपत

सर्दियों के मौसम में चाय का अलग ही आनंद है। दुनिया भर में सबसे ज्यादा चाय चीन और भारत के लोग ही पीते हैं।

| | |
|---|---|
| चीन | 46.0% |
| भारत | 17.79% |
| तुर्किये | 3.83% |
| पाकिस्तान | 3.79% |
| रूस | 2.03% |

आंकड़े चाय की वैश्विक खपत के, प्रतिशत में

स्रोत : FAO, TI

ब्रह्मा के वरदान के बाद तारकासुर के बेटों ने तीनों लोकों पर कब्जा कर लिया। कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान शंकर ने तीनों का एकसाथ वध किया।

## भगवान शंकर बने बाण

अंतर्यात्रा संकलित

तारकासुर का वध भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय ने किया था। तारकासुर के तीनों पुत्रों तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली अपने पिता के वध से दुखी हुए। तीनों ने ब्रह्मा जी से वरदान पाने के लिए तपस्या की। ब्रह्मा जी प्रसन्न होकर बोले वर मांगो। तीनों ने कहा, 'हमें अमर कर दो' लेकिन ब्रह्मा जी बोले-इसके अलावा कोई भी वरदान मांगो। तीनों ने फिर कहा कि हमें एक-एक नगर चाहिए, जिसमें बैठकर सारी पृथ्वी और आकाश में घूम सकें।

एक हजार साल बाद जब भी हम मिलें और हम तीनों का नगर मिलकर एक हो जाए और जो देवता एक ही बाण में तीनों नगरों को नष्ट कर दे, तभी हमारी मृत्यु हो। इसके बाद तीनों ने तीनों लोक पर अधिकार जमा लिया। इंद्र देव इन राक्षसों से भयभीत होकर भगवान शंकर के पास गए। इंद्र देव की बात सुनकर भगवान शिव ने दिव्य रथ का निर्माण किया। दिव्य रथ की हर चीज देवताओं से निर्मित हुई थी। चंद्रमा और सूर्य से पहिए बने। वहीं इंद्र, वरुण, यम और कुबेर रथ के घोड़े बने। हिमालय धनुष और शेषनाग प्रत्यंचा बने। भगवान शिव स्वयं बाण बने और बाण की नोक बने अग्निदेव। कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन इस दिव्य रथ और तीनों राक्षसों के बीच भीषण युद्ध हुआ। जैसे ही तीनों एक सीध में आए, भगवान शिव ने अपने बाण से तीनों का वध कर दिया। तभी से भगवान शिव का नाम त्रिपुरारी पड़ा और कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा भी कहते हैं।

## अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 09 मई, 1962

### चीन में भारी सूखा और अकाल की स्थिति

चीन में भारी सूखा व अकाल की स्थिति
लेकिन खतरनाक कार्यक्रम बंद हुआ

**पीकिंग रेडियो ने यह घोषणा की कि चीन के अनेक भागों में सूखा पड़ रहा है, जिसके फलस्वरूप कई प्रांतों में अनाज का उत्पादन काफी कम हो गया है। नतीजतन चीन में अकाल की स्थिति पैदा हो गई है।**

## एमएसपी की हकीकत कुछ और है

**न्यूनतम समर्थन मूल्य शब्द सुनने में अच्छा है, लेकिन वास्तविकता में किसान की लागत और श्रम का सही आकलन ही नहीं किया जाता।**

अशोक बंग — कृषि